भिक्खु दृष्टान्त

संग्रहकर्त्ता

श्रीमद् जयाचार्य

तेरापंथ-द्विशताब्दी समारोह के अभिनन्दन में प्रकाशित

प्रकाशक :

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

३ पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट
कलकत्ता

◆

प्रथमावृत्ति
जून १९६

◆

प्रति संख्या
१५

◇

पृष्ठ संख्या
१४८

◇

मूल्य :
दो रुपये पच्चास नये

◆

प्रकाशकीय

भिक्षु-विचार ग्रन्थावली का यह द्वितीय ग्रन्थ पाठकों के समक्ष है। इस ग्रन्थ में आद्य आचार्य स्वामी भीखणजी के कतिपय जीवन-प्रसंगों का सं... । इन बहुमूल्य संस्मरणों का तेरापंथ-इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है... से स्वामीजी के जीवन की वास्तविक झाँकी पाठकों के सामने आयगी और ...उन्हें उनकी भावनाओं के मूलस्रोत तक पहुँचने का अवसर प्राप्त होगा।

आशा है, पाठकों को प्रस्तुत प्रकाशन अत्यंत प्रिय प्रतीत होगा।

तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह व्यवस्था उपसमिति
पोचुगीज चर्च स्ट्रीट
कलकत्ता—१
जून १९६

श्रीचन्द रामपुरिया
व्यवस्थापक
साहित्य-विभाग

भूमिका

यह पुस्तक आकार में इतनी छोटी होने पर भी सामग्री की दृष्टि से बहुत ही महत्व पूर्ण है। इसमें स्वामीजी के ११२ जीवन प्रसंगों का संकलन है। ये जीवन-प्रसंग मुनि श्री हेमराजजी के लिखाये हुए हैं जो स्वामीजी के अत्यन्त प्रिय शिष्य थे और शासन के स्तम्भ स्वरूप माने जाते थे। इन प्रसंगों को श्रीमद् जयाचार्य ने लिपिबद्ध किया। इस पुस्तक के अन्त में जयाचार्य की कृति 'भिक्षु यश रसायन' के जो दोहे उद्धृत हैं उनसे यह बात स्पष्ट है। इन प्रसंगों में सहज स्वाभाविकता है। रंग चढ़ाकर उन्हें कृत्रिम *किया गया हो ऐसा जरा भी नहीं लगता।* इन हृदय चित्रित जीवन-पटों से स्वामीजी के जीवन उनकी वृत्तियों, उनकी साधना और उनके विचारों पर गंभीर प्रकाश पड़ता है। स्वामीजी की सैद्धान्तिक ज्ञान-गरिमा प्रत्युत्पन्न बुद्धि हेतु-पुरस्सरता चर्चा-प्रवीणता प्रभावशाली उपदेश शैली और दृढ़ अनुशासनशीलता आदि का इन जीवन प्रसंगों से बड़ा अच्छा परिचय होता है। जीवन प्रसंगों का यह संकलन एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कृति है जो स्वामीजी के समय की जन धर्म की स्थिति उस समय के साधु-श्रावकों की जीवन-दशा तथा उनके आचार विचारों की यथार्थ भूमिका को प्रामाणिक रूप से उपस्थित करती हुई स्वामीजी की जीवन-व्यापी अखण्ड साधना का एक सुन्दर चित्र उपस्थित करती है। श्रीमद् जयाचार्य ने इन दृष्टान्तों का संकलन कर स्वामीजी के जीवन और शासन के इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं को ही सुरक्षित नहीं किया बरन् उस समय की स्थिति का दुर्लभ इतिहास भी गुंफित कर दिया है, जिसके प्रकाश में स्वामीजी के व्यक्तित्व और कर्तृत्व का सही मूल्यांकन किया जा सकता है।

मुनि हेमराजजी की दीक्षा सं १८५३ में हुई थी। उनकी दीक्षा का प्रसंग बड़ा रसपूर्ण है। उसमें स्वामीजी की वैराग्यपूर्ण उपदेश-शैली का उत्कृष्ट उदाहरण मिलता है। साथ ही उससे मुनि हेमराजजी के व्यक्तित्व की सुन्दर झांकी मिलती है। इस पुस्तक में मुनि हेमराजजी और स्वामीजी के साथ घटे हुए अन्य भी कई प्रसंगों का उल्लेख है जो दोनों की जीवन-गरिमा पर गहरा प्रकाश डालते हैं। मुनि हेमराजजी दीक्षा के बाद चार वर्ष तक स्वामीजी की सेवा में रहे। बाद में स्वामीजी ने उनका सिंघाड़ा कर दिया और उन्हें अन्यत्र विचरना पड़ा। इस पुस्तक में दिये गये प्रसंगों में से कुछ हेमराजजी स्वामी के समक्ष घटे हुए हैं। कुछ उन्होंने स्वामीजी से सुने। कुछ दृष्टान्त ऐसे हैं जो दूसरों से उन्होंने सुने और प्रामाणिक समझ श्री जयाचार्य को लिखाये।

स्वामीजी से चर्चा करने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकृति और धर्मों के लोग आते। कुछ स्वामीजी को नीचा दिखाने के लिए आते, कुछ उनकी बुद्धि की परीक्षा करने, कुछ धर्म चर्चा के नाम पर उनसे झगड़ा करने, कुछ सैद्धान्तिक चर्चा करने और कुछ पढ़मरठ—दूसरों के सिखाए हुए। जो व्यक्ति जैसा होता उसके अनुरूप हेतु, तर्क, युक्ति, कौशल, दृष्टान्त अथवा सूत्र-साक्षी से स्वामीजी चर्चा करते या उत्तर देते। लिफाफा देख कर मजमून समझ लेना यह उनकी बुद्धि की सबसे बड़ी विशेषता थी और इस विशेषता के कारण वे आगन्तुक व्यक्ति के मानस का चित्र पहले से ही खींच लेते और अपनी औत्पातिक बुद्धि से युक्ति-पुरस्सर प्रत्युत्तर दे चमत्कार-सा उत्पन्न करते। इन दृष्टान्तों में उनकी इस विशेषता के अनेक अद्भुत चित्रण मिलते हैं।

उनकी वाणी सहज ज्ञानी की वाणी है। वह स्वयं स्फुरित है। उसमें अध्यात्म संवेग तथा वैराग्य रस भरा हुआ है। निर्मल ज्ञान रश्मियों का प्रकाश है। स्पष्ट और सही सूझ तथा दृष्टि है। उसमें जैन दर्शन के मौलिक स्वरूप पर दिव्य प्रकाश है तथा क्रांत वाणी की तीव्र वेधकता और उद्बोधन है।

स्वामीजी महान् धर्मकथी थे। छोटे-छोटे दृष्टान्तों के सहारे गूढ़ दार्शनिक प्रश्नों का उत्तर उन्होंने इतने सुबोध और सरस ढंग से दिया है कि उन्हें पढ़ कर हृदय विस्मय विमुग्ध हो जाता है।

स्वामीजी की सी दृढ़ता बहुत कम देखी जाती है। न्याय मार्ग-पर चलते हुए वे विघ्न-बाधाओं से कभी नहीं घबराए। वे दुर्दान्त योद्धा का सा मोर्चा लेते हैं और कभी पीछे नहीं ताकते।

शिष्यों के साथ उनका व्यवहार जितना वात्सल्यपूर्ण होता उतना ही अवसर पर कठोर भी। अनुशासन के समय यदि वे वज्रादपि कठोर थे तो अन्य प्रसंगों पर कुसुमादपि मृदु भी।

चर्चा के समय वे दुर्भेद्य व्यूह से देखे जाते हैं। सिद्धान्त-बल, बुद्धि-बल, तर्क-बल, हेतु-बल, परम्परा-बल—इनकी ओजस्वी छटा सूर्य की रश्मियों की तरह एक चकाचौंध पैदा कर देती है। गंभीर ज्ञान और हृदय-भेदी गिरा समुद्र की ऊर्मियों की तरह कल-कल निनाद करते हुए देखे जाते हैं। पैनी तर्क-शक्ति और अवसर-अनुकूल व्यङ्ग्योक्ति तीक्ष्ण तीर की तरह सीधा लक्ष्य भेद करती सी दीखती है।

स्व-समय और पर-समय का सूक्ष्म विवेक उनकी लेखनी द्वारा जैसा प्रकट हुआ है वैसा अन्यत्र नहीं देखा जाता। जैन धर्म को मलीन करने वाली मान्यताओं और आचार का जल और दुग्ध की तरह पृथक्करण जैसा उन्होंने किया अन्यत्र दुर्लभ है। मिथ्या अभिनिवेशों और मान्यताओं पर उनके प्रहार तीव्र रहे।

उनका बल शुद्ध आचार पर रहा। केवल वय के वे जीवन भर विरोधी रहे। इसके लिए उन्हें बड़े कष्ट सहने पड़े पर वे कभी पश्चात्पद नहीं हुए। शुद्ध श्रद्धा और आचरण के साथ संयमी का प्रमाणपुरस्सर वेष हो यदि साधु का बाना धारण किया हो तो उसके साथ शुद्ध श्रद्धा और आचार भी हो—यही उनका प्रतिपाद्य रहा। 'कृत्रिम ब्राह्मणी' 'खोटा सिक्का' 'छिद्रवाली नौका' 'कूंजी का चौमरफल' आदि दृष्टान्त उनकी इस भावना के प्रतीक हैं।

उन्होंने एक व्यंग किया है 'पति के मरने पर स्त्री को उसकी अरथी के साथ बांधकर जला दिया गया और उसे सती घोषित कर दिया गया। यदि कोई इस तरह जबरदस्ती सती की गई स्त्री का स्मरण कर प्रार्थना करे—हे सती माता! मेरा कष्ट दूर करो तो स्वयं क्रूरता की शिकार बनी वह सती क्या कष्ट दूर करेगी? वैसे ही यदि रोटी का भूखा कोई साधु का वेष पहने और उससे कोई कहे कि तुम श्रामण्य का अच्छी तरह पालन करना तो वह क्या खाक पालन करेगा?'

अनेक दृष्टान्तों में बड़ा सुन्दर तत्त्व निरूपण मिलता है। उदाहरण स्वरूप थोड़े से दृष्टान्तों की हम यहां चर्चा करेंगे।

पुस्तक और ज्ञान में क्या अन्तर है, इसकी भेद रेखा एक दृष्टान्त में बड़ी ही सुन्दर रूप से प्रगट हुई है 'पुस्तक के पन्नों को ज्ञान कहते हो तो पुस्तक के पन्ने फट गये तो क्या ज्ञान फट गया? पन्ने अजीव हैं, ज्ञान जीव है। अक्षरों का आकार तो पहचान के लिए है। पन्नों में लिखे हुए का जानना ज्ञान है। वह आत्मगत है। स्वयं के पास है। पन्ने भिन्न हैं।' (२८)

संगठन का प्रश्न अनेक बार सामने आता है। स्वामी जी के सामने भी यह आया था। उनका चिन्तन है 'विचार और आचार की एकता के बिना साथ जीवन की एकता सम्भव नहीं। श्रद्धा और आचार की एकता हो जाने पर द्वेष नहीं टिकता। उसके अभाव में द्वेष नहीं मिट सकता। (२९)

आइंस्टीन से उसकी स्त्री ने पूछा—तुम्हारा सापेक्षवाद क्या है सरलता से समझाओ। आइंस्टीन ने उत्तर दिया—सुहाग रात्रि छोटी लगती है और एक क्षण का भी अग्नि का स्पर्श बड़ा दीर्घकालीन लगता है यही सापेक्षवाद है।

स्वामी जी रात्रि में व्याख्यान दिया करते। जैन साधु को रात्रि में एक प्रहर के बाद जोर से बोलने का निषेध है। द्वेषी हल्ला मचाते—'रात्रि बहुत हो गयी। १। पहर १॥ पहर बीत गई फिर भी व्याख्यान चलता है। यह साधु का काम नहीं। स्वामी जी ने एक बार उत्तर दिया 'विवाहादि गुण की रात्रि छोटी मालूम देती है। यदि मनुष्य संध्या-समय मर जाय तो दुःख की वह रात्रि अत्यन्त दीर्घ हो जाती है। इसी तरह

जिन्हें हमारा व्याख्यान नहीं सुहाता उन्हें रात्रि अधिक आई दिखाई देती है। जो अनुरागी हैं उन्हें तो वह प्रमाण से अधिक आई नहीं दिखाई देगी। (१८) स्वामी जी ने लोगों को समझाने में ऐसे सापेक्षवाद का अनेक जगह उपयोग किया है।

धन और ज्ञान के साथ गठबंधन होता ही है ऐसा मानना निरी भूल है। धनी जो कुछ करता है वह ज्ञान से ही करता है—यह सिद्धान्त नहीं हो सकता। उत्तमो जी ईरानी बोले—'आप देवालयों का निषेध करते हैं पर पूर्व में बड़े-बड़े लखपति करोड़पति हो गये हैं उन्होंने देवालय बनवाये हैं।' स्वामी जी ने पूछा—'तुम्हारे पास ५ हजार की सम्पत्ति हो जाय तो देवालय बनवाओगे या नहीं?' वह बोला—'अवश्य बनवाऊंगा।' स्वामी जी ने पूछा—'तुममें जीव के कितने भेद हैं? कौन सा गुणस्थान है? उपयोग, योग, लेश्या कितनी है?' वह बोला—'यह तो मुझे मालूम नहीं।' स्वामी जी बोले—'पूर्व के लखपति करोड़पति भी ऐसे ही समझदार होंगे। सम्पत्ति मिलने से कौन-सा ज्ञान आ जाता है।' (११)

इन दृष्टान्तों में कई अनुभव-वाक्य भरे पड़े हैं 'आत्म-प्रदेशों में झामना हुए बिना निर्जरा नहीं होती' (१२) 'धान मिट्टी की तरह पकने लगे तब संथारा कर लेना चाहिए' (१२१) 'आडम्बर न रखने से ही महिमा है' (१२५) 'साधु गृहस्थ के भरोसे न रहें' (२९ २९१) 'जिस चर्चा से भ्रम उत्पन्न हो वैसी चर्चा नहीं करनी चाहिए' (२२९)। आदि आदि।

उनकी दृष्टि भविष्य को भेदती। वे बहुत आगे की देखते। उनका कहना था छिद्र से दरार होती है। पहले कोंपल होती है और फिर वृक्ष। एक बार किसी ने कहा 'आप काफी वृद्ध हो चुके हैं। अब खड़े-खड़े प्रतिक्रमण क्यों नहीं करते?' स्वामी जी बोले 'यदि मैं बैठ कर प्रतिक्रमण करूंगा तो सम्भव है बाद वाले लेटे-लेटे करें।'

अहिंसा के क्षेत्र में उन्होंने जितना सोचा विचारा मनन किया मंथन किया उसकी अपनी एक निराली देन है। 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की भावना के वे एक सजीव प्रतीक थे। 'छहों ही प्रकार के जीवों को आत्मा के समान मानो'—भगवान की यह वाणी उनकी आत्मा को भेद चुकी थी।

अहिंसा विषयक कितने ही सुन्दर चिन्तन इस पुस्तक में हैं। स्वामी जी से किसी ने पूछा—'सूत्रों में साधु को छः काय का रक्षक कहा है। जीवों की रक्षा करना उसका धर्म है।' स्वामी जी ने कहा—'आपने ठीक ही कहा है। उनका धर्म है जीव जैसे हैं उन्हें वैसे ही रहने देना किसी को दुःख न देना।' (१५)

उस समय एक अभिनिवेश चलता था—हिंसा बिना धर्म नहीं होता। इस बात की पुष्टि में उदाहरण देते—दो श्रावक थे। एक को अग्नि के आरम्भ का त्याग था दूसरे को नहीं। दोनों के [illegible] उन्हें [illegible] तथा दूसरे ने उन्हें [illegible]

कर गाँव के बाहर चला जाऊंगा। स्वामीजी ने कहा 'भगवान् ने मनुष्य को सिंह का भक्ष बनाया है। तुम सिंह के भक्ष्य होकर क्यों भाग कर गाँव के बाहर चले जाओगे?' वह बोला 'मेरा भी कष्ट पाने को तैयार नहीं। इसलिये भाग कर चला जाऊंगा। स्वामीजी बोले 'सर्व जीवों के विषय में यही बात जानो। मौत सबको अप्रिय है। उससे सब जीव दुःख पाते हैं। (२११)

स्वामीजी के सामने जिज्ञासा की—'किसीने पैसा देकर सर्प छुड़ाया। वह सीधा चूहे के बिल में गया। वहाँ चूहा नहीं था। सर्प छुड़ाने वाले को क्या हुआ?' स्वामीजी ने कहा 'किसी ने काग पर गोली चलाई। काग उड़ गया उसके गोली नहीं लगी। गोली चलाने वाले को क्या होगा? काग उड़ गया इससे उसके गोली नहीं लगी यह उसका भाग्य पर गोली चलाने वाले को तो पाप लग चुका। इसी तरह किसी ने सर्प को छुड़ाया वह चूहे के बिल में गया परन्तु चूहा नहीं यह उसका भाग्य। पर सर्प को छुड़ाने वाला तो हिंसा का भागी हो गया। (२७२)

स्वामीजी ने एक बार कहा 'एक मनुष्य किसी दूसरे मनुष्य को कटारी से मारने लगा। वह मनुष्य बोला—'मुझे मत मारो। तब वह बोला—'मेरे तुझे मारने के भाव नहीं है। मैं तो कटारी की परीक्षा करता हूँ। देखता हूँ यह कैसी चलती है। तब वह बोला—'गनीमत तुम्हारे कीमत आंकने को। मेरे तो प्राण जाते हैं। (१ १)

अहिंसा के क्षेत्र में कार्य और भावना दोनों पर दृष्टि रखनी पड़ती है यह उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है। स्वामीजी ने अहिंसा के क्षेत्र में तुच्छ एकेन्द्रिय जीवों के प्राणों का भी उतना ही मूल्यांकन किया है जितना कि सृष्टि के सर्वश्रेष्ठ प्राणी मनुष्य के जीवन का। एकेन्द्रिय जीवों के भी प्राण हैं। उन्हें भी सुख-दुःख होता है। मनुष्य के लिए उनके संहार में पाप नहीं यह भ्रम अहिंसा के क्षेत्र में नहीं टिक सकता।

स्वामीजी कइयों को प्रिय थे और कइयों को अप्रिय। कइयों के लिए स्वामनाई थे और कइयों के लिए एक महान् भय। इस तरह एक ही व्यक्ति के अलग अलग रूप दिखाई देते हैं। इसके कारण की स्वयं स्वामीजी ने ही मीमांसा की है। इसमें अनेकान्त वाद है। स्वामीजी कहते हैं—'एक ही पकवान दो मनुष्यों के सामने आता है। निरोग को वह मीठा लगता है और रोगी को कड़वा। यह वस्तु का अन्तर नहीं उसके भोक्ता का अन्तर है। सम्यक् दृष्टि को साधु अच्छा लगता है और मिथ्या दृष्टि को बुरा। (१ १)

'गाँव के मनुष्य दो व्यक्तियों के सामने आते हैं। एक व्यक्ति पीलिये का रोगी है वह उन सबको पीला ही पीला देखता है। दूसरा व्यक्ति स्वस्थ है। उसे वे पीले नहीं मालूम देते। वैसे ही मेरे श्रद्धा-आचार उनको प्रपंच मालूम देते हैं जिनमें स्वयं में प्रपंच है। जिनमें शुद्ध दृष्टि है उन्हें मेरे श्रद्धा-आचार में कोई दोष नहीं दिखाई देता। (१)

स्वामीजी के विचारों को सही रूप से तोलने की यदि कोई शुद्ध तुला हो सकती है तो वह आगम-वाणी है। स्वामीजी जैन-मुनि थे। जैन शास्त्रों के आधार पर वे मुण्डित हुए थे। उनमें उनकी अनन्य श्रद्धा थी। उनके आचार, विचार और व्यवहार में जिन-वाणी का प्रत्यक्ष प्रभाव है। इस कसौटी पर देखा जाय तो वे सौ टंच सोने की तरह खरे उतरते हैं।

स्वामीजी के इन दृष्टान्तों का श्रीमद् जयाचार्य ने अपने 'भिक्षु जश रसायन' नामक सुन्दर चरित-काव्य में भरपूर उपयोग किया है। संगीतमय मधुर पद्य में उन्हें गुम्फित कर स्वामीजी के एक मार्मिक जीवन-चरित्र की धरोहर उन्होंने भावी पीढ़ी को सौंपी है।

लेखक की 'आचार्य संत भीखणजी' नामक पुस्तक में अनेक दृष्टान्तों का हिन्दी अनुवाद और भाव स्पष्टन है। इसी पुस्तक के द्वितीय खण्ड (अप्रकाशित) में अवशेष अन्य दृष्टान्तों का प्रकरणानुसार उपयोग किया गया है।

नव प्रकाशित 'भिक्षु-विचार दर्शन' नामक सुन्दर पुस्तक में भी अनेक दृष्टान्तों के गांभीर्य उद्घाटित हैं।

स्वामीजी के दृष्टान्त आज तक हम लोग व्याख्यानों में सुनते रहे। प्रथम बार वे सम्पूर्ण रूप में मूल राजस्थानी भाषा में पाठकों के सामने उपस्थित हैं। यह प्रकाशन तेरापन्थ द्विशताब्दी समारोह के अवसर पर अवश्य ही बड़ा समीचीन माना जायगा। इन दृष्टान्तों में स्वामीजी का जीवन-सन्देश भरा पड़ा है। तेरापन्थ के वे शिलान्यास से हैं और उच्च धार्मिक जीवन की प्रेरणा देते हैं।

१५, नूरमल लोहिया लेन
कलकत्ता
१ जून १९६

श्रीचन्द रामपुरिया

विषय-सूची

— —

भिक्खु दृष्टान्त

१

बून्दी में सवाईराम ओसवाल चर्चा करतां भिक्खु कह्यो : गाय भैंसरा मूंडा आगै घणो चारो नाख्यां ओगाळो करै। सब लेह करै ओ तैं ढांढो कह्यो। बेराजी थयो। तब स्वामीजी कह्यो ए ढांढा थयां म्हारो ज्ञान चारो थाय। इम कह्यां राजी थयो। पछै सवाईराम गुरु किया।

पछ्या सवाईराम ने कह्यो म्हैं तेरापन्थ्यां ने यूं आय दिया पूं छाया। जब सवाईराम बोल्यो : दोयां रे झगड़ो लागां एक जणे तो पोतारो घर झण्यार पुन कियो। दूजो कजियो करतो डरै। घर को जावतो करै, सो बोलता डरै। थें थांरो घर झण्यार पुन कियो। साध पणांरो जावतो नहीं। सो मन आवै ज्यूं बोलो। इम कही कष्ट कीयो।

एक दिन चरचा करतां सवाईराम ने कह्यो : थें म्हांनै दोषीला कह्यो, पिण थांरा गुरां ने पिण किंवाड़िया रो दोष लागे छै। जब सवाईराम कह्यो एक राजा रो प्रधान राजा रो माल खावै नहीं, पिण दूजा प्रधान द्वेषी। सो राजा कनै चुगली खाधी ए प्रधान आपरो माल खावै छै। जब राजा दोयां नें भेळाकर पूछ्यो। तब ते चुगलखोर कहै रावळा में दरबार रा पाना स्याही लेखणा दीधी। जद प्रधान कह्यो : पाना स्याही लेखणा तो भणवाने दीधी छै। ए भणिया राजा रै इज काम आवसी। राजा सुणीनै राजी थयो। चुगल फीटो पड्यो, चुगल झूठी चाड़ी खाधी अणहूंतो दूंषणो काढ्यो, ज्यूं थें किंवाड़िया रो दोष बतायो सो थें पिण झूठा छो। ✱

१२

पाली में भिक्खणजी स्वामी बाजार लेह मैं एक हाट में ठहर्या। सो रूपनाथजी रूप हुकाम बाला रै घरे ...आइ ने कह्यो : ए कांती सुत नमपू

ताई आय नहीं। जद तिण वाइ स्वामीजी ने कह्यो म्हारी आज्ञा नहीं। जद भिक्खु कह्यो चोमासे में पिण तूं कहसी जद परहा जासां। जद बाइ कह्यो मोत वा सरिखा कहि गया—चौमासो लागा पछै आय नहीं तिणसूं आज्ञा नहीं। पछै स्वामीजी आप गोचरी उठ्या। उदैपुरिया बाजार में एक मैड़ी मांगी। आप बठा से साधां नें भेज उपगरण मंगाय लिया। दिनें ऊंचा रहै। रात्रि हेठे दुकान में बखाण देवै। परखदा घणी होवै। लोक घणा समझ्या। रुघनाथजी सिज्यातर ने घणोई कह्यो—ये आगा क्यूं दीधी। ए अवनीत निन्हव छे। जद ते कहै—काति सुदी १५ ताई नां कहूं नहीं। पछै थोड़ा दिनां में मेह घणों आयां की पहिली छवरिया तिण हाट री पाट भागो। सैकड़ा मणा बोझ पड़्या। ए बात स्वामीजी सुण कह्यो म्हाने हाट छुड़ाई त्यां ऊपर अदुभाव रा स्वभाव की सहर आचारो ठिकाणो, पिण म्हा सूं तो उपगार ईज कीयो एसा लिमावान। ✱

३

पीपाड़ में भीखणजी स्वामी न रुघनाथजी रो साध जीवणजी कहै साधु रो आहार अव्रत प्रमाद में है। जद स्वामीजी कह्यो : भगवान री आज्ञा छे सो काम चोखो। पिण जीवणजी मान्यो नहीं। फेर स्वामीजी पूछ्यो : साधु आहार करे सो काम चोखो के खोटो ? जीवणजी बोल्यो : साधु आहार करे ते खोटो काम, त्यागै ते चोखो काम। दिशा आदि जातां मिले जद स्वामीजी पूछे जीवनजी ! खाटो काम कीधा के करणो है ? इम वार-वार पूछतां लाजरियो। कहै—भीखणजी। साधु आहार करे सो काम चोखोइ है। ✱

४

कण्टालीया में भीखणजी स्वामी रो मित्र गुलाजी गाधइयो। तिणन स्वामीजी पूछ्यो। गुला ! कांइ मिती कीधी ? हां स्वामीनाथ कीधी। स्वामीजी पूछ्यो उपत खपत कीकर है ? जद गुलजी बोल्या : स्वामीनाथ ! रुपिया दश लागा कांयक हल रे भाड़ारा कांयक निनाणरा कांयक बीजरा, सब दश रुपिया लागा। स्वामीजी पूछ्या : पाछा किततोक आयो ? जद

गुरुजी कह्या स्वामीनाथ । रुपिया दशेक रो माल पाछो आयो। इतरोक रुपिया का मूंग, इतरोक चारो, इतरीक बाजरी, सब रुपया दशेक रो माल पाछो आयो। लागो जितरा तो आ गयो, खेती बापरी में तो चूक नहीं। जद स्वामीजी बोल्या गुरुजी! दश रुपिया कोठा री माळी में पड़िया रहता तो इतरो पाप तो न लागतो । इसो आरम्भ क्यूं कीधो। ❀

५

देसूरी में नाथा साधु स्वी खी मां खाड़ दिक्षा लीधी पिण प्रकृति
करड़ी आछी तरह आज्ञा में चाले नहीं। तीन वर्ष आसर टोला में रह्या। पछे टोला बारे निकल गयो। कने हुंता त्यां साधां स्वामीजी ने बात कह्या नाथो छूट गया। जद स्वामीजी कह्या किणहिरे गूंवड़ो दुखतो थको ते पछे फूट गया तो ऊ राजी हुवे क बेराजी है? जद कह्या राजी हुवे। ज्यूं दुखदाई छूटा बेराजीपा नहीं। ❀

६

राग द्वेष आळखायवा स्वामीजी दृष्टान्त दियो। किणहि डावरा र माथा में दीधी। जद तो लाक वमन बोलता दव। मदा आदमी छोहरा मां माथा में क्यू द। अने किणही डावरा मां हाथ मं लाडू दियो। तवा मूसा दियो। वमन काई बरजे नहीं। आ राग आळखणो दोहरा अन ऊ द्वेष आळखणा सोहरा। तिण सं बीतराग कह्या पिण बीतद्वेष न कह्या। राग मिट्या द्वेष तो पहिलाइज मिट जाय। ❀

७

जयमलजीरा टोला माहि थी संवत १८०० रे आसरे गुमानजी दुरगदासजी पमजी रतनजी आदि माठे जणा नीकल्या। थानक, नित पिण्ड बगासरा पाणी बहिरणा आदि छाड़ मबा सापपणा पचाल्या पिण मरधा तो बाहिज पुन री। जद लाक कहिवा लागा : नीलमजी नीकल्या ज्यूं पहि नीकल्या। जद स्वामीजी बाल्या : सिराइनी राव बाळों पासरा गहा किया है। [illegible]

बीकानेर, जैपुर, जोधपुर, वाला रे पालखी आपरिइ पालखी बणावो। इम विचार बांस बांध ऊपर छाया करी छाल वस्त्र ओढाय पालखो बणायो। पालखी रो बांस तो डांक सहित वक्र पणे हुवे, तिणमें तो समझे नहीं अनै मां पालखो बणायो ते पाधरो बांस पाळ। विपरीत पणे दीसे। पछ्या पालखा में रावनें बसाण हवा लावा नीकल्या। साथे मनुष आगे पाछे घणा गाम बारे आया। जब लोक कने रूखरी छायां विश्राम लियो। अद्र करसणी बोल्या अठे मां बाळो र मां बाळो। छोहरा छोहरी बीहवा। अद्र सांरा चाकर साथे हुंता ते बोलवा : मां बोल रे मां बोल रावजी है रे रावजी। अद्र करसणी बोल्या बूहगड बात रावजी मर गया! म्हे तो रावजी री मा जाणी थी। अद्र चाकरां करसण्यां में कह्यो जयपुर, जोधपुर, उदयपुर वाला रे पालखी तिणसूं परिइ पालखो बणायो है। सो रावजी अठे हवा लावा आया है। अद्र करसण्यां कह्यो डोल सरिखो क्यूं बणायो? स्वामीजी कह्यो जेसो सिरोहना रावनो पालखो तिसो वां मनो साधपणो पचखमा है। पिण सरधा खोटी। जीव खवाया पुन सरधे। सावद्य दान में पुन सरधे तिणसूं समकत चारित्र एक ही नहीं। ✱

८

गुमानजी रा साध दुर्गदासजी तिणनें भीखणजी स्वामी कह्यो : थे आधाकर्मी थानक में दोष बतावता अद्र थ मानता नहीं अनै अबे थानमें छोड्या पछे थे थानक सिपेधवा लागा। अद्र दुरगदासजी बोल्या रावण रा उमराव रावण न खोटा जाणता था, पिण गोली राम कानी बाहता। ज्यूं थां भला हुंता अद्र म्हे पिण थानक न सिपधता। अने म थानक निपधता अद्र म्हे द्वेष करता। ✱

९

गुमानजी रो साध धनजी हेमजी स्वामी ने बाल्यो : हेमजी तीन गूंबड़ा बधता हुंता ते आज फाड़ न्हांख्या। अद्र हेमजी स्वामी बोल्या : थणा मांहि थी भीखणजी ने बला साधपणो पचख्या म ना घना दिन थया अनें तीन गूंबड़ा

११

एक गाम में स्वामीजी ऊतर्‍या। अमरसिंहजी रा टोळा रा साध, दुसरदासजी कोजीरामजी, आया। त्यै ऊतर्‍या तिहां स्वामीजी जाय ऊभा प्रश्न पूछ्यो। अणुकम्पा आणने किणही मूका मरता नैं मूका दिया, तिणमें कांइ हुवो ? जद त्यै बोल्या इसो प्रश्न मिथ्याती हुवै सो पूछै। जद स्वामीजी बोल्या पूछणवाळा तो पूछ लीधी। पिण कहिणवाळा कह्यो मिथ्याती हुवै तो मत कहो। जद ते बोल्या म्हे तो कह्यां छां—मूकामें पाप। जद स्वामीजी कह्यो मूकामें तो पुन्य पाप दोनूं है। पिण मूका अनुकंपा आण्यां सूं पावां केइ मिश्र कहै। जद कह्यो : मिश्र कहै सो पापी। फेर पूछ्यो—केइ पाप कहै। जद कह्यो पाप कहै सोई पापी। फेर पूछ्यो केइ पुन्य कहै। जद त्यां कह्यो पुन कहै सोइ पापी। जद स्वामीजी फेर विचारणा ऊंडी करने बोल्या केइ पुन सरधै है। जद त्यां कह्यो : सरधणी मन आवै ज्यूं। जद स्वामीजी कह्यो थारे महा पुन री। थे पुन परूपो नहीं। पिण पुन सरधो हो। इत्यादिक कहि कष्ट करी टिकाणे पधार्‍या। *

१२

पाली में एक जणो भीखणजी स्वामी सूं चरचा करतां ऊंधो बोलतो चालै। कहै—थांरा श्रावक इसा दुष्टी सो किणही रा गळा मांहि थी फांसी नहीं काढै। घणो विपरीत बोलतां स्वामी भीखणजी बोल्या थांरा ने म्हारा मत कहो, समचेइ बात करो। जद कोयक नजीक आयनें कह्यो [illegible] समचै बात कहा। तब स्वामीजी बोल्या एक जणे रूंखड़ा सूं फांसी खाधी। दोय जणा मारग जाता उणनें देखी। फांसी काढै ते किसोयक ? उणे नहिं काढै ते किसोयक ? तब ते बोल्यो : फांसी काढै ते महा उत्तम पुरुष मोक्षरो जावणहार देवलोक में जाणहार, दयावंत। घणा गुण कीधा। नहीं काढै तिको महापापी महादुष्टी नरक रा जावणहार। जद स्वामीजी कह्यो थें नै थांरा गुरु दोनूं जणा जाता हा। उणरी फांसी कुण काढै। जब उ बोल्यो : हूं काढूं। थांरा गुरु काढै के नहीं। जब कहै उवे क्यानें काढै। त्यै तो साधु

है। जब स्वामीजी कह्यो मोक्ष देवलोक रो जाणहार तो तूं ठहर्‌यो। थांरे लेखे नरक जावणहार थांरा गुरु ठहर्‌या। जब घणों कष्ट हुवो। जाब देवा समर्थ नहीं। *

१३

किण ही कह्यो अहो भीखणजी! बाईसटोला वाला थांरा अवगुण काढे है। जद स्वामीजी कह्यो अवगुण काढे है के घाले है? जद ते बोल्यो अवगुण काढे है। जद स्वामीजी कह्यो कोनी काढता। कांयक तो थे काढे। कांयक म्हें काढां। म्हारे अवगुण काढणा इज है। *

१४

पीपार में किशना इक जणा मनसोबो करनें पूछ्यो—भीखणजी! लोक में यूं कहै छै—'सात-सात तो देस्यूं अने एक-एक गिणस्यूं', तेहनो अर्थ कांई? जद स्वामीजी कह्यो एतो पापरो अर्थ छै। सात सुपारी देवे अनें एक सातो गिणै। लोक सुणनें आश्चर्य थया। *

१५

भीखणजी स्वामी देसूरी जातां घाणेरावनां महाजन मिल्या। पूछ्यो थांरो नाम कांइ? स्वामीजी बोल्या म्हारो नाम भीखन। जब ते बोल्या भीखन तेरापन्थी ते तुम्हें? जद स्वामीजी कह्यो हां उवेहीज। जब ते क्रोधकर बोल्या थांरो मूंहडो दीठा नरक जाय। तिवारे स्वामीजी कह्यो थांरो मूंहडो दीठा? जब स्वा० कह्यो म्हारा मूंहडा दीठा देवलोक ने मोक्ष जाय। जद स्वामीजी कह्यो म्हें तो यूं न कहां—मूंहडो दीठां स्वर्ग नरक जाय पिण थांरी कहिणी रे लेखे थांरो मूंहडो तो म्हें दीठो सो मोक्ष ने देवलोक तो म्हें जास्यां। अने म्हारो मूंहडो थें दीठो सो थांरी कहिणी रे लेखे थांरे पानें नरक ईज पडी। *

१६

संवत अठारे बैंतालीस र वर्षे पीपार चोमासो कीधो। हस्तुजी कस्तुरां जी रो पिता अगू जोसी, तिण रे परचा करणा मंडा देखी। पछे अप

गाँधी ने कह्यो भीखणजी री श्रद्धा खोटी। किण ही श्रावक ने बासती सेवा में ई पाप कहै। किण ही गृहस्थ री बासती चोर ले गयो तिण में ई पाप कहै। इम चोर ने श्रावक सरीखो गिणै। तब बगू गाँधी स्वामीजी नें ए बात पूछी। एक न्याय किम? जब स्वामीजी कह्यो थांने पूछणो थारी पछेवड़ी एक तो चोरनें ले गयो, एक थे श्रावक नें दीधी थाने किण बातरो प्रायश्चित आवै? जो कहै चोर ले गयो तिणरो प्रायश्चित न कहै अनें श्रावक नें पछेवड़ी दीधी रो प्रायश्चित कहै तो थारे लेखे इम देणो खोटो ठहर्यो। पछे बगू गाँधी त्यांनें छोड़ने स्वामीजी नें गुरु किया। ✱

१७

संवत अठारै पैंताळीसे पीपाड़ चोमासे घणा लोक समझ्या। बगू गाँधी पिण समझ्यो। तिणरो रे श्रावका ने दोरो घणो लागो। जब लोक कहै: भीखणजी बगूजी समझता दीक्षा ने इ दोरो लागो पिण खेतसीजी लुणावत ने तो दोहरो घणों इज लागो। सोच घणों करे। जब स्वामीजी कह्यो परदेश में चल्यांरी लुणावणी आयां सोच तो घणाइ करे, पिण कांची कांचळी तो एक बणी पहर। ✱

१८ :

तिणहिज चोमासे वखाण सुणनें लोक राजी घणा हुवै। कोई द्वेषी कहै रात्रि घणी आई सवापोहर, दोढपोहर। जब स्वामीजी कहै दु:ख री रात्रि मोटी लखावै। विवाहादिक सुख री रात्रि छोटी लखावै अनें सगी सांम मनुष मूंआ रे दुख री रात्रि घणी मोटी लखावै। ज्यूं वखाण न गमें ज्यांनें रात्रि घणी मोटी लखावै। ✱

१९ :

तिणहिज चोमासे केइ वखाण तो नहिं सुणें अनें अलगा बेठ निंदा करै। जब किणही कह्यो भीखणजी! थे तो वखाण देवो अनें ए निंदा करे। जब स्वामीजी कह्यो स्वान रो स्वभाव झाखर वाल्या रोवण को पिण यूं न समझे या झाखर विवाह री के के मसांरी छै। [illegible]

में ज्ञानरी बात आवे, तिणसूं राजी होणो उठे रह्यो अपूठी निंदा करै। थारे निंदारो स्वभाव छै तिणसूं ऊंधी सूझै। ❀

२०

तिण पीपार में एक गेबीराम चारण भगत थयो। ते लोकांने पूजावे। भगतां ने लापसी जीमावे। तिणने लोकां सीखायो तूं भगतांने लापसी जीमावे तिणमें भीखणजी पाप कहै। जब ते गेबीराम मोटी हाथ में ले गुपरा धमकाव तो स्वामीजी कनें आयो। कहै हे भीखण बाबा। हूं भगतांने लापसी जीमाऊं सो कांइ हुवै ? स्वामीजी बोल्या लापसी में जैसो गुड़ घाले जैसी मीठो हुवै। इम सुणने घणो राजी हुवो। नाचवा लागो। भीखण बाबे भलो न्याय दीधो। लोक बोल्या भीखणजी पहिलां उत्तर आपै चाहज राख्यो हुंतो। ❀

२१

संवत अठारे तेपन सोजत में चोमासो कियो। लोकां घणा समझ्या। जब किणहि कह्यो : भीखणजी। उपगार तो आछो कियो। घणा नें समझाया। जद स्वामीजी बोल्या खरी कीधी पिण गाम रे गोरवे है सो गधा आय न चढ़िया तो टिकसी बाकी काम कठिन। ❀

२२

स्वामीजी नीकल्या। साधवियां न हुई तठा पहिलां किणहि कह्यो : थारे तीरथ तीन हीज है ? जाड़ू है पिण खोड़ो है। जद स्वामीजी बोल्या खोड़ो है पिण चोगुणी रो है। ❀

२३

रावां में पखाण बाचता आधार री गाथा सुणनें मोतीराम बोहरो बोल्यो : भीखणजी। बोहरो पूरो हुवो है तो हि गुलाब लेवणी छोड़े नहिं। ज्यूं थे पूरा थया ताहि भीखाने निपपणा छोड्या नहिं। जद स्वामीजी बोल्या : थारे बाप हुंदां लीसी थारे हाथे हूंदा लिखी पखा पाटी थेह सोंप्या कोइ नहीं। दीपचंद सुणात मन में धरो देई आपरा हेतू मित्राने कह्यो—भीखणजी

रो वचन इसो निकल्यो सो पाटा-पाटी समेत तो दीसे है। जब त्यां आप आप रा रुपइया साच लीया। पछै थोड़ा दिना में परवार गयो। पाटा पाटी सांबट लिया।

२४ :

रीयां में अमरसाहजी रो साधु तिलाकजी स्वामीजी कने आय बोल्यो सूत्र में अन्न पुन्ने पाण पुन्ने आदि नव प्रकारे पुन्य कह्या है। भगवंत प्रदेशी री दानशाळा कही पिण पापशाळा न कही। भगवंत अन्न पुन्य कह्यो पिण अन्न पाप न कह्यो। जद ये दान दया उठाय दीधी। स्वामीजी बोल्या अनुकंपा आणने कोइ ने सेर बाजरी दीधी तिणमें छै तो पुन्यक ! जद बोल्यो : हम क्या जाणै। हम तो मंढिया बांचते। हम आगर के पाणी पीवे। हम दिल्ली के पाणी पीवे। जद स्वामीजी बोल्या : दिल्ली आगरा में तो गायां कटै। इण बात में कोइ सिधाई। सूत्र भण्या हवे तो कहो। इसड़े रतनजी जसी थूंको आवो। ए बात सुण तिणने सिधेघने बोल्यो : थे दीक्षा पड़ गया हो तो ही माना एक दाणा में असार पर्याय स्वार प्राण ते सुवाया पुन्य किम हुसी अनें ये मुंहपती बांधने क्यूं खोटी हुवा ? एकेन्द्रि खुवाया पुन्य कहां छो। इम कष्ट कीधां जब बाल्यो रह्यो।

२५

रीयां में हरजीमल सेठ कपड़ा री वीनती कीधी। स्वामीजी बोल्या थे साधां रे अर्थे मोल लेइ कपड़ा वहिरावो ते म्हाने कल्पे नहीं। जब सेठ बोल्यो। बीजा तो लेवे। हूँ मोल लेइ वहिराडूं मोनें कोइ हुवा ? जद स्वामीजी बोल्या उणांने इम पूछ लियो। जद सेठ बाल्यो कठिण में तो मोल ले दियो में सबे ही पापड़ करै पिण लेवे तो उरहो। म्हारा पहिरण ओढण आंहिलो कपड़ो आप लेवा। जद स्वामीजी बोल्या ए पिण नहिं ल्यां। बीजा पिण कपड़ा ले गया भीखणजी पिण ले गया। कुण तार काढै।

२६

हरजीमल सेठ रागी थया जद रूपनाथजी से हरजाजी साधु भाडा आलिया लइ बांधवा लागो। भीखणजी उठे अमकड़िये गामें काची पाणी

२९

खेरवा में स्वामीजी कनें ओटी स्वाङ र धो में बको बोल्यो में श्रावक नें दियाइ पाप कहो में बेस्या में दियाइ पाप कहो छो इण लेखे श्रावक अने वेश्या सरीखा गिण्या। जद स्वामीजी बोल्या ओटाजी छोटी भरने काचो पाणी थारी माने पायां काइ हुवे? जद ते बोल्यो पाप हुवे। जद स्वामीजी फेर बोल्या : एक छोटी पाणी वेश्यामें पायां काइ हुवे? जद बोल्यो इणमैंइ पाप हुवे। जद स्वामीजी बोल्या थारे लेखे थारी मां ने वेश्या सरीखी गिणी काई? जब घणो कष्ट हुवो। लोक बोल्या ओटैजी मां नेवेश्या सरीखी गिणी। *

३०

दूंढार में स्वामी भीखणजी पासे श्रावगी चरचा करवा आया। बोल्या मुनी नें चार मात्र वस्त्र राखणो नहीं। राखे ते परीसह थी भागा। जद स्वामीजी कह्यो परीसह किंतरा? जब ते बोल्या : परीसह बावीस। स्वामी जी कह्यो पहलो परीसह किसो? जब त्यां कह्यो क्षुधा रो। स्वामीजी पूछ्यो थांरा मुनि आहार करे के नहीं करे? जब त्यां कह्यो एक टंक करै। जब स्वामीजी कह्यो थारा मुनी प्रथम परीसह थी थारे लेखै भागा। जब ते बोल्या : भूख लागा आहार करै। जद स्वामीजी कह्यो मैंइ सी लागां कपड़ो ओढां। वलि स्वामीजी पूछ्यो थारा मुनी पाणी पीवै के नहीं? जब त्यां कह्यो पाणी पिण पीवै। जद स्वामीजी कह्यो : इण लेखै थारे मुनी दूजा परीसह थी पिण भागा। जद ते बोल्या तृपा लागा पाणी पीयें। जद स्वामीजी कह्यो सीता दिक टालवा म्है पिण वस्त्र ओढां अनें जो भूख लागां अन्न खावां, तृपा लागां पाणी पीयां परीसह थी न भागै तो सीतादि टालवा वस्त्र राख्यां पिण परीसह थी न भागै। इत्यादिक अनेक चरचा सूं कष्ट कीधो। दिवै दूजे दिन घणा भेला होय नें आया। स्वामीजी दिशा पधारता था सो साहमां मिल्या। करड़ा होय ने बोल्या : म्है तो चरचा करवा आया नें थे दिशा जावो छो। वणारी मूराणी देखने स्वामीजी बोल्या : आज तो थे कजिया रे मते आया दीसो छो। जब ते बोल्या : थांने किस तरे खबर पड़ी?

३३

माधोपुर में भाया तो घणां समझ्या सो गोचरी गया कठै आपा पधारो। बाया रो मन नहीं। जद माया बायां ने कह्यो सगळा में सिरै तो मस्तक, देही में उत्तरता पग। थांरे पगां में तो माथो देवां फेर मोका री किसी गिणत ? इम कही नें समझाय स्वामीजी नें मांही ले जाय नें बहिरायो। ए कला पिण मायां नें स्वामीजी सिखाइ दिसे। *

३४

कांफरला में साध गोचरी गया। एक आदमी रे धोवण, पिण बहिरावै नहीं। कहै—देवै जिसो पावै सो धोवण म्हांसू पीवणी आवे नहीं। साधां आय स्वामीजी ने कह्यो एक आदमी रे धोवण मोकळो। पिण इम कहै। जद स्वामीजी पधार्‌या। भाइ ने कह्यो धोवण बहिराव। जद ते भाइ कहै : जिसो देवै जिसो पावै सो धोवण म्हासूं पीवणी आवै नहीं। जद स्वामीजी कह्यो गाय नें चारो देवै ना जो तूध देवै ज्यूं साधानें धोवण दियां आगे सुख पावै। इम सुणने कह्यो ज्यों महाराज। पछै धोवण लेइ ठिकाणै पधार्‌या। *

३५

मारवाड़िया में स्वामीजी पधार्‌या। एक बाई कह्यो स्वामीजी म्हारे भैंस ब्यावै जद पधारो तो लाहो लेवूं। ते किम भस ब्याया एक महिनों ताइ दूध दही बाहर देवे पिण बिलोवै नहीं। ते देवी रे टाणे पधारज्यो। जद स्वामीजी कह्यो थांरे कद भैंस ब्यावै ने कद देवी दुवै। म्हांनें कद समाचार दुवै नें गी आवां। *

३६

केलवा में एक बाई कहै स्वामीजी पधारै तो साधपणा लेवूं। इम बात करता कांई। पछै स्वामीजी पधार्‌या। धमका सूं बाई ने ताव चढ़ गयो। सामैं दरसण करवा आई जद स्वामीजी पूछ्यो काइ थयो ? थें क्यूं कांपे है। जद वा दाझा करती कहै स्वामीजी। आपरा पधारणा हुवा नें मानें ताव चढ़ गयो। जद स्वामीजी पूछ्या दिक्षा रा धमका सू थान ताव न चढ्यो

देख। जद तिण कह्यो मन में आइ तो खरी। जद स्वामीजी कह्यो : यूं धसको पड़े तो दिक्षा रो काम आघ जीव रो है। ❀

: ३७ :

नेरवा रो पखुरा साह स्वामीजी नें कह्यो : महाराज! साधपण रा भाव छै है। जद स्वामीजी कह्यो थारो हीयो काचो है। घर रा पुत्रादिक रोवै जद थेइ रोवणा लाग जावो तो पछे काम कठण। जद सा कह्यो आंसु तो आय जावै। जद स्वामीजी कह्यो सासरै आयो लेवा जमाई आवै जद स्त्री तो रोवै। पिण उणरै देखादेख जमाई रोवा लाग जावै जद लोक में भूंडी लागे। ज्यूं साधपणो लेवे जरे उणरा न्यातीला रोवै ते तो आपरे स्वार्थ पिण उणरी देखादेख दीक्षा लेणवालो रोवा लाग जावै तो बात विपरीत। ❀

३८

पीपार में स्वामीजी गोचरी पधार्‌या। एक बाई इम बोली : भीखणजी री श्रद्धा लीधी तो उणरो धणी मर गयो। जद स्वामीजी बोल्या बाई! तूं ही बालक इम दीसै। थारो धणी किणस मूवो? तूं तो भीखणजी री निंदा करे है। जद और बायां बोली भीखणजी पहीज छै पहीज। तिवारे उण पाणी पड्यो घरमें न्हास गई। ❀

३९

आऊवा में स्वामीजी ईरापी पधार्या भीखणजी थें देवरो निपेधा छा पिण आगे तो बड़ा-बड़ा धर्मेसरी कोड़सरी ल्या देवल करावा। जद स्वामीजी बोल्या थारा घरे पचास हजार रो डेरो थयो देवल करावो के नहीं। जद ते बोल्या हूं करावूं। जद स्वामीजी पूछ्यो थामें जीवरा भेद गुण स्थान उपयोग जोग लेश्या किती? जद ते बोल्यो : या तो मोनें खबर नहीं। जद स्वामीजी बोल्या इसा समझणा आगेइ हुँसा। डेरो दिखणी [illegible] ❀

: ४० :

आउवा में नगजी साहूकजी रा बेटो बोल्यो : भीखणजी दसुचरी में 'वा' किणरा ने 'वी' किणरा ? जद स्वामीजी बोल्या भगवती में 'का' किणरा ने 'की' किणरा ? 'खा' किणरा ने 'खी' किणरा ? 'गा' किणरा ने 'गी' 'किणरा' ? 'घा' किणरा नें 'घी' किणरा ? जब चुप हुवो। *

४१ :

किणही पूछ्यो भीखणजी ने यूं कह्यो एक महाव्रत भागां पांचूं भागे सो यूं साबत पांचू किम भागे ? जद स्वामीजी बोल्या : पापरो उदै हुवे जब संसार में इ जीव दुःख भोगवे। जिम एक भिखारी नें शहर में फिरतां पांच रोटी रो आटो मिल्यो। रोटी करबा लागो। एक तो रोटी ख्वारन चूला आरे मेली। एक रोटी तवे सिके। एक रोटी खीरां सिके। एक रोटी रो लोयो हाथ में। अनें एक रोटी रो आटो कठोती में। एक कुत्तो आयो सो कठोती में एक रोटीरो आटो ले ले गयो। तिण कुत्ता लारे भिखारी न्हाठो। हेठे पड़ियो सो हाथ मांहलो लोयो धूळ में मिल गयो। पाछो आय देखे तो चूला आरे रोटी पड़ी हुंती ते मिनकी ले गई। तवेरी तवे बळ गई। खीरां री खीरां बळ गई। इण रीते एक महाव्रत भागां पांचू भाग जावे। *

४२ :

स्वामी भीखणजी पीपाड़ पधारया। गाम में लोक द्वेष घणो करै। आहार पाणी री संकड़ाई। जद स्वामीजी साधां ने कह्यो : मासखमण [illegible] रहिवा रा भाव है। जद साधु बोल्या : आहार पाणी री संकड़ाई घणी। घणा लोक आहार दे नहीं। जद स्वामीजी एक गोचरी तो बाहरला गाम री करावे। एक गोचरी शहर री। एक गोचरी महाजनां री करावे। सो स्वामीजी गोचरी उठ्या पिण लोकां रै बहोमस्ती भीखणजी ने एक रोटी देवे तो इग्यारे समाई दंड री। जठे जाय जठे आहार पाणी री जोगवाई पूछ्यां कहै नहीं तो आनक भाव समाई करां। एक आपणां आहार पाणी री जोगवाई पूछ्यां कहै म्हारी मनर बाकन समाई करै। सो भीखणजी ने रोटी दियां

नर्मदरी समाइ गल जावे । पछ्वी ऊँची सरचा । इम कठइ मायो दे देवे कठेइ पाइ दे देवे । कितरायक दिन नीकल्या । रुघनाथजी ने खबर हुई जद जोधपुर सूं चाल्या आया । लोक वखाण सुणवा आया पिण ताकीदरा विहार सूं रुघनाथजी नें ताव चढ़ गयो । कन्ने ठोट चेला ने ल्याया ते वखाण दे जाणे नहीं । जद परिषद पाछी फिरी । बजार में केयक स्वामीजी रो वखाण सुणवा लाग गया । पछे लोक कहे आपस में चरचा करो । पछे ब्राह्मणां ने सिखाया म्हारे चेलो अयनीत होय गयो सो ब्राह्मणां न दियां पाप कहे । पछे ब्राह्मण स्वामी जी कनें आय चर्चा करवा लागा । जद रामचन्द कटारियो बोलियो दान दियां रुघनाथजी धर्म कहे तो पचीस मण गुड़ री कोठी भरी है ते पराही देऊं । जद ब्राह्मण रामचन्द सारा रुघनाथजी कने आया । रामचन्दजी रुघनाथजी ने कह्यो, थे धर्म कहो तो पचीस मण गोहांरी कोठी भरी है जिका ब्राह्मणां नें गाठ बंधाय देऊं । कहो तो घूगरी रधाय देऊं । कहो तो आटो पीसाय देऊं । कहो तो रोट्यां करायनें दो मण चणा रे आटा रो लाटो कराय नें ब्राह्मणां न जीमाडूं । घणों धर्म हुवे सो बतावो । जद रुघनाथजी बोल्या म्हें तो साध हां । म्हारे कठे कहणो है रे ? म्हारे तो मून है । जद रामचन्द बोल्या थारे नहि कहणो तो अब किम कहसी ? यां दिवे तो उवे सोकड़ा चाढे । मोटा होयनें कोई लोकां ने लगावो हो । चरचा करणी है तो न्याय री चरचा करो । यूं कहीने पाछो आया । स्वामीजी रे मास खमण होवारी त्यारी थई । जद भारीमलजी स्वामी ने रुघनाथजी कने मेल्या बात मावक च था रो कहे है सो चरचा करणी हुवे तो करो । जद रुघनाथ जी बोल्या किणरे चरचा करणी है रे ? पछे घणों उपकार कर घणा ने समझाय स्वामीजी विहार कीधा ।

४४

कंटालिया में १ भायो दीक्षा लवा त्यार थया पिण बोल्या म्हारे माता री मोहणी है सो माता जीवे जिते तो दीक्षा आवती दीसे नहीं । कितरायक दिनां पछे माता आउखो पूरो कियो पछे फेर स्वामीजी उपदेश दियो । जद बोल्या स्वामीजी मगरे व्यापार करूं हूं सो मेरण्यारी मोहणी लागी ।

जद स्वामीजी बोल्या माता तो एक बुढी हे मर गइ पिण मेरे भेरव्यां तो घणी सो कद मरे न कद थने दीक्षा आवे। *

४४

दान ऊपर भीखणजी स्वामी दृष्टंत दीधो। पांच जणां सीरमें चणां री खेत बाह्या। पांच सो मण चणा नीपना। पांचू जणां मतो कीधो—घर में धन तो मोकलो है यां चणांरो दान धर्म करो। जद एक जणे सोमण चणा भिखारयांने छुटाय दिया। दूजे सोमण रा भूगड़ा सेकाय दिया। तीजे सोमण चणांनी घूघरी रंधाय खुवाइ। चौथे सोमण चणां री रोट्यां कराय पाक्षती कांटो करायने जीमाया। पांचमें सोमण चणां वोसरायने हाथ लगावारा त्याग किया। सावद्य दान में पुण्य धर्म कहे त्याने पूछीजे घणो धर्म किणने थयो। *

४५ :

बलि दान ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो एक बूढो डोकरो भिक्षा मांगतो फिरे। किणही अनुकम्पा आणने सेर चणां दिया। जद डोकरे किणहीनें कह्यो : एक जणे मोने सेर चणां दिया है पिण दांत नहीं सो मोने पीस दे। जद दूजी बाई अनुकंपा आणने पीस दिया। आगे जायनें किणहीनें कह्यो मोने एक जणे धर्मात्मा सेर चणां दिया है दूजी बाई पीस दिया तिणसू तू मोनें रोटी कर दे। जद तीजी बाई अनुकंपा आण नें लूण पाणी घालने सेर चून री रोट्यां कर दीधी। ते रोटी खाय तृप्त थयो। थोड़ी देर में तृषा घणी लागी जद आगे जायनें कहे है रे कोइ धर्मात्मा। मोनें पाणी पावे। जद चोथी बाई अनुकंपा आणनें काचो पाणी पायो। एक जणे चणा दिया दूजी पीस दिया, तीजी रोट्यांकर जिमायो चोथी पाणी पायो सो च्यारां में घणो धर्म किणनें थयो? *

४६ :

डीकमजी रो बेटो रूपरोजी आडोर रो वासी सिरयारी में स्वामीजी कनें आयो। कहै भीखणजी कठे? जद स्वामीजी बोल्या भीखण म्हारो

नाम है। जद ते बोल्यो आपने देखवारी म्हारे मनमें घणी थी। स्वामीजी बोल्या देखो। पछे कबरोजी बोल्यो माने चरचा पूछो। स्वामीजी बोल्या : थे देखवान आया थानें काइ चरचा पूछां। तब ते बोल्यो कांयक तो पूछो। जद स्वामीजी बोल्या थारे दीक्षा महाव्रत रो द्रव्य क्षेत्र काल भाव गुण कांइ है। जद ते बोल्यो आ तो मोने कोइ आवे नहीं पानां में मंडी है। स्वामीजी कह्यो पानों फाट गयो अथवा गम गयो हो तो कांई करस्यो? जद ते बोल्यो म्हारा गुरां थाने चरचा पूछी जिणरो थाने जाब न आयो। जद स्वामीजी कह्यो थारा गुरां चरचा पूछी तिकाहीज चरचा थे मोनें पूछो। ज्यानें जाब दियो है तो थानेइ चाल्हा। जद कबरोजी बोल्यो थे तो म्हारे चेला रा दादा गुरु हो सो हूं थासूं कठासूं जीतूं? जद स्वामीजी बोल्या म्हारे तो इसा पाता चेला कोइ चाहिजे नहीं।

४७

चवेपुर में स्वामीजी कने एक आयो अने बोल्यो मानै चरचा पूछो। जद स्वामीजी कह्यो थे ठिकाण आयाने कांइ चरचा पूछां? जद बोल्यो कांइक तो पूछो। जद स्वामीजी कह्यो थे सन्नी के असन्नी? ते बोल्यो : हूं सन्नी। स्वामी पूछयो किण न्याय? जद ते बोल्यो मा, मिच्छामि दुक्कडं हूं असन्नी। स्वामीजी पूछयो असन्नी ते किण न्याय? जद ते बोल्या नहीं २, मिच्छामि दुक्कडं सन्नी असन्नी एक ही नहीं। जद स्वामीजी बोल्या ते किम न्याय? जद ते रीस करने बोल्यो थ न्याय २ करने म्हारी मत बिखेरदो। जातो थका छाती में मूको री देइ चालतो रह्या।

४८

मोहता माहैं स्वामीजी रात्रि रा वखाण वांचता। आसाजी नींद घणी ले। जद स्वामीजी कह्यो नींद आवे है? आसोजी बोल्यो नहीं महाराज। वार वार पूछयो नींद आवे है? जद ते कहे नहीं महाराज। जद स्वामीजी मूठरो उपाड करवा वासते उपाव पुद्धी सूं बली पूछ्यो आसाजी। जीवो हो के? नहीं महाराज।

जद स्वामीजी बोल्या : माता वा एक हुतो ते भर गइ पिण मेरे मेरयां वो घणी सा कज मरे न कद धने दीक्षा आवे। *

४४

दान ऊपर भीखणजी स्वामी दृष्टंत दीधो। पांच मणां सीरमें चणां रो खेत वाढ्यो। पांच सो मण चणां नीपना। पांचू जणां मतो कीधो—घर में धन घो मोकलो है या चणांरो दान धर्म करो। जद एक जणे सोमण चणां भिखारूयांने लूटाय दिया। दूजे सोमण रा मू गड़ा सेकाय दिया। तीजे सोमण चणांनी घूगरी रंधाय खुवाइ। चौथे सोमण चणां री रोट्यां कराय पाळवी बाटो करायने जीमाया। पांचमें सोमण चणां बोसरायने हाथ क्समाबारा त्याग किया। सावध दान में पुण्य धर्म कहे त्यांने पूछीजे घणो धर्म किणने थयो। *

४५

वलि दान ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो एक बूढो डोकरो भिक्षा मांगतो फिरै। किणही अनुकम्पा आणने सेर चणा दिया। जब डोकरे किणहीनें कह्यो एक जणे माने सेर चणा दिया है पिण दांत नहीं सो मोने पीस दे। जब दूजी बाई अनुकंपा आणने पीस दिया। आगे जायनें किणहीनें कह्यो : मानें एक जणे धर्मात्मा सेर चणा दिया है दूजी बाई पीस दिया तिणसू तू मोनें रोटी कर दे। जब तीजी बाई अनुकंपा आण नें लूण पाणी घालने सेर चून री रोट्यां कर दीधी। ते रोटी खाय तृप्त थयो। थोड़ी वेर में तृषा घणी लागी जद आगे जायनें कहे है रे कोइ धर्मात्मा। मोनें पाणी पावे। जद चौथी बाई अनुकंपा आणनें काचो पाणी पायो। एक जणे चणा दिया दूजी पीस दिया, तीजी रोट्यांकर जिमाया चोथी पाणी पायो सो च्यारां में घणो धर्म किणनें थयो ? *

४६ :

हीरूजी री बेटो कचरोजी आचोर रो वासी सिरयारी में स्वामीजी कनें आयो। कहे भीखणजी कठे ? जद स्वामीजी बोल्या भीखण म्हारो

४९

साधा मांहो मांही वात कीधी, जब खेतसीजी स्वामी बोल्या : अबे तो अखैरामजी स्वामी आतमा वस कीधी दीसे है। जब स्वामीजी बोल्या पूरी प्रतीत नहीं। आ बात किणही अखैरामजी ने जाय कही। त्यांने गमी नहीं। पछे राजनगर चोमासो कीधो। तिहां स्वामीजी में अनेक दोष पानां में उतार आहार पाणी तोड़्या। चोमासा उतार्‍या स्वामीजी स्यूं मिल्या। खेतसीजी स्वामी अखैरामजी न वदनां करवा ताकीद सूं गया जब अखैरामजी बोल्या आपरि आहार पाणी भेलो नहीं। पछे आप कने अखैरामजी न समझाया। जब अखैरामजी स्वामीजी कने आंसू काढने बोल्या आप म्हारी प्रतीत न दीधी जिणसूं म्हारो मन उदास थयो। खेतसीजी तो म्हारी प्रतीत दीधी। जद स्वामीजी बोल्या म्हे प्रतीत न दीधी तोही थे साचा तो म्हाने इज कीधा। गरीब साध खेतसीजी थारी प्रतीत दीधी तिणने झूठा कीधो। इम सुणनें राजी हुवा। ❋

५०

स्वामीजी पुर पधार्‍या जब भेधो भाट आय चरचा करवा लागो। काळवादी इम कहै— भीखणजी गाथा में तो इम कहै—एकलड़ो जीव कासी गोता नव पदार्थ में पांच जीव कहै तिण लेखे पांचलड़ो जीव कासी गोता इम कहिणो। जद स्वामीजी बोल्या सिद्धां में आतमा पवे किती कहै? जद भेधो भाट बोल्यो सिद्धां में तो काळवादी आतमा च्यार कही है। स्वामीजी पूछ्यो त्यां च्यार आतमां ने काळवादी जीव कहै अथवा अजीव कहै? जब भेधो भाट बोल्यो च्यार आतमां न तवे जीव कहै है। जद स्वामीजी बोल्या सिद्धां में आतमा च्यार कहै ते च्यारां ने काळवादी जीव कहै इण लेखे चोखड़ो जीवतो थणारेइ ठहर्‍यो। एक वडु म्हारी समती ठहरी। इम कही समझाया। ते सुणने घणो राजी थयो। ❋

५१

माधापुर में गुजरमलजी श्रावक रे अने केसूरामजी रे चरचारी अड़बी थइ। श्रावक में आतमां गुजरमलजी तो आठ कहै अने केसूरामजी सात

करै । गूजरमलजी बोल्या चारित्र आवतो श्रावक में नहीं हुवे तो भीखणजी रा त्याग रा काइ काम ? इतले स्वामीजी पधारया । उणांरे मांहो मांही अड़वी देखने एक जणो नड़ा आयने छाने बातचीत कर सके नहीं तिणसूं दोर पासे बाजोट मेल दिया । पछे न्याय बतायने दोयांने स्वामीजी समझाया । स्वामीजी कह्यो श्रावक में पांच चारित्र नहीं ते लेखे साधु आवतो इम कहणी अने त्यागनी अपेक्षा देशचारित्र कहिये इम कहीने अड़वी मेटी । ❀

५२

गूजरमलजी सूं स्वामीजी चरचा करता पानों बांचन बोल कह्या । जद गूजरमलजी कह्या आप मोने अक्षर बताओ । जब स्वामीजी अक्षर बताय दिया अने बोल्या गूजरमलजी ! थांरे सम्यक्त्व रहणी कठिण है आमता कह्यो तिणसूं । लोक सुणने आश्चर्य थया । पछे अंतकाल गूजरमलजी बोल्या—केसूरामजी आदि भायां नें—स्वामीजी ओर तो भद्रा आचार चोखा परूप्या पिण नदी उतरयां धर्म या बात तो स्वामीजी पिण खोटी परूपी । भायां घणोइ कह्यो नदी उतरवारी आज्ञा सूत्रमें भगवान दीधी छै तिणसूं पाप नहीं । गूजरमलजी बोल्या : हीये बसै नहीं । जब लोक बोल्या भीखणजी स्वामी कह्यो थो थांरे सम्यक्त्व रहणी कठण है सो वचन आय मिल्यो ।

५३

पालीमें रात्रि वखाण कर्‌या पछे स्वामीजी तो बाजोट ऊपर बेठा । अने दो भाया दुकान हेठे ऊभा । चरचा करतां २ दोयांनेइ समझायने गुरु कराय दिया । इतरे पाछली रात्रि पडिक्कमणे री वेला थइ । भाया न कह्या ऊभो पडिक्कमणा करो । ❀

५४

करेड़े स्वामीजी पधारया । लोक कहै—भगजी स्वामी रा हेज घणा । स्वामीजी पूछ्यो काइ हेज ? जद लोक बोल्या नगजी गोचरी पधारया । कुत्ती घणी भूसे । घणोइ कह्यो—हट कुत्ती । साधानें मत भूस मत भूस पिण कह्या मानें नहीं । जद टांग पकड़नें परम धणण धणण फेंक दीधी । कुत्ती पाचरी ताव

गइ। अठै पछ फेर मूंसी नहीं। जद स्वामी बोल्या : कुनी पड़ी अठै आवगा पूँछी के नहीं ? जद ते गृहस्थ बोल्या : ये पूंछो आयनें। निकमा मूंषणा काढो। इसा मूर्ख गृहस्थ।

५५

पाली में मयारामजी गोचरी में आहार मगायो तिणसू आठ रोटी बधती स्यायो। स्वामीजी गिणी नें कह्यो आहार मंगावे अपरंत स्यावा। जब मयारामजी बोल्यो : अठै मेल यो अठै। जद स्वामीजी आठ रोटी काढ दीधी। मयारामजी सांथा नें थामी तिण कोइ छै नहीं। जब बाल्यो परठ देवारा भाव है। स्वामी बोल्या परठ में दूजो दिन विगै टालस्यो। जब क्रोध करनें अकबक बोलवा लाग गयो। कहै हूंतो इसा आचार्य रासूं नहीं। अकबक बोलयो। कहै नव पदार्थ में पांच जीव च्यार अजीव री श्रद्धा ही मूठी। एक जीव आठ अजीव है। जद स्वामीजी खिमाकर विरवामी आहार अमेर में बोल्या था थारे संका है तो चरचा करांला। इम कहि तण वेला इज ताबड़े में विहार कीधो। खमूण में सूत्र उत्तराध्येन थी सका मेट दीधी। प्रायश्चित दीधो। पछै वेणीरामजी स्वामी नें सूप दीधो। किवरायक दिनों में छूट गयो।

५६

स्वामीजी दिशा जाता एक साथे थयो। तेनें मीठा ऊपर चालतो देखी स्वामीजी बोल्या : थते चोले मारग मीठां ऊपर क्यूं हालो ? जद ते बोल्या म्हारो नाम सिखो तो हूं गाम में जाय कहिसूं भीखणजी मीठा ऊपर दिशा गया।

५७

रीयां पीपार बीचे एक मिल्यो। स्वामीजी ने पर्यंत सेमयो। थोड़ी वेलासूं पाछा पधार्या। जद हेम पूछै : स्वामीनाथ ! आपने कांइ बात पूछी। स्वामीजी बोल्या आलोवणा कीधी। वलि हेम पूछ्यो : कांइ आलोवणा कीधी ? जद स्वामीजी बोल्या : केहणो नहीं।

ज्यूं सावद्य दान में पूछ्यां कहै म्हारे मून है। रहस्य में पुण्य मिश्र दरसावै। समजू जाणें थारै पुण्य मिश्र री श्रद्धा छै। *

६२

पुन्य री श्रद्धा वाला मिश्र री श्रद्धा वाला चौड़ै तो पुन्य मिश्र न परूपै पिण मन में पुन्य मिश्र सर्धे। ते श्रद्धा ओळखायवा स्वामीजी दृष्टान्त दियो : किण ही स्त्री नें कहै—थारे धणी रो नाम पेमो है ? जब ते कहै क्यां नें हुवै पेमो। नाथू है ? क्यां ने हुवै नाथू। पाथू है क्यां ने हुवै पाथू ? धणी रो नाम आयां मून झाली रहै जद समझलो इण रै धणी रो नाम ओहीज है। ज्यूं सावद्य दान में पाप है इम पूछ्यां कहै क्यां ने हुवै पाप। मिश्र है ? क्यां ने हुवै मिश्र। पुण्य है ? जब मून रहै। जब समजू जाणें थारै पुण्य री श्रद्धा है। *

६३

थांमें कहै थानक थांरे अर्थे कीधो जब कहै म्हें कद कह्यो थानक म्हारे वासते कीजो। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टान्त दीयो ज्यूं डावड़ो कद कहै म्हारी सगाई कीजो, पिण सगाई कियां परणीजै कुण ? डावड़ो। वहु किण री बाजै ? डावड़ा री। घर किण रो मंडै ? डावड़ा रो। तिम थानक पिण आंरो इज बाजै। तेहिज मांहि रहै तेहिज राजी हुवै। *

६४

तथा श्रमाइ कर कहै म्हारे वासते सीरो करो ? पिण जीमें परहो। जद दूजी बार फेर करै। सीरा ना सूंस करै तो क्यां नें करै। ज्यूं ये कहै म्हें कद कह्यो थानक म्हारे वासते करो। पिण त्यां रे वासतै कीधां मांहे रहै परहा। जद दूजी बार फेर करै। थानक में रहिवारा त्याग करै तो क्यां ने करावै ? *

६५

केइ कहै म्हें जीव बचावां भीखणजी जीव बचावै नहीं। जद स्वामीजी बोल्या थांरा बचावणा रा तो मारणाइ छोड़ो। अंधारी रात्रि मं डिवाइ

जड़ो हो अनेक जीव मरे है। किवाड़ जड़वारा सूंस करो तो अनेक जीवां री दया पले। ज्यूं चाकीदार हो सो चाकी तो छोड़ दीधी ने चोरयां करवा लाग गया। लोकां ने कहै हूं चोकी देऊं छूं। सो आवता रा पइसा देवो। जद लोक बोल्या थारी चोकी दूर रही तूं चोरयां ही छोड़। तूं दिन रा हाट पर देख जाव ने रात्रि रा फरे चोरी करे। पइसा-पइसा पर बठान परहा दस्या। तूं चोरयां छोड़। ज्यूं ये कहै म्हैं जीव बचावां। स्वामीजी बोल्या थांरा बचावणा रह्या मारणा छोड़ो। ✽

६६

कई इम कहै—हिवड़ा पांचमो आरो छ सो पूरो साधपणो न पले। जद तिण न स्वामीजी कह्यो चोथा आरा में बेलो कितरा दिनां रो? जद ते कहै : तीन दिनां रो। स्वामीजी कह्यो एक मूंगड़ो खावै तो बेलो रहै के भागै? जद ते कहै—भागै। वलि स्वामीजी पूछ्यो पांचमां आरा में बेलो कितरा दिनां रो? जद त्यां कह्यो तीन दिनां रो। स्वामीजी पूछ्यो हिवड़ा एक मूंगड़ो खावै तो बेलो रहै के भागै? जद त्यां कह्यो—भागै। जद स्वामीजी बोल्या आरा र माथै क्यूं न्हाखो? एक मूंगड़ो खायां बेलो परहो भागै तो दोष री थाप सूं साधपणो किम रहसी? ✽

६७

कई कहै—ए दोष लगावै ताहि आपां दिखै तो आछा है। काचा पाणी ना म पीवै ज्यो न राखै। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टान्त दियो एक जणे तो तीन पखवासा किया। पारणा टक में छै छै रोटी खाधी। एक जणे बेला करने आधी आधी रोटी खाधी। यांमें भागल कुण ने साचा कुण? तपस्यारा भागल खोटा अने पखवासावाला साचा जाणै। ज्यूं गृहस्थ तिया ना चोखा पाले ते ना पखवासावाला सारीखा अने साधुपणो लहने दोष सेवे ते बेलामें रोटी खाधी ते सरिखो। ✽

६८

पालीमें साहजी बीकानेरया मूथा जद इद्रायन रुपियां धावक रे निमित्त बहिनिया। तिम रुपियां री जायगा ऊपर छापड़ा री लम्बक कीधी। आरंभ

थोड़ो। जद स्वामीजी नें किणही कह्यो इनमें काइ आरम्भ है ? विशेष आरम्भ नहीं। जद स्वामीजी कह्यो काइ जनमें जद पहिलो अंकूरो करे। अन्य पत्री बर्षफल ता पछे हुवे। ज्यूं ओ बालक अंकूरो जिम तो हुआ। पिण छोटा बाळकावाळो देखेला इण ऊपर चूना पड़तो दीसे है। पछे किताएक बर्षा पछे बालक ऊपर चूनो पड़यो जद ठकचन्द पोरवाळा कह्यो—भीषणजी कहिता थां इण बालक ऊपर चुनो पड़तो दीसे सो अबे पड़े। *

६९

आगळा नें समझावा दृष्टांत करड़ा दे जद किणही स्वामीजी नें कह्यो आप दृष्टांत करड़ा देवो। जद स्वामीजी कह्यो रोग तो गम्भीर रो कह्यो अने कहै म्हारे सुभाळो। पिण सुभाळ्या साता न हुवे। रूखवाणी रा डाम दियां साता हुवे। ज्यूं रोग तो मिथ्यात्व रूप करड़ो। ते करड़ा दृष्टांत सू हटे। *

७०

तिलोकचन्दजी नें चन्द्रभाणजी आचार्य पदवी रो लोभ देयनें फटायो। जद स्वामीजी कह्यो यांनें आचार्य पदवी आणी सो कठिन है नें सूरदास री पदवी तो आवे तो अटकाव नहीं। यांनें चन्द्रभाणजी ऊजाड़ में छोड़ता दीसे है। किताएक बर्षा पछे तिलोकचन्दजी नें निजर कमी रा नाम लेयनें चन्द्रभाणजी ऊजाड़ में छाड्यो। स्वामीजी रो वचन मिल्यो। *

७१

एक आऊ में जहर जन एक में नहीं। पिण समझणा हुवे ते संका मिट्या बिना दानू नहीं लावे। ज्यूं साध तथा असाध री संका मिट्या बिना वंदणा करे नहीं। *

७२

कइ सावद्यदान में पुण्य कहे। समजू हुवे ते किमत पछी करे। असंजती नें दियां पुण्य कहो छो तो थे असजती नें देवो के नहीं ? जद कहे म्हांनें तो दियां दोष लागे म्हांनें कल्पे नहीं। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो।

७५

कुसलो तिलोक सरदारसहर में चौमासो आया । जद सहर में आगे भीखणजी रा श्रावकां नै फरी । पछै भेखधारी साकड़ी करवा लागा—साधू न तीजा पहर नी गोचरी करणी । गाम में रहिणा नहिं । पछै स्वामीजी मिल्या आगे देखै तो पहलै पहर री गोचरी करै । जद स्वामीजी पूछ्यो थें तीजा पहर री गोचरी कहो । अनैं पहलै पहर किम करो । तब तिलोकजी बोल्या म्हैं तो धोवण पाणी रे वास्तै फिरां छां । स्वामीजी बोल्या धोवण पाणी रो दोष नहीं तो दोष रोटी ल्याया कांइ दोष ? जद बले बोल्या : साधू ने झाडू राखणो नहीं । साधू ने घी खाणो नहीं । साधू ने इसा बखेरा बखेरी अनमावणा है । स्वामीजी बोल्या । थे कहो छो साधू न झाडू राखणो नहीं तो देवकी रा पुत्रां झाडू बहिरया इम सूत्र में कह्या छै । जब ते बोल्या उवे तो मोटा पुरुष था । जब स्वामीजी बोल्या । मोटा पुरुष छै सो बडी लावे इम है । जद कुसलो बोल्या थुमै तेरापन्थी नाम दया उठाय दीधी सो थुम ने जगत में मोह कर देख्यो । स्वामीजी बोल्या : दो हजार आगे कहे है । जो घटता है तो दोय हजार पूरा हुआ । अनै दोय हजार पूरा है तो दोय वधता सही । पछै उठासूं सैणावे गया । स्वामीजी रा श्रावकां रे सेंका घाल वारो उपाय करवा लागा । जद श्रावक पिण वणांरै ठागारो उपाय करवा लागा । दोयां में एक जणो बेलै २ पारणो करै तिणने कह्यो थे तो तपस्या ठीक करो छो पिण दूजो ते तो करै नहीं । जद ते बाल्यो क्रोधपणो छूटो तप छै । अनै ए क्रोधी छै । जद श्रावकां तिणने कह्यो उवे तो थाने क्रोधी कहै । तब ते बोल्यो ओ तपस्या करै पिण क्रोधी छै । जद दूजाने कह्यो थाने ओ क्रोधी बतावै छै । जद दोनूं भेला होय झगड़वा लागा जद लोक बोल्या

जोड़ी तो जुगती मिली । कुशलो नै तिलोक ।
उथापे ते थापे । किण विध जासी मोक्ष ॥

पछै फीटा पड़ने चाल्या गया ।

७६

पाबोस टोला मांहो मांही लवे बणान मूठा कहै लवे बणानै मूठा कहै। जद स्वामीजी बोल्या : कहिणी रे लेखे दोनू साचा है। लवे ही मूठा है। अनै लवे ही मूठा है। इण लेखे दोनू साच बोलै है। ❀

७७

पाबू में एक साधे कह्यो हेमजी स्वामी री पछेवड़ी मोटी दीसै। जद स्वामीजी अम्बपणे चोड़पणे माप दिखाइ। वनमान नीकली। पछै स्वामीजी तिणनें निषेध्यो घणो। कह्यो थ्यार आगुल रा फरकारै वासतै म्हारो साध पणो मैं गमावां इसा म्हानें मोला जाण्या ? इसरी थानें प्रतीत नहीं तो रसता में काचो पाणी पीवै तो थानें काइ खबर इत्यादि घणो निषेधो। जब ते हाथ जोड़नै बोल्यो म्हारे मूठी सका पड़ी। ❀

७८

टोला में थकां रुपनाथजी सायै स्वामीजी गोचरी ऊठ्या। एक सायो घरलो छोड़ने तिण रा हाथ सूं आहार वहिरयो। आगै रुपनाथजी बोल्या : भीखणजी। सका पड़ी ? जद स्वामीजी बोल्या साक्षात् असूझतो ईज वहिरयो। इणमें फेर सका काइ ? जद रुपनाथजी बोल्या भीखणजी। दृष्टी ऊजी राखजी। आगै थां सरिखो एक नवो चेलो गुरां सायै गोचरी में असूझतो लेता गुरां नें वरज्या जद गुरां ते आहार म लीयो। पछै एकदा विहार करतां उजाड़ में तृषा घणी लागी। गुरां नें कहै मोनें तृषा घणी लागी गुरां कह्यो साधू रो मारग है सेंठाइ राखो। पिण चेले तृषा मरतै काचो पाणी पीयो। मोटो प्रायश्चित्त आयो। महि तरता थोड़ा मेंइ गुरतो। जद स्वामीजी जाण्यो थानें इसो इ दरसै। ❀

७९

वेइ इम कहै हिवड़ा पांचमो आरो है। पूरो साधोपणो पलै नहीं। जद स्वामीजी बोल्या सहरमांहे तो साहूकार र मायै अनें दिवल्या रे मायै सरिखा मंडे। पणो मोलगी तिवारे तुरत देसी। कबर करण पावे नहीं।

आकरा दीपता देख्या। पिण साहूकार दीवाल्या री खबर तो मांग्यां पड़े। साहूकार तो ब्याज सहित देवै अनें दिवाल्यो मूळ ही में खोटो पाड़े। ज्यूं भगवंते सूत्र भाख्या तिम प्रमाणे पाळे ते साधू अनें पांचमो आरा नों नाम लेइ सूत्र प्रमाणे न पाळे ते असाध। ✱

८०

वैद किण ही री आंख्यां री कारी कीधी। आंख ठीक हुवां वैद बधाई मांगे। जद कह्यो पंचां ने पूछसूं। पंच कहसी सूझतो हुवो तो बधाई देसूं। जद वैद बोल्या तो ने कांई दीसे है? जद कह्यो पण कहसी सूझतो हुवो तो देसूं। जद वैद जाण्यो बधाई जाय चूकी। ज्यूं कोइ रे श्रद्धा वेसाणी ने कह्यो हिवे तूं गुरु कर। तब ते कहै दोय च्यार जणांने पूछसूं तथा आगला गुरु ने पूछसूं। ते कहसी तो गुरु करसूं। जब जाणनी इणरे श्रद्धा पकी बैठी नहीं। ✱

८१

कोइ ने ओळखने साची श्रद्धा दीधी। गुरू कीधा। पिण इणां रो परचो छूटे नहीं। बार बार आवे। जद स्वामीजी पूछ्यो थारो परचो क्यूं राखे? जद ते बोल्यो म्हारे आगलो सनेह है। जद स्वामीजी बोल्या किण ही ने मेरा पकड़ ले गया। केरो कोस दीधो। फाटका पिण दीधा। पछे घर रा मेहनत कर छुड़ा ल्याया। केतलायेक काळे मेळा में मेळा थया। आळखने मेरा सूं मिल्यो। लोकां पूछ्यो थारे कांइ सैंदव? जद बोल्यो म्हारे माइजी रा हाथ रा फाटका लागा है सहनाणी है। आ माइजी रा हाथ री सहनाणी है। जद लोकां जाण्यो ओ पूरो मूरख है। ज्यूं ओ कुगुरां रे जोग सूं तो खोटा मत में पड़ यो हो। तिण ने उत्तम पुरुषां चोखो मारग पमायो। हमें ते वळी कुगुरां सूं हेत राखे तो बड़ो मूरख। ✱

८२

सरियारी में स्वामीजी चोमासो कीधो। तिहां कपूरजी पोतीया बंध हुंतो अनें पोत्याबंध री श्रद्धा पिण हुंती। संवत्सरी आया कपूरजी कह्यो भीखणजी! आपां सूं बोलाचाली हुई सो खमावानें आयो छूं। स्वामीजी

मानी तिण सू । जद स्वामीजी बोल्या आज तो पाछा पाछो तिण आज पछे इसी विणती कीज्यो मति ।

८७ :

केलवामें परपदा बेठां ठाकर मोहबत सींहजी पूछ्यो । आपनें गाम-गाम विणतीयां आवै । घणा लोग छुगाइ आपनें चावै । नरनारी आपनें देखने राजी घणां हुवै । भाई मायांने आप बहुत घणां लागो । सो कांइ कारण ? आप में इसो कांइ गुण ? जद स्वामीजी बोल्या कोइ साहूकार परदेश थो । तिण घरे कासीद मेल्यो । कागदी मेली । सेठाणी कासीद नें देखनें राजी घणी हुइ । उनरा पाणी सू उनरा पग धोवाया । आछी तरह भोजन करनें जीमावे । कनै बेठी समाचार पूछे । साहजी दीलां में कीसायक है ? सुखसाता है ? साहजी कठे पोढे है ? कठे बेसे है ? कासीद जिम जिम समाचार कहै तिम तिम सुणने घणी राजी हुवै । तिण कासीद नें देखने राजी हुवा रो कारण धणी रा समाचार कहै तिण सू । तिम म्है भगवान रा गुण बतावां छां । संसार मोक्ष रो मार्ग बतावां छां । तिण कारण लोग छुगाइ म्हासू राजी हुवे छै ।

८८

पछे केलवा में ठाकरां पूछा कीधी । आप आगामिक तथा गया काळ ना लेखा बतावो छो सो किम देख्या है ? जब स्वामीजी बोल्या : थांरा बाप दादा पड़ दादा आदि पीढ़ियां रा नाम तथा थांरी पूराणी वातां जाणो हो सो किम देखी है ? जब ठाकर बोल्या भाटां री पोथ्यां में बड़ेरां रा नाम मांरवा मडी है तिण सुं जाणां हां । जद स्वामीजी बोल्या भाटां रे झूठ बोलण रा सूंस नहीं । थांरा लिख्या पिण थे साचा जाणो हो तो ज्ञानी पुरषां रा भाख्या शास्त्र झूठा किम हुवै ? ज्यो तो साचा ही है । इम सुणनें ठाकर घणां राजी हुवा भला जाब दीधा ।

८९

ढुंढार में एक गाम में स्वामीजी पधार्या, जद ठाकर रूपैयो रा टका पगां में मेल्या । जद स्वामीजी बोल्या म्है तो टका पइसा कांइ रखां नहीं ।

जद ठाकर बोल्या आप मोहोर लायक हो पिण म्हारी मोहच इतरीज है। अबके पधारस्यो जद रुपायो निजर करसूं। जद स्वामीजी बोल्या म्हे तो रुपयो मोहर आदि कोइ न राखां। इम सुणनें ठाकर घणो राजी हुवो। गुणग्राम करवा लागो—आपरी करणी मोटी है। ❀

९०

पुर में स्वामीजी कनै गुलाब ऋषि होय आणा सूं ——— रा श्रावक घणां साथे लेइने चरचा करवा आयो। ——— रा श्रावक रूपा अबला बाजै। जद स्वामीजी बोल्या होली में राव बणाय साथे गहरीया तमासा रूप हुवै। ज्यूं थें थाने तो राव बणाया नें थें गहरीया ज्यूं बणीया दीसो हो। पिण ज्ञान री बात तो काइ दीसे नहीं। हिवै स्वामीजी गुलाब ऋषि नें पूछ्यो शीतलजी रा टोला रा साधां नें साध सरधो के असाध? जद ते बोल्यो असाध सरधूं छूं। शीतलजी रा साध संथारो करे त्यांने कांइ सरधो? जद बोल्यो बाला रा अकाम मरण। रघुनाथजी जयमलजी आदि टोला वाला नें कांइ सरधो? जद बोल्यो असाध। बणांरा टोला में संथारो करै जद? बोल्यो अकाम मरण। ❀

पछै ——— रा श्रावक बोल्या भीखणजी नें कांइ सरधो। तब स्वामीजी पहिला ही बोल्या म्हैं तो थांनें आगे देख्याइ नहीं अनै म्हारे थारै म्हा आपार मिल जासी तो आहार पाणी भेलो कर लेवा रा अटकाव नहीं। विचारै बणांरा श्रावक क्रियावक विखर गया। हिवै गुलाब ऋषि नें स्वामीजी पूछ्यो समदृष्टि नें पाप लागे के नहीं लागे? जब ते बोल्यो न लागे। स्वामीजी पूछ्यो समदृष्टि स्त्री सेवै तो? जद बोल्यो— पाप तो न लागै पिण भेष में सामै नहीं। स्वामीजी बोल्या मार्ग पाविया चाषम सेवै तो? इत्यादिक अनेक प्रश्न पूछ्या जद पाछा जाब देवा असमर्थ थयो घणो कष्ट हुवो। जद कोप कर बोल्या म्हांसूं चरचा करो हो पिण गोगूंदा रे भाया सूं चरचा करो तो खबर पड़ै। गोगूंदा ना भायां तैंगिया नगरी ना श्रावक छै। गोगूंदा ना श्रावक अकवरी मोहर छै। जद स्वामीजी बोल्या थारे थारे सीरा लेत्र

हुवै सो बतावो। गुलाब ऋषि बत्तीस सूत्र हाथे लिया फिरतो पिण सरधा खोटी। बळी पंच महाव्रत नां द्रव्य क्षेत्र काळ भाव पूछया। जद बोल्यो पानां में मड्या है। स्वामीजी बोल्या : पानो फाट जासी तो ? साधापणो वे पासो हो के पानो पाछे ? इत्यादिक घणो कष्ट कीधो। पछै स्वामीजी गोगुंदे पधारया। गोगूंदे रै भायां सूं चरचा करनें समझाया। सुणनें गुलाब ऋषि आयो। स्वामीजी सूं चरचा करवा लागो। जद भाया बोल्या महाराज थांसूं चरचा म्हैं करस्यां। म्हारा आगला गुरु है। पछे भायां गुलाब ऋषि सूं चरचा करनें घणों कष्ट कीधो। जद हाथ करनें बोल्यो गोगूंदा नां भाया ठीकरी रा रुपिया छे। घणों फीटो पड़ने पाछो गयो। पछै गोगूंदा रा भाया स्वामीजीनें अठारै सो बाइस पानां री भगवती बैराइ। वनें पन्नवणा। सूत्र बहरायो। ❁

९१

पाळी में संतिविजय संवेगी रुघनाथजी सू चरचा कीधी। जिण ही साधां नें मिस्री रे भेळो सूत्र वहिरायो। संतिविजय तो कई फाड नाखो पात्रे लाय पड्या तिण कारण वनें रुघनाथजी कई घणीनें भूलावणो बबवा परठ देणीं। माहाज नें साइगार थाप्यो। ते पिण बोल्या फाड नाखो। पछे रुघनाथजी आचारंग काढ्या। जद संतिविजय रुघनाथजी कन सूं पानो खोसनें फाड़ न्हाख्यो। घणा लोग लुगायां सुणतां कष्ट कीधो। जद संवेगियां री बायां गावा लागी— ❁

ज्ञानी गुर जीता रे जीता सूत्र रे प्रताप ज्ञानी गुर जीता रे।

जद रुघनाथजी घणा उदास हुवा। पछे श्रावकां नें कह्या इणन कीधे जिसा तो भोलण है। म्हे बाइसटोळा साधां स्थानक मूठा पाड़ै है ता भा तो साक्षात साधा रो रुगइया है सो इणन रा हठावणो सारो है। जद सारा श्रावक स्वामीजी रा श्रावकां न कहिवा लागा थांरा गुरु मेवाड़ में है सो चिमलो भेजनें बोलावो। पछे स्वामीजी पिण मेवाड़ सूं मारवाड़ पधारया। पाळी में थांरा श्रावक स्वामीजी न कहिवा लागा पूजजी कहो है— संतिविजय में चरचा करनें हठावो। संतिविजय ढ भा घणो बोळे। ढूंढीयांरे

मूँढे में आंगुली घाली पिण दांत देख्यो नथी। एक मीखन काढियो रह्यो है। इसो ऊ भो बोले। पछे स्वामीजी विचरता विचरता काफरला पधारया। सतिविजय पिण पीपार नां घणा श्रावकां सूँ देवल नी प्रतिष्ठा हुवे त्यां आयो। *

सतिविजय नें घणा लोक कहै भीखणजी सूँ चरचा करणी। एकदा कुँमारां रे बास में मारग बहता साह्मा मिल्या। स्वामीजी नें पूछ्यो थांहरा नाम कांइ ? स्वामीजी बोल्या म्हारो नाम भीखण। सतिविजय बोल्यो थे तेरापथी भीखणजी ते तुम्हें ? जद स्वामी बोल्या हां थे इम। जद सतिविजय बोल्यो तुमारे सूँ निक्षेपां नीं चरचा करणी छै। स्वामीजी बोल्या निक्षेपा किता ? ते बोल्यो निक्षेप। च्यार—नाम १, स्थापना २, द्रव्य ३ भाव ४। स्वामीजी पूछ्यो यां च्यारां में वंदना भक्ति किसानी करणी ? सतिविजय बोल्यो च्यारू ही निक्षेपा नीं वंदना भक्ति करणी। स्वामीजी बोल्या: एक भाव निक्षेपा नो म्हे पिण वांदा पूजा हां। बाकी तीन निक्षेपा नी चरचा रही। तिणमें प्रथम नाम निक्षेपा। किणही कुम्भार नो नाम भगवान दियो। तिणनें थे वांदो के नहीं ? जद ते बोल्यो तिणनें सूँ वांदीये ? प्रभुना गुण नथी। स्वामीजी बोल्या गुण बाहाम नों गेहूं थांरा ग्रा। इम गुण भाव देवा असमर्थ थयो। हिवे स्थापना री चरचा स्वामीजी पूछी। रतनारी प्रतिमा हुवे तो वांदो के नहीं ? ते बोल्यो वांदा सोना री चांदी रूपा री तथा सब धात री हुवे तो वांदा। पाषाण री हुवे तो वांदो के नहीं ? तब ते बोल्यो वांदा। वली स्वामीजी पूछ्यो गोबर नी हुवे तो ? सतिविजय क्रोध करनें बोल्यो तुम सूँ निक्षेपा नी चरचा करवी नहीं। तू तो प्रभु नी आसातना करे। अम्हन गमें नहीं। इम कही चालता रह्या। स्वामीजी पिण ठिकाणे आया। पछे सतिविजय न लोकां कह्यो भीखणजी सूँ चरचा करो। इम बार-बार कहिया थी सति विजय घणा लोकां सहित आसर दश हाटरे आय बैठो। हिवे स्वामीजी न लोकां आय कह्यो सतिविजयजी चरचा करवा आया है। सो आप पिण पधारो। जद स्वामीजी बोल्या म्हारा भाव तो अठे इज छ। सति विजयजी इतरी दूर आया है चरचा करवा रो मन हुसी इतरी र आर

आ जावेला। जद लोकां गली शांतिविजय नैं जाय कह्यो। आप चालो। इम कहिनें एक हाट रे आगले ल्याय बेसाण्यो। बोल्यो: अठा सूं तो नहीं सरकीस। पछै लोकां स्वामीजी नैं आय कह्यो अबे तो आप ही पधारो। जद स्वामीजी अनें भारमलजी स्वामी पधार्या। हिवै चरचा मांडी। स्वामीजी बोल्या चरचा आचारांग आदि इग्यारा अंग सूत्रां री करणी। आचारांग सूत्र में एहवो कह्यो छै *

सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता हंतव्वा—सर्व प्राण भूत जीव सत्व हणवा। एत्थं पि जाणह नत्थित्थ दोसो—इहां धर्मनें कार्ये जीवहत्या दोष नहीं। अणारिय वयणमेयं—ए अनार्य नो वचन छै।

एह पाठ स्वामीजी बतायो। जद शांतिविजय बोल्यो इणमें खोट है। ल्यावरे बेला आपांरी पडत पोथी खोलेनें देख ल्यो। तिण में पिण इम हीज नीकल्यो। तिवारे स्वामीजी बोल्या बांचो। जद परषदा में बांचे नहीं। हाथ धूजवा लागो। तिवारे स्वामीजी बोल्या थांरो हाथ क्यूं धूजै? हाथ तो ४ प्रकारे धूजै—एक तो कंपण वाय सूं। के क्रोध रे वस हाथ धूजै। अथवा चरचा में हार्यां हाथ धूजै। के मैथुन रे वशीभूत। जद क्रोध रे वस बोलियो—साला रो माथो छेदिये। जद स्वामीजी बोल्या: म्हारे जगत् में स्त्रियां ते मा बहिन समान है। अनें थारे घर में कोइ स्त्री हुवै ते म्हारे बहिन। इण लेखे सालो कह्यो हुवै तो जाण्या। पिण घर में स्त्री नहीं हुवै अनें मानें सालो कह्या तो झूठ लागे। अनें मैं साधपणो लियो जद छ काय हणवारा त्याग किया सो मानें साध तो म सरधो पिण त्रसकाय में तो हूं। माथो छेदवारो कह्या सो थोनें हणवारो कांइ आगार राख्यो। इम घुण घणो कष्ट हुवो। पछै मोतीरामजी चापरी कह्यो: ठा परहो म्हानें लजावो। एहवा धर्मावंत साधू छै अनें थे अरब विरख चालो। इम कही हाथ पकड़ उठाय ले गया। पछै स्वामीजी ने शांतिविजय पीपार आया जब लोकां जाण्यो अबै चरचा हुसी। स्वामीजी गोचरी जावे जठे रा श्रावक कहै—पूजजी कह्या है शांतिविजय सूं चरचा मत करो। जद स्वामीजी बोल्या उवे करसी तो करवारा

भाव छे। पछै सरूपजी मूंहतो संति विजय ने आय कह्यो। × × × ×
भीखणजी आई है सो चरचा करो। × × पिण संती विजय तो
फेर स्वामीजी सूं चरचा करी नहीं। स्वामीजी मास खमण रही विहार
कीधो। विहार करतां संतिविजय रे उपाश्रय कने हुआ रह्या तो पिण
बोल्यो नहीं। फेर एकदा पाली में संति विजय सू चरचा हुई। भिखू रे
पगे दूःण आयां संतिविजय कहै पाप्रै आय पड़यो तिण सूं आय आणों।
जद स्वामीजी बोल्या : गुरु रे वरसे किण ही अमल वहिरायो, भिखू रे
वरसे सोमस्कार वहिरायो हे पिण थारे लेखे आय आणा पाप्रै आय
पड़यो तिण कारण। अब घणों कष्ट हुवो शुद्ध जाब देवा असमर्थ। ❀

१२

पीपार नों वासी चोथजी बोहरो पाली में दुकान मांडी। चोमासो
उतर्यां स्वामीजी तिण रो कपड़ो लेवा गया। दोय वासती वहिराय
पूछा कीधी—हूं थानें असाध सरधूं। थानें वासती दीधी मोनें काइ हुवो ?
जद स्वामीजी बोल्या किण ही लायी तो भिखी नें आण्यो जहर तो ऊ
मरे के न मरे ? जद ऊ बोल्यो न मरे। ज्यूंरो गुण मारवारो नहीं। तिम
म्हे साध। म्हानें तुमें असाध जाण में वहिरायो तो थारे जाणपणां री
खामी, पिण साधां नें वहिरायां धर्म छै। ❀

१३

स्वामीजी अमरसींगजी रे स्थानक गया। मांहि लेवड़ी नो रूप देखी
स्वामीजी बोल्या : रात्री में लघु परठता दुख्यो जद इणरी दया किम रहै ?
जद त्यांरो साधु स्वामीजी री छूट पाड़ने बोल्यो। जद स्वामीजी बोल्या :
आ छूट काइया री बांधणी थारे ममत्व इसीक्या के गुरा दीधी ? जद अमर
सींगजी पेला में [illegible]। स्वामीजी नें बोल्या ओ तो मूरख छै ये समझै
काइ आवरयो नहीं। ❀

९४

गुमानजी रो बेटो रतनजी बोल्यो हूँ भीखणजी सूँ चरचा करूं। जद गुमानजी बोल्या म्हैं पिण भीखणजी सूँ चरचा करतां संका था। सो थारी कांइ आसंग? जद रतनजी पूछ्यो—क्यूं संका? जद गुमानजी बोल्या भीखणजी सूँ चरचा करतां तिणरो बाथ पकड़ ऊपरी बोड़कर गृहस्थ ने सीखायने गाम २ में खराबी कर देवै। तिण कारण भीखणजी सूँ चरचा करतां संका।

९५

पाली में स्वामीजी चोमासो कीधो जद बाबेचा हाटरा धणी नें कह्यो थोनें भाड़ो घातूं हाट म्हांनै दे। जद हाट रो धणी बोल्यो अबारू तो स्वामीजी उतर्‍या है सो आखी पड़ी रुपियां सूं जद देवो तो ही न दूं। स्वामीजी विहार कियां पछै मसाइ कीन्यो। पछै बाबेचा जेठमलजी हाकम कनैं जाय कूंचीयां न्हाखी। कह्यो—कै तो भीखणजी रहसी कै म्हे रहस्यां। जद हाकम बोल्यो इसो अन्याय तो म्हे नहीं करां। बसती में वेस्या कसाई पिण रहै त्यां नें पिण न काढां। तो भीखणजी नें किम काढां। हाकम दृष्टान्त दियो—विजयसिंहजी रो राज है मोची बाजवियो। तिणरे खाल पकड़ तिण सूँ खली बाजवियो बाजतो। ते खूण केता मारवाड़ आवतो। अर जाटां रा खेत भेळे। जद जाटां विजयसिंहजी कनै पुकार करी। राजाजी बाजविये नें कह्यो—जाटां रा खेत भेळो मती। जद मोची बोल्यो: म्हे तो आवसूं अर यूं ही होसी। राजाजी कह्यो यूं ही होवै तो म्हारे देश में आवो मती। म्हारे कूण है तो दूजा बाजविया घणाइ आवसी। अन्याय तो करवा देवां नहीं। तिम हिज जेठमलजी कह्यो थे—ज्यारो तो आर व्यापारी आण बसाता पिण साधां नें काढां इसो अन्याय म्हे करां नहीं। जद बाबेचा कूंचियां लेइ आप आपरे घर गया। ओर कांइ उपाय नहीं मिल्यो। जब ब्राह्मणां नें कह्यो : थांनें दान देवां तिणमें भीखणजी पाप कहेछै। सो म्हे तो अब दान देवां नहीं। जद ब्राह्मणां स्वामीजीनें आय कह्यो म्हांने दियां आप पाप कहो सो बाबेचा म्हांने देवे

नहीं। जद स्वामीजी कह्यो यांने बावेचा पांच रुपइया देवे तो पिण म्हारे मां कहिवारा त्याग है। जद ब्राह्मण बावेचा नें जाय कह्यो बापूजी पांच रुपइया रो हुक्म कियो है। इम सुण बावेचा घणां फीटा पड़्या। तो पिण स्वामीजी रात्रि में बखाण वांचे जठे बावेचा ढोलक बजावे। गावे। बखाण में विघ्न पाड़े। जद भार्यां कह्यो महाराज। दूजी जायगां उतरो स्वामीजी बोल्या लेवसीजी मत दिविख है सो देखां परीषह समभाव किसायक सैंठा है। किसायक दिना वेदो कियो पछे बावेचा लावर गया। पजूषणां में ईर्ष्याज कारयो। स्वामीजी रा मूंढा आगे घणी वेलां ऊभा रही गावे बजावे बाम करे। जद केइ श्रावक बावेचा सूं वेदो करवा लागा जद स्वामीजी कह्यो वेदो मत करो। याने रोका मति कारण ए प्रतिमा नें भगवान न माने है मा के तो भगवान करे करे अने के भगवान रा साधां करे करे। जद बावचा बोल्या एतो समी समी विचारे। इम कही बावता रह्या। ॥

९६

नाड़ाबाड़ रो सामाचन्द सेवग तिणन बावेचा कह्यो भीखणजी लेरवे है सो सारी अवगणवाद विघर जाइ। सतरे प्रकार री पूजा रखे है तिण मांही सैं तोने दरा बीरा रुपया देस्यां। जद सामाचन्द बोल्यो : भीखणजी सूं बात करने पछे विघर जोड़सूं। इम कही लेरवे आयो। स्वामीजी नें वंदना कीधी। स्वामीजी बोल्या थारो नाम सोमाचन्द ? जद ते बोल्यो हां महाराज। वली स्वामीजी पूछ्यो तूं रोड़ीदास सेवग रा बेटो ? ते बोल्या हां महाराज। पछे सोमाचन्द बोल्यो आप भगवान नें उत्थापा हो ए बात आछी न कीधी। जद स्वामी बोल्या म्हे सो भगवान रा वचनां सूं घर छोड़ साधपणो लियो सो म्हे भगवान नें क्यांने उथापां। वले सोमाचन्द बोल्यो आप देहरो उथापो। जद स्वामीजी बोल्या देवल रो तो हजारां मण पत्थर हुवे। म्हे तो सेर टाय सेरइ क्याने उथापां। जद ते बोल्या आप प्रतिमा उथापी प्रतिमा नें पत्थर कहा। जद स्वामीजी बोल्या म्हे तो प्रतिमा नें क्यां नें उथापां। म्हारे मूंठ पालवा रा सूंस है। सो मैं तो सोना री प्रतिमा में सोना री रूपा री में रूपा री सबधात री प्रतिमा में सबधात री कहां। पाषाण री प्रतिमा न

पाषाण री कहो। इम सुण सोमाचन्द मनो हरख्यो। ओ तो इसा पुरुषां रा हूं अवगुण किम बोलूं। इसा पुरुषां रा तो गुण करणा चाहिजै। इम विचार तोय छद जोड़या। स्वामीजी नें सुणाय वदना कर पाछो आयो। बाबेचा पूछयो अब जोड़या के? सोमाचन्द बोल्यो हां जोड्या। बस इम सुण तब सेवग में साथे लेइ स्वामीजी रा श्रावकां कने जाय बोल्या : ओ सोमाचन्द सेवग निरापेक्षी है। भीखणजी नें आणे जिसा कहसी। जद भाइ भीखनजी किसायक है। जद सोमाचन्द बोल्यो : कांइ कहिवासो थांरी मह्या त्यांनें आपारी मह्या आपां कनै है। तो पिण बाबेचां मनि सही बोल्या : हूं कह। पछै सोमाचन्द बोल्यो भीषणजी में गुण अवगुण मौनें दरसै जिसा कहसूं। जद बाबेचा फेर बोल्या : तो नें दरसे जिसाइ कहै। जद सोमाचन्द छंद जोड़्या तिका कहिवा लागो।

छन्द

अनमय कथणी रहिणी करणी अति आठूंइ कर्म जीपे अधिकारी।
गुणवंत अनंत सिद्धंत कला गुण प्राक्रम पौंहोच मिथ्या पुण मारी।
शास्त्र सार बतीस जाणे सहु केवल ज्ञानी का गुण उपकारी।
पंचइंद्री कं जीत न मानत पासंड साध मुनिंद बड़ा सतधारी।
साधवा मुक्तिका वास बन्दा सहु भिक्खम स्वाम सिद्धंत है भारी।
स्वामी पर भाव के साधन साध है बाचें है सूत्रकला विस्तारी।
तेरा ही पंथ साचा त्रिहुं लोक में नाग सुरेन्द्र नमें नरनारी।
सुणि बात है साच सिद्धंतसु ज्ञान की बोहत गुणी करणी बलिहारी।
पृथ्वी के तारक पंचमें आरमें भीखण स्वामी का मारग भारी॥२॥

इम सुण बाबेचा तो सरक गया। अनें स्वामीजी रा श्रावक राजी होय बीस पच्चीस रुपइया आसरे दिया।

९७

स्वामीजी कनें देहरापंथी आयनें बोल्या थानें नदी उतरयां में धर्म है तो म्है फूल चढ़ावां तिणमें पिण धर्म। जद स्वामीजी बोल्या एक कानी नदी कहियां तांइ अनें एक कानी गोडा सुधी। एक कानी सुकी तो म्है सुकी

म्हारी। पिण घणा पाणीवाली २१४ कोस री अवकाई सु इ टके तो टालां। अने थें फूल चढावो सो एक तो सूका फूल पड़्या है। एक २१३ दिनारा कुमलाया फूल है। एक काची कलियां है थ किसा चढावो? जद थे बोल्या म्हें तो काची कलियां नहीं सूं चूटी चूंटी चढावां। जद स्वामीजी बोल्या थारा परिणाम तो जीव मारवा रा अने म्हारा परिणाम दया पालवा रा। इण न्याय मही ऊपरे फूलां रो दृष्टान्त न मिले।　　　　　　　　*

९८

किणही पूछ्यो भीखणजी थ थार टोला बाला न असाध सरधा तो थानै रुघनाथजी रा साध, ए जैमलजी रा साध यूं क्यूं कहो। जद स्वामीजी बोल्या कोइरै किरियावर थयो गाम मं नहता देरे। जद कोई अमकड़ीया रै नैहतो खेमासाह रे घर रो। अमकड़िया रै नेहतो धर्मासाह रा घर रा। अने त्यां दिवालो काढ्या हुवे तोहो माह बाजे। ज्यू साधुपणो न पाले अने साधु रो नाम धरावे ता ते द्रव्य निक्षेपा रे लखे साधु बाजे।　　　　*

९९

किणही पूछ्या घणा टोला है ज्यां में साध कुण अने असाध कुण? जद स्वामीजी बोल्या कोइन आंख्यां म सूझे तिण पूछ्यो सहर में मारग किना अने दकियाकिता? जद बद बोल्यो आंख्यां में औषध पाछ मे सूझता ता ह कर देऊं अने मारग दकिया तू देखले। ज्यू आखसूत्रणा ता म्हे बताय द्यां नै साध असाध तू परखले। पहिलां नामलेइ असाध कहां आगलो कजियो करे। तिणसू ज्ञान तो म्हे बताय द्यां पछे किमन तू करले।　　　　　　　　*

१००

वलि किणही पूछ्या यांमें साध कुण अने असाध कुण? जद स्वामीजी बोल्या किणही पूछ्या सहर मं साहुकार कुण दिवाल्या कुण? देणने पाछा देवे ता साहुकार। देणने पाछा म दवे मांग्यां झगड़ा करे त दिवाल्यो। ज्यू पांच महाव्रत लेणने चोखा पाले ते साध अने न पाले ते असाध।　*

१०१

कोइ बोल्यो अणुकम्पा आपनें काचोपाणी पायां पुन्य है कारण म्हारा जीव बचाबारा परिणाम चोखा है। पाणी रा जीव हणवारा भाव नहीं। जद स्वामीजी बोल्या कोइ कटारी सूं किणही ने मारवा लागो। जद ते बोल्यो मौनें मार मती। जद ते आदमी बोल्यो म्हारा तोने मारवा रा भाव नहीं। हूं तो कटारी नीं कीमत करूं छूं। आ कटारी किसियक बहणी छै। जद ते बोल्यो थारी थारी कीमत म्हारी तो ज्यान जावै छै। ज्यूं जीव बचायां परीणाम चोखा कहै त्यांरी मद्धा खोटी।

१०२

रे ठिकाणें स्वामीजी पूछ्यो थें कितरी मूरत्यां हो। जद ज्यां कह्यो गंई इतरी मूरत्यां छां। स्वामीजी ठिकाणे पधारयां पछै ज्यां ने किणही कह्यो थाने तो भीखणजी भगत कीधा। जद ऊ स्वामीजी कनें आय पूछ्यो थे कितरी मूरत्यां हो। जद स्वामीजी बोल्या ऊ तो अवसर ज्य बेठा इण थो मैं तो इतरा साध छां।

१०३ :

स्वामीजी घर में थकां दिशां गया। तिहां सांवत रा महाजना रो साथ थयो। पाछा आया जद ते तो छोटियां ने बार-बार मांजै काचो पाणी सूं घणो धोवै। जने बोल्यो भीखणजी थेइ मांजो। जद स्वामीजी बोल्या हूं तो छोटिया में न गयो हूं तो दिशां दूर गयो। जद ऊ बोल्यो हूं किस्यो छोटिया में गयो। जद स्वामीजी बोल्या तो इतरो क्यूं मांजो। ते बोल्यो : छोन्यिो कनै हुंतो। स्वामीजी बोल्या थारो मूंडो माथो पिण कनें हुंतो इण ने रगड़ो कै नहीं ?

१०४

कई भीखणजी घर में थकां माई माई न्यारा हुवा जद ऊ रास में धाड़ थाळी मांग न आयो आय कीधी। जिणरा प्रश्न हेमजी स्वामी

पूछ्यो। घर में थका चाकी मांगी कहै सो बात साची के झूठी। जद स्वामीजी बोल्या इसा म्हे भोळा नहीं सो पहिलाइ रुपीया रा पूण करां। म्हे तो आ काम नहीं कियो। अनैं रुघनाथजी रा गुरु भूधरजी तो घर में थका ऊंट रीस मार्यो। तरवार लेइ आवतां थाइ आइ। जद जाण्यो कपड़ो इ लेजासी अनैं ऊंट इ लेजासी। इम विचार तरवार सूं ऊंटनी ग्रीवा काटी मार न्हाख्यो। गृहस्थपणां री कांइ बात? चाकी भई ता घर में छतां चाकी मांगी नहीं। ❀

१०५

स्वामीजी घर में छतां सासरे जीमवा गया। लुगायां गाल्यां गावा लागी। ओ कुण काळोजी कायरो इम गावै। जद स्वामीजी बोल्या थें लाडा आंधा नें तो चोखा बतावो अनै मानें ऊपी बोळा। स्वामीजी रो साळो लोड़ा हुंतो तिणसूं स्वामीजी कह्या थें खोटाने तो चोखा कहो अनें चोखानें खोटा कहा। इम कही बिना जिम्यां भूखाइ उठ गया। घर में थका झूठ नी चिड़ हुंती सो झूठ न सुहावतो।

१०६

घर में छतां कटालिया में कोइ रो गहणा चोर ले गया। जद चोर नहीं मूं आंधा कुम्भार ने बालायो। कुम्भार रे डील में देवता आवतो तिणस लेहने गहणा बताबा बुलायो। कुम्भार स्वामीजी न पूछ्यो भीखणजी अठै किम रो भम धरे। जद स्वामीजी इम रा ठागो उपाइ करवा कह्यो भम तो मजन्या रा घरे है। दिवे रात्रि आंप कुम्भार देवता डील अणायो। घणा लाक देखतां हाका करै। म्हारे र ?। जद लोक बोल्या नाम बतावा। जद बाल्या ओ मो आ—मझ पा र मजन्या गहणा मजन्ये लिया। जद अतीत पोटो लेइ ने दन्या। मझपा तो म्हारा बकरा रा नाम है म्हारे बकरे रे माथे चोरी देवो। जद लोकां ठागो जाण्यो। स्वामीजी लोकां न कह्या ए सुमता ता गहणा गमायो अनै आंधा कनां सूं बताबा सो गहणो क्ठासूं आसी? ❀

१०७

भीखणजी स्वामी न घर में छतां वैराग आयो। जद वैरां रो ओसाण वांधारा छोटिया में पाछनें ठामां री पडेल म मेल्यो। पणी वेळा सूं पीवतां कष्ट पणों हुवो। तिवारे विचार्यो साधपणो दोहरो घणों। पछे विचार्यो इसो दोहरो जद मुक्ति मिलै। नवो साधपणो लियां पछे हुकमनां र आसरे हेमजी स्वामी नें स्वामीजी कह्यो इसो आण नै साधपणो लियो। पिण इसो पाणी पीवारो कदेइ काम पड्यो दीसे नहीं। जद हेमजी स्वामी बोल्या इसा वैराग सूं आप घर छोड़यो जद त्यां में किसैं ढेलै रहो।

१०८

टोळावाळा मांही थी भीकणिया जद रुघनाथजी कह्यो। भीखणजी अबारू पांचमो आरो है दोय घड़ी चोखो साधपणो पाळे तो केवल ज्ञान पामैं। जद स्वामीजी बोल्या यूं केवल ज्ञान उपजै तो दोय घड़ी तो नाक भींच ने इ बैठा रहो। बलि श्रमण स्वामीजी आदि पंचमा आरा में हुंता त्यां चोखो साधपणो न पाल्यो कांइ?

१०९

रुघनाथजी रा टोळा मांही निकल्या जद रुघनाथजी आंख्यां में आंसू नाखवा लागा। जद स्वामीजी विचार्यो—घर छोड़तां मां विचै तो म्हारी मा पणी रोइ हुंती। इम विचार नें छोड़ दीया।

११०:

गुणसठे रा साल चवदे साधां सूं तथा चवदे आर्यां सूं देवगढ में भीखणजी स्वामी विराज्या हुंता तिहां तीन आप बोल्या भीपणजी नैं तीन चणा आनेइ पूरा आहार नहीं मिल्यो, तो आंनें इतरा ठाणां ने आहार किण रीते मिलै। जद स्वामीजी बोल्या द्वारका में इतारा साधां में आहार पाणी मिलवो थो अने संहम रे अंतराय रो पचकानें ई कठिण।

१११

पर में दूजा रजपूत ने साथे चोमासो रेह किणही गाम वालो रजपूत बोल्यो तमाखू बिना आयो हाली जै नहीं। जद स्वामीजी बोल्या ठाकरां आगे चालो दिन थोड़ो है। रजपूत बोल्यो तमाखू बिना आवे तो हाली जै नहीं। जद स्वामीजी पाछै रही ने आरणिये छाणे ने नान्हा पाटी बुद्धी बांधने कह्यो : ठाकरां तमाखू चोखी तो है नहीं इसड़ी है। जद तिण रजपूत चिवठी भरनें सूंघी अनै बोल्यो ठीक इस है। जद स्वामीजी बुद्धी उपनें सूंघी। इसी चतुराई करनें कुशले ठिकाणे आया।

११२

सिरयारी में स्वामीजी चोमासो कीधो। विजैसिंहजी नाथदुवारे आवतां वर्षा रा जोग सूं सिरयारी में रह्या। मुसद्दी स्वामीजी रा दरशण करवा आया। प्रश्न पूछवा लागा — पहली कूकड़ी हुई के अंडो। पहली धण हुवो के अहिरण। पहिलो बाप हुवो के बेटो। इत्यादिक अनेक प्रश्नां रा जवाब स्वामीजी दिया युक्ति सहित। जद मुसद्दी राजी होय बोल्या : एह प्रश्न घणी जगांह पूछ्या पिण इसा जाब किणही दीधा नहीं। आपरी बुद्धी तो इसी है किणही राजा रा मुसद्दी थया हुंता तो घणां देशा रा राज एक धरे करता इसी आपरी बुद्धी है। जद स्वामीजी बोल्या : पछे ऊ जाय कठै। मुसद्दी बोल्या : जाय तो नरक में। जद स्वामीजी बोल्या

बुद्धी तिणरी जाणीये। जो सेवे जिन धर्म।
और बुद्धी किण काम री। सो पड़ियां बांधे कर्म॥

जिण बुद्धी करायां नरक में पड़े ते बुद्धी किण कामरी जब मुसद्दी घणां राजी हुवा।

११३

जोधपुर में स्वामीजी पधारया। जद भेला होय चरचा करवा आया। ऊंधी मंडली चरचा करवा लागा। जीव बचायां कांइ हुवे? विजयसिंहजी पड़दा फेराया तेहनों कांइ थयो? इत्यादिक राज में टाळी लगावा लागा जद स्वामीजी बोल्या सूत्र में किस्नजी री नरक गति कही। इत्यादिक सब चरचा सूत्र खोलने राजाजी कनें करी जद आदर गया।

११४

रुघनाथजी स्वामीजीनें पूछ्यो विजयसिंह जी पडूहो फेरायो ताबाव कूवां पर गलना मडाया। दीवां पर ढाकणा दिराया मुंडा मा बापरी चाकरी करणी, इत्यादिक कार्यों में राजाजी न कांइ हुवो। जद स्वामीजी बोल्या राजाजी समदृष्टि है के मिथ्यात्वी? इम पूछयां जाब देवा असमथ थया। *

११५

किणही कह्यो मीसण जी ये अनै एक होय जावो। जद स्वामीजी बोल्या : महाजन कुंभार, जाट, गूजर, सर्व एक थावो के नहीं? जद ऊ बोल्यो : म्हें तो एक न थावां। थांरी जाति इण ओर है। जद स्वामीजी बोल्या ए पिण मूलगा मिथ्यात्वी है। गाजीखां मूलाखां रा साथी है। त्यां पूछ्यो गाजीखां मूलाखां कुण थया। जद स्वामीजी कह्यो एक ब्राह्मण-ब्राह्मणी प्रदेश गया। त्यां ब्राह्मण माल मोकलो कमायो। केतले एक काले ब्राह्मण आऊखो पूरो कीधो। जद ब्राह्मणी पठाण रा घर में पेठी। दोय पुत्र थया। एकण रो नाम गाजीखां दूजारो नाम मूलाखां दियो। केतले एक काले पठाण पिण काल कर गयो। जद ब्राह्मणी सर्व धन पुत्र लेई देश आइ। माइ देशनें घणां न्यातिला भेला हुवा। कोइ भूवाजी कहै कोइ काकी कहै। हिवै ब्राह्मणी कहै छावडां नें जनेऊ घो। जिमणकर घणां ब्राह्मणां नें जिमाया जनेऊ देवा पुत्रां ने तेडो पाड्यो – आवरे बेटा गाजीखां आवरे बेटा मूलाखां। नाम सुण ब्राह्मण कोप कर बोल्या : हे पापणी। ए कांइ नाम? ब्राह्मण रा नामतो श्रीकृष्ण रामकृष्ण हरिकृष्ण हरिदास, के रामदास श्रीधर इत्यादिक हुवै।। अनै एहतो मुसलमान रा नाम है। कटारी काढ नें बोल्या : साच बोल ए किण रा पेट रा है। नहीं तो तोनें मारस्यां। अनै म्हेंइ मरस्यां। जद आ बोली मारो मती। सर्व बात मांड नें कही। एतो पठाण रै पेट रा है। जद ब्राह्मण बोल्या हे पापणी! म्हानें भ्रष्ट किया। अबै गंगाजी जाय स्नान पाणी रा लेपकरी शुद्ध थास्यां। जद आ बोली : बीरा थां दोनूं छावडामेइ ले जावो अनै शुद्ध करो। सो फेर म्हा भोजन करने जिमा सूं। जद ब्राह्मण

बोल्या एहतो पठाण रा पेट रा मूलकाइ असुद्ध छै सो सिद्ध किम हुवै। म्हे तो मूल का सुद्ध हां। थारो अन्न खाधो तिणसूं वीर्य आय सुद्ध बोल्या पिण मूलगा असुद्ध सुद्ध किम हुवै। भीखनजी स्वामी कह्यो कोइ साध नें दोष लागां प्रायश्चित्त लेइ सुद्ध हुवै। पिण एतो मूलगा मिथ्यात्वी भद्दा ऊंधी गाडीरां मुद्दालां रा साथी। ते सुद्ध किम हुवै। सुद्ध श्रद्धा आवै अनें पछै नवी दीक्षा रूप जनम थयां सुद्ध हुवै।

११६

किण ही पूछ्यो भीखणजी ए पिण धोवण उन्हो पाणी पीवै साधु रो भेष राखै लोच करावै ए साधु क्यूं नहीं। जद स्वामीजी बोल्या ए धणी धणाइ ब्राह्मणी रा साथी है। ते धणी धणाइ ब्राह्मणी किम? स्वामीजी बोल्या एक मेरां रो गाम हो। उठै उत्तम घर नहीं। महाजन आवै सो दुख पावै। मेरां नें कह्यो उठै उत्तम घर नहीं सो म्हे थांनें लागत द्यां छां अनें उठै उत्तम घर बिना रोटी पाणी री अबखाइ पड़ै। जद मेरां सहर में जाय महाजनां नें कह्यो म्हारै गाम बसो थांरो खरखरो राखस्यां। पिण कोई आयो नहीं। जद एक मेरां रो गुरु मुवो। तिणरी स्त्री गुरडी तिणनें मेरां ब्राह्मणी धणाइ। ब्राह्मणी जिसा कपड़ा पहराया। आंगणो कराय तुलसी रो थाणों रोप्या आगो धवलघी। मेरणियां ब्राह्मणी जिसो घर कर दियो। दोय रुपियां रा गहूं मेल्या अधेलीना मूंग अनें एक रुपया रो घी मेल्यो। कह्यो महाजन आवै जिणा नें पइसा लेइ रोटियां कर पावपाकर। महाजन आवै ज्यां नें मेर ले ब्राह्मणी नें घर बताय देवै। केइक एक कालै व्यापारी घणा कालां रा थाका आया। मेरां नें कह्यो उत्तम घर बताओ जद ब्राह्मणी रो घर बतायो। व्यापारी आयनें बोल्या बाइ रोटियां करनें घाल। जद इण गवारी माहे रोटियां कर मांहि मुरदा घी घालयो। दाल करी तिणमें काचरिया न्हाखी ते महाजन जीमनें बखाण करै। एहवाणो गाम री रांधण दणी। अम दहिये सहर ना रांधण देख्यो। पिण इसी चतुराइ कोइ दीठी नहीं। दाल किसीक स्वाद हुइ है। माहे काचरिया घामन बहुत चाखी घणी दै। जद आ बोली बीरां काचरी रा स्वाद री तो निरन्तर लिखी हूंसी ना खबर पड़सी। जद ओ बोल्या तीरम कोइ। जद आ बोली काचरिया पेरारकान

छुरी न मिली। जब बोल्या छुरी न मिली तो किण सूं बंधारी? जद बा बोली : दाता सूं बनाली म्हानें है। जद प बोल्या : हे पापणी म्हानें मिष्ट किया। बाली फरकवा लगा। जद बा बोली : रे बीरां बाली मती मोगाज्यो अमकड़िये झूमनी मांगने आपी है। ब्यापारी बोल्या : तु बावरी कुण है। जद बा बोली रे बीरां हूं बणी बणाइ ब्राह्मणी हूं। ख्वात री तो गुरजी हूं। अनै मेरां मोनें ब्राह्मणी बणाइ छे। मांडने सारी बात कही। भीखणजी स्वामी बोल्या : तिम प भेषधारी अणछाण्यो पाणी पीवें पिण समकित चारित्र रहित तिण सूं बणी बणाइ ब्राह्मणी रा सांघी है।

११७

अमरसिंहजी रे वीतमलजी हेमजी स्वामी नें कह्यो हेमजी सोजत में भीखणजी चोमासो कीधो। तिहां नजीक अमरसिंहजी रा साधां पिण चोमासो कियो हुंतो। सो आगले चोमासे तो भिखबाला में उठावतानें इसो दृष्टांत दियो—अमरसिंहजी रा बडेरां रुपनाथजी जैमलजी रा बडेरां नें गुजरात मारवाड़ में आण्यां। जद मांहों मांहि गाढो हेत थो। दोय तीन पीढी ताइ तो हेत रह्यो। पछै रुपनाथजी जयमलजी कोडकोजी प भूधरजी रा चेला सो अमरसिंहजी रा क्षेत्र जोधपुर आदि दबा लिया। जद हेत रह्यो नहीं। ज्यूं एक साहुकार जिहाज में बैस समुद्र पार ब्यापार करवा गयो। पाछो आवतां कपड़ रो मझूस में एक गर्भवती ऊंदरी आइ सो ब्याई। साहुकार देखिनें बोल्यो इणनें समुद्र में नहीं न्हाखणी। आवबा करे। पछै साहुकार पोता रे घरे आयो। थोड़ा दिनां में ऊंदरी रो परिवार बध्यो। जद ऊंदरी बोली ओ साहुकार उपगारी है। सो इणरो आपां नें बिगाड़ करणो नहीं। साहुकार पिण ऊंदरा ऊंदरयां ने दुःख न दे। एक दोय पीढ्यां तांइ तो ऊंदरा ऊंदरयां बिगाड़ करयो नहीं। पछै बिगाड़ करबा लागा। साहुकार नां कपड़ा कतरिया कुरटबा लागा। ज्यूं दो तीन पिढियां तांइ तो अमरसिंहजी रा साधां सूं हेत राख्यो। पछै अमरसिंहजी रा क्षेत्र दाबबा लागा। श्रावक श्राविका फारबा लागा। बैसते चोमासे तो प दृष्टांत दीधो। तिणसूं अमरसिंहजी वाला तो राजी रह्या। भिखबाला ने समझावा लागा। पछै उतरते चोमासे फतेचन्दजी गोटावत बोल्यो : भीखणजी भिखबाला ने

इम निपजी पिण ए पुन्यवाला नेड़ा बैठा त्यां नै क्यूं नहीं निपजै। जद स्वामीजी बोल्या एक जाट खेती बाई। जवार घणी नीपनी। पाकी। च्यार चोर खेत में सिटां री गांठा बांधी। जाट देख उत्पात सूं विचार आय नै बोल्यो थांरी जाति कांई है? एक जणो बोल्यो हूं तो रजपूत। दूजो बोल्यो हूं साहूकार। तीजो बोल्यो हूं ब्राह्मण। चौथो बोल्यो हूं जाट छूं। जद जाट बोल्यो राजपूत नें—आप तो धणी हो सो हासै रो लेवा हो। महाजन बोहरो है सो ठीक। ब्राह्मण पुन्य रो लेवै सो ही ठीक। पिण ओ जाट किम लेवै लेवै? इण नें म्हारी मा कनें ओलमो दिरावसूं। इम कहि गांठ पटक जवार में ले आय थांबलिया रै ऊपरी पाग सूं बांध दियो। फेर पाछो आयने बोल्यो म्हारी मा कह्यो है रजपूत तो लेवै लेवै धणी है। वाण्यो ते पिण ठीक बोहरो है। पिण ब्राह्मण किसे लेखै लेवै? ब्राह्मण तो दियो लै। बिना दियो किम लै? चाल म्हारी मा कनें। इम कही इणनें पिण पकड़ ले आय नें थांबलिया रै बांध दीधो। फेर आय नें बोल्यो रजपूत तो लेवै लेवै पिण तूं वाण्यां किण लेखै ले। तूं किसे दिन मोनें धान दियो हो। धन कद म्हारा बोहरो थयो। इम कहि ले आय नतीजे थांबलिया रै इण नै बांध दिया। फेर पाछो आय नै बोल्यो ठाकरां धणी हुवै सो जाबता करै के चाल्या करै। इम कहि इणनें इ पकड़ नै आयनें बांध दियो। रावळ आय नें पकड़ाय दिया। ❀

बुद्धि सूं च्यारां नें पकड़वा मारग राख्यो। अनें एक साथे च्यारां सूं झगड़तो तो कद पूगतो। क्यूं भिन्नवालो माहि सूं तो केइ समझाया अनें पुन्यवालां री बारी। पछै पुन्य री श्रद्धा वाला में निपजवा लागा। इसा भीखणजी स्वामी कलावान। ❀

११८

किणही कह्यो माम असंतजी ने दान देवार त्याग करावो। जद स्वामीजी बोल्या ए म्हारा पचम सरधिया भारीखिया रचिया जिण सूं त्याग करो हो का म्हांने भाइयां नें त्याग करो हो। इम कहिनें चूप कीधो। ❀

११९

पांपार में एक जणे गुरु कीधा। तिण रा घर का डरायो। कहे—पाछा आव नें समकत दे आव। जद ते पाछो आय न बोल्यो भारी समगत पाछी परही ल्यो। सूंस करायां ते पाछा परहा ल्यो। जद स्वामीजी बोल्या काम दियोड़ा पिण पाछा लेणी आवै है के।

१२०

पुर सूं विहारकर भीलवाड़े आवतां मारग में हेमजी स्वामी लेद पाया। जद चन्द्रभाणजी चावरी न कह्यो आज तो लेद घणो पामी। जद चन्द्रभाणजी चावरी कह्या—भीखणजी स्वामीजी कहिता था प्रदेशां में क्षामना थयां बिनां निर्जरा हुवै नहीं।

१२१

रिणिहि गाँम में जीवो मू हतो नगजी मसकट नें कहे भाइजी। भीखणजी स्वामी कहिता था—घान माटी सरिखो लागे जद सथारो करणों बाकी आरुपो घोड़ो आणी। जैसो आज आय दीठी है पिण म्हांसू सथारो हुवै नहीं। इम करतां तिण हिज रात्रि आउखो पूरो कियो।

१२२

किणही पूछ्यो महाराज सांपा रै असावा क्यूं हुवै। जद स्वामीजी बोल्या किणहि माठा वखाण न हेठो मायो मांड्यो अनै पछै माठो वखा छ्ण रा त्याग किया तो आगै माठा वखाण्यो ते तो लागै पछै सूंस किया ता पछै न लागे। ज्यूं आगै पाप कर्म बांध्या ते तो मागवै पछै पापरा त्याग किया तिण रा दु:ख न पड़ै।

१२३

रामाजी सीहवा गाम रा वासी पाली में भपघाल्यां रे थामक आव भप घाल्यां सूं चरचा कीधी। तिणमें कथक जाव तो दिया नें केयक जाव आया नहीं। पछै स्वामीजी म कह्या: चरचा कीधी पिण जाव पूरा आया नहीं। जद स्वामीजी बोल्या रामां साढ बाढी पूनी मे हाय तीर लेय

समाम मांड्यां जिम जीते। तीरां रा भायड़ो पूठ पाप शुद्ध किया जीते। ज्यूं भेषधार्यां सूं चरचा करणी सो पक्का न्याय मीलने करणी कषाय सू न करणी। ❀

१२४

किणही पूछ्या—भीखणजी कोई थाकक भाठा सूं कीड्यां मारतो तिण रा भाठा खोसने परहा किया तिण नें कांई थयो। जद स्वामीजी बोल्या : उणरा हाथ में कांई आयो। जद ऊ बोल्या उण रै हाथ में भाठो आयो। जद स्वामीजी बोल्या अर्थ यूं विचार लेवा। ❀

१२५

पुर भीलवाड़े विच स्वामीजी पधारतां कुंहार नी तरफ रा एक भायां मिल्यो। तिण पूछ्यो आपरा नाम कांई? जद स्वामीजी बोल्या म्हारा नाम भीखण। जद ऊ बोल्या भीखणजी री महिमा तो घणी सुणी है सो आप एकला रू स्यूं हूंठे वगा हो। म्हे तो आप्पां साथे आडम्बर घणो सुणी। घोड़ा हाथी रथ पालखी प्रमुख घणा कारखानों सुणी। जद स्वामीजी बोल्या इसा आडम्बर न राखां जद हिज महिमा है साधुरा मारग री हिज है। इम सुणने राजी हुवा। ❀

१२६

काचा पाणी पायां पुण्य सरध ते पुण्य री मरयादाला धा‾पा भीखणजी मिश्र री श्रद्धा घणी खोटी है। जद स्वामीजी बोल्या किणरी १ फूटी किणरी फूटी। ज्यूं थां री तो एक फूटी है अन थांरी दोनूं फूटी है। ❀

१२७

रुघनाथजी बोल्या बोल्या भीखणजी देख्या आपपुर में प्रमद्यो बाला र थानक आधाकर्मी आरम्भ घणा हुवा। जद स्वामीजी बोल्या थां रे तो आरंभ थयो अनें बीजांरे आरम्भ हुंता दीसे है। चश्मा रा पट्टा हुंता दिसे है। ❀

१२८

किणहि पूछयो भीषणजी काइ बकरा मारतां नें बचायो तिण नें कांइ थयो। जद स्वामीजी बोल्या ज्ञान सू समझाय नें हिंसा छोड़ायां तो धर्म छै। स्वामीजी दोय आंगुली ऊंची कर नें कह्यो—ओ तो रजपूत अनें ओ बकरो यां दोयां में डूबे कुण। मरण वालो डूबे के मारण वालो डूबे। नरक निगोद में गोता कुण खासी। जद ऊ बोल्यो मरण वालो डूबे। जद स्वामीजी बोल्या साधू डूबता नें तारे रजपूत ने समझावे बकरा नें मार्यां तू गोता खासी। इम ज्ञान सू समझायनें हिंसा छोड़ावे ते मोक्ष रो मारग है। पिण साधू बकरा नों जीवणो वांछे नहीं। जिम एक साहूकार रे दोय बेटा एक तो करड़ी आगां रा ऋण माथे करे अनें दूजो करड़ी आगां रो ऋण ऊतारे। पिता किण नै बरजै। ऋण माथे करे तिण नें बरजै पिण ऊतारे तिण नें न बरजै। ज्यूं साधू तो पिता समान है अनें रजपूत नें बकरा दोनूं पुत्र समान है। यां दोयां में कर्म ऋण माथे कुण करे। अनें कर्म ऋण ऊतारे कुण। रजपूत तो कर्मरूप ऋण माथे करै है अनें बकरा आगला कर्मरूप ऋण भोगवे ऊतारे है। साधू रजपूत नें बरजे तू कर्मरूप ऋण माथै मतकर। ए कर्म बांध्या घणां गोता खासी। इम रजपूत नें समझायनें हिंसा छोड़ावे।

१२९

वलि संसार नां उपकार ऊपरे अनें मोक्ष नां उपकार ऊपरे स्वामीजी दृष्टांत दियो। किणही नें सर्प खाधो। गारड़ू झाड़ो देइ बचायो। जद ऊ पगां लागे बोल्यो हुवरा दिन तो जीतब माइतां रो दियो हुँतो। अनें अबे आज सू जीतब आपरो दियो। माता पिता बोल्या—थें म्हानें पुत्र दियो। बहिनां बोली—थे म्हानें भाइ दियो। स्त्री राजी हुइ—चूड़ा—चूनड़ी अमर रहसी सो आप रो प्रताप है। सगा सम्बन्धी राजी हुआ—झाड़ो काम कीयो छाल रुपिया देवे ते किये ए उपकार मोटो। पिण ए उपकार संसार नों। हिवे मोक्ष नों उपकार कहै छै। किणहि नें सर्प खाधो उजाड़ में तिहां साधु आया। जब ते कहै मानें सर्प खाधो झाड़ो देवो। जद साधु कहे म्हानें झाड़ा आवै तो है पिण दणा न कल्पै। जद ऊ बोल्यो।

मोनें ओखध बतावो। साधु बोल्या ओखध जाणां छां पिण बतावणो नहीं। जद ऊ बोल्यो थे यूंही मूंडो बांध्या फिरो छो के कांइ थां में करामात पिण है। जद साधु बोल्या म्हांमें करामात इसी है ज्यो म्हारो कह्यो मानै तो किणहि भव में सर्प खावै नहीं। जद ऊ बोल्यो जिका कांइ बतावो। जद साधु बोल्या सागारी संथारा करदे। इण उपसर्ग सूं बच्या जद तो बात न्यारी, नहीं तो च्यारूं इ आहार नो त्याग। इम सागारी संथारो कराय नवकार सिखायो च्यारूं सरणा दीधा परिणाम चोखा रखाया। आउखो पूरोकर देवता हुवो मोक्ष गामी हुवो। ओ उपकार मोक्ष नों *

१३०

वलि संसार नों तथा मोक्ष नो मारग ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो : एक साहुकार रै दोय स्त्रीयां एक तो रोवण रा त्याग किया धर्म में घणी समझै। अनें एक धणी धर्म में समझै नहीं। केतल एक काले भरतार काल कीयो। इणनें धर्म में न समझै ते तो रोवै विलापात करै। समझै ते रोवै नहीं समता धारनें बैठी। लोग लुगाई घणा भेळा हुवा। ते सर्व रोवै तिण न सरावै—ए धन्य है पतिव्रता है। न रोवै तिण में निंदै—आ पापणी तो मूओ इज वांछती थी। इण र आंसूई आवै नहीं। अनें साधु किणनें सरावै। साधु तो न रोवै तिणनें सरावै। ए प्रत्यक्ष मोक्ष रो मारग न्यारो अनें लोक रो मारग न्यारो। *

१३१

केइ कहै आज्ञा बारे धर्म जद स्वामीजी बोल्या आज्ञा मांहीं धर्म तो भगवान परूप्यो। पिण आज्ञा बारे धर्म कहै ते किण रो परूप्यो। ज्यूं किणही पूछ्यो थारे माथै पाग ते कठा सूं आइ। जद साहुकार हुवे ते तो पैंतो बतावै माईदार मरावै अमकडिये बजाज कनें लीधी अमकडिये रंग रेज कनें रंगाइ। अनें चोरल्यायो हुवै तिण सूं पैंतो बतावणी आवै नहीं बोला में अटक जावै। ज्यूं आज्ञा बारे धर्म कहै तथा असंत सेवायां धर्म कहै ते ठाम ठाम अटकै पैंतो पूगावणी आवै नहीं। *

१३२

कोई स्वामीजी कनें चरचा करवा आयो। दान दया री तथा आज्ञा री चरचा करतां ठोड़ ठोड़ अटकै। अरड़ बरड़ बोलै। न्याय री एक चरचा छोड़ दूजी पूछे दूजी छोड़ने तीजी पूछे पिण प्रथम न्याय री चरचा से पार पुगावे नहीं। जद स्वामीजी बोल्या घर रो धणी खेत बाढ़े ते तो मोळ री मोळ बधारै। अनें चोर आय पड़े तो काटा बरड़ो करै। एक कठा सूं तोड़ै एक कठा सूं तोड़ै ज्यूं थें घर रा धणी होय न्याय री एक चरचा पार पुगाय दूजी करा। चोर जिम मत करो। *

१३३

भेषधारी चरचा करतां आचार सरधा री न्याय री चरचा छोड़नें जीव बचावा रो थेथो चालै। जद स्वामीजी बोल्या कुबदी चोर हुवै ते चोरी करम आग लगाय जावै। लोक तो आग र धन्धे लाग जावै नें आप माल लेय नें भाग तो रहै। ज्यूं आचार तो शुद्ध पालणी आवै नहीं तिणसूं आचार री न्याय श्रद्धा री चरचा छोड़नें लोकां सूं छगावणी वातां करै। ए जीव बचाया पाप कहै। दान दया उठाय दीधी। भगवान नें चूका कहै। इम लोकां नें छगावे पिण न्याय रा धणी नहीं। *

१३४

कुमारग सुमारग ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो। भगवान रो मारग अनें पाखंडियां रा मारग किम ओळखिये। भगवान रो मारग तो पातसाही रस्ता जेहवो सो कठेई अटके नहीं। अनें पाखंडियां रो मारग ढांढां री डांडी समान। पाछी डांडी दिसै अनें आगे उजाड़। ज्यूं चोखो सो दान शीलादिक बताय न पछे हिंसा में धर्म बतावै। *

१३५

कई पाखंडी इम कहै भीखणजी री इसी श्रद्धा पकरो बचाया पछे ऊ कूपचा खावै काचा पाणी पीवै अनेक आरंभ करे तिण रा पाप पाछे सूं आवे। जद स्वामीजी बोल्या म्हारे तो आ सरधा छै—असंयती नें बचायां

रू अनेक आरम करसी। तिण री अनुमोदना रा पाप उण वेलाइज भगवान देख्यो जितरो लाग चूको, अनें थें तपस्या रो धारणों कोइ नें करावो आगामी काल नीं तपस्या नो धर्म मोनें हुमी इम जाणनें धारणों करावो। जद थांरे लेखें असंयती ने बचायां रू आरम करसी आगामी काल नो पिण पाप थांनें लागसी थांरी श्रद्धा रे लेखें। कारण धर्म आगामी काल नों पाछा सू आवे तो पाप पिण लागसी। अनें भगवंते तो कह्यो : असंजती नें बचायां जितरो पाप ज्ञानी पुरुषां देख्यो तितरो उण वेलाइज लाग चूको। ॐ

१३६

किणही पूछ्यो थें कोइनें सूस करावो ते सूस पराछा भांगै तो थांनें पाप लागै। जद स्वामीजी बोल्या : किणही साहुकार सो रुपियां रो कपड़ो बेच्या। नफो मोकलो थयो। लेणवाले एक-एक रा दो-दो कीधा तो उणरो नफो उण साहुकार रैं आवै नहीं। तथा रू कपड़ो लेण वालो आगै जायनें सर्व कपड़ो बाल देवै वा तोटो उणरा घर में पड़ै पिण साहुकार रैं घर में नहीं। ज्यूं मैं सूस दिराया तिणनों नफो म्हांनें हुवै चूको आगला सूस चोखा पालसी तो नफो उणनें। अनें भांगसी तो पाप उणनें लागसी पिण म्हांनें न लागै। ॐ

: १३७ :

फर स्वामीजी दृष्टान्त दियो। किणहि दातार साधू नें घृत बहिरायो। साधू नेंहराइ राखी। तिण घृत सू अनक कीड्यां मूइ तो पाप साधू नें लागो पिण दातार नें न लागो। अनें साधू ते घृत हरष सहित तपसी नें दीधो पाले म खाधों तिणरे तीर्थङ्कर गोत्र बंध्या ते नफो साधू रैं थयो। आप आपरा भाव प्रमाणे नफो हुवै। ॐ

१३८

किणही पूछ्यो असंजती जीव नें मार्यां पाप कह्यो छो ते किण न्याय। जद स्वामीजी बोल्या : किणही रैं रुपियां री नोली कढ़ियां पंथी बगलें चोर लारे म्हाठो। आगै तो साहुकार अनें लारे चोर म्हाठा जाय। इम म्हामतां चोर भागइने हठो पड़्यो जब किणही धार नें अमछ रखाय पाणी पायनें

सेंठो कियो। ता ते अमल खवावण वालो साहुकार रो वैरी जाणवो करी ने साम्ह दियो तिण कारण। ज्यूं छ काया रा हणवावाळा नें पोखै ते छ काया रो वैरी जाणवो वैरी नें साम्ह दियो तिण माटै।

१३९

किणही खेत वायो। खेत पाको इसलै धणी रे खाळो दुखणी आयो। जद किणही ओषध देइ सातरा कीधो। साजो हुवो जद खेत काप्यो। सहाज देणवाळा नें पिण पाप लागा। ज्यूं पापी रे साता कीधां धर्म कठासूं।

१४०

किणही राजा दश चोर पकड़्या। मारवारो हुकम दीधो। तिवारै एक साहुकार अरज कीधी। महाराज एक २ चोर नां पांच सौ २ रुपिया देऊं चोरां नें छोड़ो। राजा कह्यो : चोर दुष्ट घणा है सो छोड़वा योग्य नहीं। साहुकार फेर कह्यो नव नें तो छोड़ो। तो पिण राजा मानें नहीं। इम साहुकार घणी अरज कीधी जद पांच सौ रुपइया लेयनें एक चोर नें छोड़यो। नगरी नां लोक साहुकार नें धन्य २ कहिवा लागा। गुण-ग्राम करै। बड़ी छोड़ाय नें मोटो उपकार कियो। चोर पिण घणो राजी हुवो। साहजी म्हां सूं घणो उप कार कीधो। पछै चोर पोता रे ठिकाणे आय चोरां रे न्यातिळा नें समाचार कह्या। ते सुणनें द्वेष धरया। ते चोर ओरां नें लेइ आयो। शहर रे दरवाजै चिठी बांधी नव चोर मारया तिणरा इग्यारा गुणा निनाणवै मनुष्य मारवा पछै विष्टालो कर सूं। साहुकार नें न मारूं। साहुकार रा बेटा पोता सगा संबन्ध्या ने पिण न मारूं। पछै मनुष्य मारवा लागो। किणरोइ बेटा मारयो किणरो भाइ मारयो, किणरो ही बाप मारयो। शहर में भयंकार मच्यो। नगरी नां लोक साहुकार नें निंदवा लागा। तिण रे घरे आय रोवा लागा : रे पापी थारे धन घणा हुंतो तो कूवा में क्यूं नहीं न्हास्यो। चोर छुड़ायनें म्हारा मनुष्य मरावा। साहुकार सातरियो। शहर छोड़नें दूजे गाम जाय बस्यो। घणो दुखी थयो। जे लोक गुण करता तेहिज अवगुण करवा लागा। संसार मां उपकार इसो है। मोक्ष रा उपकार करै ते मोनें तिण में कोइ जोखो नहीं।

१४१

सिरयारी में बोहरा खींवेसर पूछ्यो : नरक में जीव आवै तिणनें ताणै कुण। जद स्वामीजी बोल्या : कूवा में पत्थर न्हाखै तिणनें खेंचनवालो कुण। भारे करी आपेई तले जाय तिम जीव कर्म रूप भारे करी माठी गति में जाय।

१४२

वलि बोहरै खींवेसरे पूछ्यो जीव देवलोक में जावै तिण नें ले जावण वालो कुण। जद स्वामीजी बोल्या : लकड़ा नें पाणी में न्हाख्यां ऊंचो आवै ते कुण ही ल्यावै नहीं पिण हलकापणा रा योग सूं तिरै। तिम जीव पिण कर्म करी हलको थयां देवगति में जावै।

१४३

किणही पूछ्या : जीव हलको किम हुवै जद स्वामीजी बोल्या : पइसो पाणी में मेल्यां डूबै अनें उण ही पइसा नें ताप लगाय कूट २ नें वाटकी कीधी ते तिरै। उण वाटकी में पइसा मेलै तो ते पइसो पिण तिरै। तिम जीव तप संयमादि करी आतमा हलकी कीधां तिरै।

१४४

कोइ मायां री निंदा करै अन आप कुपद करन अलगा रहै तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टान्त दियो : किणही गाम में एक भुगल रहतो। सो एकदा फोजवाला आया ज्यांन लाकां रा धन धान बताय दियो। फोजवाला कयक ता गया अनै कयक गया नहीं। गाम रा लोक पार न्हास गया था सो कयक पाछा आया। भुगल धन धान बतायारी बात सुणनें लाकां मोसमा दीधा। अर इसा काम करै। जद ऊ भुगल फोजवालां नें सुणायनें बोल्या : हूं बतायवा तो अमकड़िया ना घोड़ा रा गड्ढा र बता दयतो, फलाणा रा खाड्डा उण गड्ढा ते बता दयता। इणरो धन फलाणी जागां गड्या ते पिण बता दयता। इम कुपद करनें बाकी रह्या ते पिण बताय दीधा। तिम निंदक कुपद हुय न निंदा करता थकां भारी हुवै अलगा रह।

१४५

केयक स्वामीजी नें कहिवा लागा : इसी सरधा तो कठेइ सुणी नहीं। थें दान दया उठाय दीधी। जद स्वामीजी बोल्या : पजूषणां में कोइने आखा पाडे नहीं आटो पाडे नहीं। पर्यूषण धर्म रा दिनां में ओ धर्म जाणे तो ओ दान देणों बद क्यूं कियो। आ बात तो घणां काल आगली है जद तो म्हैं हा ही नहीं फेर आ थाप किण कीधी।

१४६

केयक बोल्या : भीखणजी थांरा श्रावक कोइनें दान देवे नहीं। इसी श्रद्धा थारी है। जद स्वामीजी बोल्या : किणही शहर में च्यार बजाज री हाटां हुंती। तिणमें तीन तो दिवाल्या गया। पाछै कपड़ादिक नां गाहक घणां आया। तिवै एक बजाज राख्यो ते राजी हुवे के वेराजी। जद ते बोल्या राजी हुवे। जद स्वामीजी बोल्या : थे कह्यो भीखणजी रा श्रावक दान नहीं देवे तो थे लेवाल ते सर्व थांरे इज आसी। जगां थे कह्यो ते थांनें इज हुए, थे वेराजी क्यूं थया। थें निंदा क्यूं करो। इम कहि कष्ट कीधो। पाछो जाब देवा समर्थ नहीं।

: १४७ :

स्वामीजी नवी दिक्षा लीधां पछै केतलएक वर्से तीन जणियां दिक्षा लेवा त्यारी थइ। जद स्वामीजी बोल्या : थें तीन जणियां साथै दिक्षा लेवो अनें कदाचित एकण रो वियोग पड़ जावै तो दोयां नें कल्पे नहीं सो पछै संलेखणा करणी पड़ै। थांरो मन हुवे तो दिक्षा लीज्यो। इम आर करम तीन जण्यां नें साथै दीक्षा दीधी। पछै मालजी आर्यां थइ तिण स्वामीजी री नीत ठेठ सूं इसी तीखी हुंती।

१४८

दया ऊपर स्वामीजी तीन दृष्टान्त दिया—

चोर हिंसक ने कुसीलिया, यांरे ताइ हो साधां दियो उपदेश।
यांनें सावद्य रा निरवद्य किया एहवो छे हो जिन दया धर्म रेस।
भव जीवां तुमें जिन धर्म ओलखो ॥१॥

किण्हही सेमी नी हाटे साधु उतस्या। रात्रे चोर आया। हाट खोली। साधु बोल्या : थें कुण हो। जब ते बोल्या : म्हें चोर छां। साहुकार हजार रुपइयां री थळी माँहिं मेळी है सो म्हे परही ले जास्यां। जब साधां उपदेश दीधो : चोरी नां फळ माठा है। आगें नरक निगोद नां दुख भोगवणा पड़सी। भिन्न २ करनें भेद बताया। ए धन खासी सो घर का सगला अनें दुख थानें भोगवणो पड़सी। इम समझायनें चोरी नां त्याग कराया। साधां रा गुणग्राम चोर करतां थकां प्रभात थयो। एतले हाटरो धणी आयो। पछी नें नमस्कार करी थोड़ो ल्हटको साधां नेंइ कीधो। चोरां नें देखनें पूछयो थें कुण हो। ते बोल्या म्हें चोर छां। थें हुंडी बटायनें हजार रुपइयां री थेली माय नें मेली, सो म्हे देखता हा। रात्रि में आय लेवा लागा। साधां म्हानें देखनें उपदेश दे समझायान चोरी नां त्याग कराया। सो यां साधां रो भलो होइस्यां। म्हानें डूबतां नें राख्या। सेमरी सुण नें साधां र पगां पड़यो, गुण गावा लागो। म्हारें हाटे आप भलांइ उतस्या। म्हारी थेली राखी। एह धन चोर ले जावता तो म्हारा च्यार बेटा कुंवारा रहिता। अब च्यारूं ही परहा परणावसूं। ते आपरो उपगार है। सेमरी इम कह्यो पिण साधू तिण रा धन राखवा उपदेश न दियो। चोरां नें तारवा उपदेश दियो।

बकरां नें मारणहार कसाइ हाथ में कत्ती साधां कनें आय उभो रह्या जद साधां पूछया : तू कुण है। जद ऊ बोल्यो : हूं कसाइ छूं। जद साधां पूछ्या : थारें काइ किसब। जब ते बोल्यो : घर बीस बकरा बध्या त्यांरा गळे कत्ती फेरनें बधसूं। जद साधां उपदेश दियो : सर धान ग्यानी पड़ तिण र अर्थ इसा पाप कर। जद कसाइ बोल्या मान लो भगवान कसाइ र घर मल्या है सो मारबा दोष नहीं। जद साध बोल्या : भगवान क्यांनें मले। थें आगें माठा कर्म किया तिण सूं कसाइ र कुळ उपनों। वले इसा कर्म कर तो नरक में जाय पड़सी। इम भिन्न करनें समझाया। बकरा मारबा रा जावजीव पचखाण कराया। कसाइ बोल्या : म्हार घर बीस बकरा बंध्या है सो थाप कहो तो नीला चारा नीरू अन कांचा पाणी पाऊं। आप कहो तो एकन में छोड़ूं करि पाछल पाजर में

कोइ । आप कह्या तो आपन आण सूँपू । भोवण उन्हों पाणी पायो। सूसो धारा न्हासग्यो। माधां रा एवर म्हारो उबेरयो। जब साथ बोल्या थारे सूसा रो आवता कीजे। मूस भोल्या पालजे। इम सूसा री मलावण दय पिण बकरां री भलायण न देवे। कसाइ साधां रा गुण गावे : मौनें हिंसा छोड़ाइ तारयो। बकरा जीवता बचिया ते पिण हरखित हुवा।

कोइ एक पुरुष पर स्त्री नो लंपट। ते साधां कने पर स्त्री गमन नो पाप सुणीने त्याग किया। घणो राजी होय साधां रा गुण गावे : आप मौन डूबतानें तारयो। नरक जातां में राख्यो। अनें उवा स्त्री शील आदरयो सुणनें उगरे कनें आयनें बोली : हूँ तो थां उपर इकवार री धार बठी थी सो मो सागे गृहवासा करो नहीं तो कूवा में जाय पड़सू। जब तिण कह्यो : मानें तो उत्तम पुरुषां पर स्त्री नो घणो पाप बतायो। तिण सू म्हे त्याग कीधा। म्हारे तो थां सू काम नहीं। जब स्त्री क्रोध रे वस कूवा में जाय पड़ी।

हिवे भार ममग्या अनें धन धणी र रह्यो। कसाइ समझ्यो अनें बकरा बच्या। लंपट शील आदरयो नें स्त्री कूवा में पड़ी। चौर कसाइ लंपट यां तीनां में तारवान उपदेश साधां दियो। आ तीनांने साधां तारया। ए तीनूं इ तिरया। तिण रा साधां न धर्म थयो। अनें धणी रो धन रह्यो बकरा जीवा बच्या तिण रो तो धर्म अनें स्त्री कूवा में पड़ी तिण रो पाप साध नें नहीं। केइ अज्ञानी कहे : जीव बच्या अनें धन रह्यो तिण रा धम। तो उणरी श्रद्धा रे लेखे स्त्री मूइ तिण रो पाप पिण लाग। *

१४९

किण ही कह्या जीव बचिया ते धर्म। जद स्वामीजी बोल्या : कीड़ी नें कीड़ी जाणे सो ज्ञान के कीड़ी ज्ञान। जद ऊ बोल्यो : कीड़ी नें कीड़ी जाणे सो ज्ञान। कीड़ी ने कीड़ी सरधे सो सम्यक्त्व के कीड़ी सम्यक्त्व। जद ते बोल्यो कीड़ी नें कीड़ी सरधे ते सम्यक्त्व। कीड़ी मारवा रा त्याग किया तिका दया के कीड़ी रही जिका दया। जद ऊ बोल्यो

कीड़ी रही तिका दया। जद स्वामीजी बोल्या कीड़ी बायरा सूं उड़ गई ते दया न्हे गई, जद ऊ विमासी विचारनें बोल्या कीड़ी मारवा रा त्याग किया तिका दया पिण कीड़ी रही सो दया नहीं। जद स्वामीजी बोल्या धर्म दया रा करणा के कीड़ी रा करणा। जद ते बोल्या धर्म दया रा करणा। ॐ

१५०

किण ही कह्यो सूत्र में साधू नें जीव राखणा कह्या। जद स्वामीजी बोल्या : ए ठीक ही छै। म्हूं रा स्यूं राखणा किण ही नें दुख देणा नहीं। ॐ

१५१

× × रा थावका रे पूरी पिछाण नहीं तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दिया : कोइ भाइ साधू नें रूप वांदवानें आया। तिण नें पूछ्यो थे किण टोला रा। जद तिण कह्यो म्हे डूंगरनाथजी रे टोले रा। थांरो नाम कांइ। कहै म्हारो नाम पत्थरनाथ। कांइ भणिया हो। तब ते कहै भणिया तो कांइ नहीं पिण बाइसटोला वाल्यां नें तेरापंथी स्वांग सो जाणूं छूं। जद ए सांग पुरुष सत्थन वंदामि तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं इम कहि वांद्या। इसा भद्रीक छै पिण न्याय निरणो नहीं। ॐ

१५२

स्वामीजी पांचता एक जणो आय बोल्यो : स्वामी धम्मो मंगल कहो। जद स्वामीजी बोल्या भगवती सुणो। जद ते बोल्या : स्वामीजी धम्मो मंगल सुणावो। जद स्वामीजी बोल्या : भगवती कीमो अधम्मो मंगल छै। मांहि धम्मो मंगल इज छै गाम जातां सकुन लेवै तथा तीतर बोलावै ज्यूं सुणो ते तो पात ओर मांनै निकळो इण सुणो तो पात मार। ॐ

१५३

किण ही पूछ्यो उजाड़ में साधु पाछा नें मांदा गाडा आवता था तिण गाडा ऊपर साधु नें बसाय न गाम में आण्यो। त्यांनें कांइ थयो जद स्वामीजी बोल्या : गाडा मांहीं घालनें पुनिया ते गपड़ा आवता ते ऊपर

बेसाखनें गाम में आण्यों तिण नें कांइ थया। जद ऊ बोल्यो : गमेरी बात क्यूं करो। स्वामीजी बोल्या : ये गाड़ै बेसाख आण्या धर्म कहो तो गधे बेसाण आण्या हि धर्म। साधू रे तो दोनूं ही अकल्पनीक है। *

१५४

फत्तूजी आदि पांच अर्ज्यां ने चंडावल में स्वामीजी कह्यो : थारे कपड़ो चाहिजे सो लेवो। त्यां मांग्यो तिण प्रमाणे दीधो। मन में संका पड़ी कपड़ो बधतो दीसै। तिवारै अखैरामजी स्वामी न मेल्यनें त्यांरे ठिकाणै सूं कपड़ो मंगाय नें मापियो तो कपड़ो बधतो नीकल्यो। पछै स्वामीजी त्यांनें घणी निषधी। आगमिया काल नीं अप्रतीत जाणनें पांचूं अर्ज्यां ने साथे छोड़ दीधी। *

१५५

बूंसार में एक भाया रे वीरमाणजी री संका पड़ी। पछै स्वामीजी कनै आया। सामायक नों उपदेश दियो। जद ते बोल्यो : सामायक तो न करूं कराय सामायक में थांनें स्वामीजी महाराज कहिणी आय जावै तो मोनें दोष लागै। जद स्वामीजी बोल्या : एक मुहुरत नो संवर कर। इम कही संवर कराय पछै उण सूं चरचा कर भिन २ भेद बताय उण री संका मेटनें पगां लगाय दियो। *

१५६

माधजी धारा में मैणसिंहजी रा जमाई उदेपुर सूं आयो। नैणसिंहजी कह्यो महाराज थांनें समझावा। जद स्वामीजी समझावा लागा। तिणनें पूछ्या साधां नें आधाकर्मी थानक में रहिणो के नहीं। जद ते बोल्यो : ठीक है न रहिणो। वलि स्वामीजी कह्या : केयक साध नाम धरायनें आधाकर्मी थानक में रहे है। जद ते बोल्यो : रहै छै तो कठेयक सूत्र में चाल्यो हुवैला। वली स्वामीजी पूछ्यो साधू नें किंवाड़ जड़नो नहीं नित पिण्ड एक घरणों लेणो नहीं। जद ऊ बोल्यो : आ बात तो साची कही। किंवाड़ जड़ै सो साधु रे कांइ ल्लाज्नों है। किंवाड़ जड़ै सा साध दीज नहीं।

जद स्वामीजी कह्यो केइ किंवाड़ जड़े है। एक घर नों नित्य पिण्ड लेवे है। जद ते बोल्यो : हां महाराज किंवाड़ जड़े है नित्य पिण्ड लेवे है सो कठेयक सूत्र में चाल्या इज हुवेला। जद स्वामीजी जाण्यों ओ तो समजवो कोइ दीसै नहीं बुद्धि तिसी नहीं तिणसूं। ❀

१५७

कोइ सूं चरचा करतां बुद्धी तो वायक काची देखी अनें छोक कहै स्वामीजी इणने समझावो। जद स्वामीजी बोल्या : दाल हुवे सो मूंग माठ चणा री हुवे पिण गोहां री दाल न हुवे। ज्यूं हलुकर्मी बुद्धीवंत हुवे ते समझे पिण बुद्धी हीण न समझे। ❀

१५८

किणही कह्यो आप उत्तम कर्‍या सो कानी कानी हलुकर्मी जीव जगत में घणाइ है समझे जिसा। जद स्वामीजी बोल्या : मकराणा रा पत्थर में प्रतिमा होयवारा गुण तो है पिण इसरा करणवाला कारीगर नहीं। यूं समझे जिसा तो घणाइ है पिण इसरा समझावणवाला नहीं। ❀

१५९

वेणीरामजी स्वामी स्वामीजी नें कह्यो : हेमजी नें बखाण अस्खलित परवरा मूंढे सो आवे नहीं आड़ना जाय अनें बखाण दवा जाय। जद स्वामीजी बोल्या : केवली सूत्र व्यतिरिक्त इज हुवे। ज्यांरे सूत्र रो काम नहीं। ❀

१६०

वेणीरामजी स्वामी बालपणे था। जद स्वामीजी नें पूछ्यो हींगलू सूं पात्रा रंगणा नहीं। जद स्वामीजी बोल्या म्हारे तो पात्रा रंगीयाइ है थारे संका हुवे तो तूं मत रंग। जद वेणीरामजी स्वामी बोल्या म्हारा पेहला पी रंगवारा भाव है। जद स्वामीजी बोल्या : केइ भेषा आय जद उणरी कानी तो पीला कपड़ा रंगरा चन्द अनें लाल लाल पक्का रंगरा चन्द पर्यो देखनें थार हुवै पहिला इत्या मांही सभा। थारा पेन्द हुवे तो ध्यान तो मुंगे रंगरा इज टहल्या इम कहिनें समझायो समझ गया। ❀

१६१

कोइ कहे पात्रा नें दुरगा क्यू रगो। जद स्वामीजी बोल्या : कुंभारी निगे चोखी तरे पड़े। एक रग सूं दूजे रग उपर आवे जद दीसणो सोहरो। कोरो हीगळू कोमळ पिण हुवे। काळा कोरो हुवे। वासी उतारणो सोरो। इत्यादिक अनेक कारण सूं जू जूवा रंग देवे छे पिण सूत्र में वरज्या नहीं।

१६२

बाळपणे वेणीरामजी स्वामी सू पणा कायता। स्वामीजी आप बिना जोयां बिना पूज्या पग सरकाया। एक दिन वेणीरामजी स्वामी तो अळगा बेठा हा अनें स्वामीजी गुप्त पणे पूजनें पग सरकायो नें साधां न कह्यो रू वणो अळगो बेठो देखे है। इतले वेणीरामजी स्वामी बोल्या : रू स्वामीजी बिना जोयां पग सरकाया। जद और साध स्वामीजी काना देखनें हसवा लागा। पछे साधां कह्यो पूंजनें पग सरकायो। जद लजवाणा पड़्या अनें पगां आय लागा।

१६३

पीपार में वेणीरामजी स्वामी दुखी हाट में बेठानें स्वामीजी देखा पाड़्या आ वेणीराम २। इम दाय तीन हेला पाड्या पिण पाछा बोल्या नहीं। जद गुमानजी लुणावत नें कह्यो वेणो छूटतो दीसे है। जद गुमानजी वेणीरामजी स्वामी नें जाय कह्यो थानें हेलो पाड्या बोल्या नहीं तिण सू स्वामीजी आ बात कही वेणो छूटतो दीसे है। इम सुणनें वेणीरामजी स्वामी डरिया आयनें पगां लागा। जद स्वामीजी बोल्या रे मूरख हेलो पाड्यां पिण पाछा बोले नहीं। वेणीरामजी स्वामी नरमाइ करनें बोल्या महाराज म सुणिया नहीं। पछे घणी नरमाइ करी। इसा वनीत तो वेणीरामजी स्वामी इसा जब्बर स्वामीजी।

१६४

वणीरामजी स्वामी कह्यो हूं थळी में जाऊं चन्द्रभाणजी सूं चरचा करू। जद स्वामीजी बोल्या : थारे त्यां सूं चरचा करवारा त्याग है।

इसो हिज अवसर वृक्ष नें ए त्याग कराया। इसा स्वामीजी अवसर ना जाण।

१६५

मैणाजी आर्या नें अनें वेणीरामजी स्वामी नें स्वामीजी बोल्या : ए आंख्या रो ओषध घणा करै सो आंख गमावता दीसै है। तो पिण ओषध छोड़्यो नहीं। पछै आंख्या घणी कची पड़ गई। ओषध घणो कीधो तिण सूं आंख्या नें जोखो थयो।

१६६

गुजरात सूं सिघजी आय नाथद्वारे में स्वामीजी कनें दीक्षा लीधी। पछ किसरा एक दिन तो ठीक रह्यो पछै सिरदारी में अयोग्य जाण नें छोड़ दियो। ते मांहड़ै परहा गया। पछै खेतसीजी स्वामी बोल्या : सिघजी नें प्रायश्चित देनें पाछो करहा ल्यो, हूं जाय नें ल्याबूं। जद स्वामीजी बोल्या : ते लेवा योग्य नहीं। तो पिण कमर बांधने ल्यावा नें त्यार थया। जद स्वामीजी कह्यो उणा भेळो में आहार कीधो है तो थां भेळो आहार करवारा त्याग है। इम सुननें मोटा पुरुष कोइ ल्यावानें गया नहीं। इसा अवसर मीखणजी स्वामी। पछै सिघजी रा समाचार सुण्यां ऊनो राली ओढ़नें धरटी रे जोड़ै सूता है।

१६७

दोय साधां रे मांहों मांहि अड़वी लागी। स्वामीजी कनै आया। इणरे छोटा मांहीं की पाणी रा टपका पड़ता ल्यो कहै इती दूर आयो ऊ कहै इतरा पांवड़ा। परस्पर विवाद करै। समझाया समझै नहीं। जद स्वामीजी कह्यो : में दानूं जणां डोरी ले जायने जायगी माप आवो। जद दानूं जणां अड़वी छोड़ नें सुध होय गया।

१६८

बली दोय साधां रे आपस में अड़वी लागी अनें ऊ कहै तू लोलपी। ऊ कहै तू लालपी। इम परस्पर विवाद करता स्वामीजी कने आया

तो पिण विवाद कोई नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : दोनूं जणां विगरा त्याग करो आज्ञा रो आगार राखो। पहिलां आज्ञा मांगे संहिज क्यो। एक जणे च्यार मास रै आसरै विगै न खाधी पछै आज्ञा मांगी। जद धूम रेह विगैरा आगार होय गयो। इम कहिनें समजाया।

१६९

माधजी द्वारा में ५६ रे वर्षे स्वामीजी रै बायरा कारण सू ११ मास रै आसरै रहिणो पड़ यो। तिहां हेम गोचरी गया। दाल घणां री न मूंगा री भेळी हुइ। स्वामीजी देखनें पूछ्यो आ चिणां री मूंगा री दाल भेळी कुण कीधी। जद हेमजी स्वामी बोल्या : मैं भेळी आणी। जद स्वामीजी बोल्या : कारण वाळा रै वासतै ऊपरी मांगने न्यारी स्वामी तो अळगी राही पछ भेळी क्यू कीधी। पछै हेमजी स्वामी बोल्या : अजाण में भेळी हुइ। जद स्वामीजी घणा निषेध्या। जद एकान्त जावगो जाय सूता उदास थया। पछै स्वामीजी आहार कर आयनें क्यो : ओगुण आपरी आतमा रा सूझै है के म्हारा। जद हेमजी स्वामी बोल्या : माहाराज ओगुण तो म्हाराइ सूझै। जद स्वामीजी बोल्या : ठीक है आज पछै सावचेत रहिजै। ऊठ जा आहार कर इम कहिनें आहार करायो।

१७०

काफरला में खेतसी स्वामी नें हेमजी स्वामी गोचरी गया तिहां धोवण विना चाख्या भेळो थयो। तिवारै खेतसीजी स्वामी क्यो : हेमजी आज विना चाख्या धोवण भेळा कीयो है। माफक निकळीयो तो स्वामीजी इसा निषेधता तिस है बाकी काण राखै म्यूं कोइ नहीं। पछ काफरला मां देहरा में पाणी चाख देख्यो चोखो नीकस्या जद मन राजी हुवा।

१७१

कारण वाळा साधां रै वासतै दाख मंगावता तो दोय कानी मेलता। काइ चरकी हुवै काइ खारी हुवै, किणही में खप घणो हुवै, किणही में

सूम मादा हुवै। कारणीक नें कोइ मारै कोइ न मारै। तिण सूं जूजूआ मेल्या। इसो कारणीक रा आसतो करता। ❀

१७२

कांकड़ोली में सेहलोता री पोल में स्वामीजी उतरया। पिथायनें री साल रात्रि में पाल्टी बारी खोल नें स्वामीजी बारै दिसा गया। जद हेमजी स्वामी पूछयो : महाराज बारी खोलवारा अटकाव नहीं कोइ। जद स्वामीजी बोल्या ए पोलीरो थोथजी सकलथो दरसन करवा आया। थयों संकीला तो आ छै पिण इण बातरी संका तो उपरइ न पड़ी। ता थार आ सका कन्ना सूं पड़ी। जद हेमजी स्वामी कह्यो : महाराज म्हार संका क्यां नें पड़े हूं तो पूछा करूं छूं। जद स्वामीजी बोल्या : तूं पूछै छै इण रा अटकाव नहीं। इणरो अटकाव हुमी तो म्हे क्यांनें खोलस्यां।

१७३ :

थांरा आचार खोटा भद्धा पिण खोटी इसा तो समदृष्टीहीण गुरु इसा ही भद्धा सुण्य समकतहीण श्रावक। ते कहै म्हानें भीखणजी साध श्रावक सरधै नहीं। जद स्वामीजी बोल्या कायस्था री सा गाय काला बामण में रोघी अमावस नी रात्री आंधा जीमण वाला आंधाइ परसण वाला जीमता जाय नें खुंखारा करें। कद समरकार काला कूलो टालस्या। कोइ टालै। सर्व काला ही कालो भला हुवा। ज्यूं भद्धा आचार नों ठिकाणा नहीं ते साध श्रावक किम हुवै। ❀

१७४

गा श्रावक बोल्या भीखणजी रण पातरा गार पाड्या। जद स्वामीजी बोल्या : तार कोइ कहै डोडाइ सूझे नहीं। ज्यूं आधाकर्मी आदिक मोटा दोष ही सूझे नहीं तो छोटा दोषा री खबर किम पड़े। ❀

१७५

पाप रो वेग परदी माही। पीसती जाय ज्यूं उड़ता जाय। आखी रात्री पीसनें ठाकणी में उसारया। ज्यूं साधपणा श्रावक पणा लेय नें आठ २ नें दोष लगाय अनें प्रायश्चित लेय नहीं त्यांरै सारै क्यूं ही पिराप रहे नहीं। ❀

१७६

धामली में आर्य्यां विना मूलायां चोमासा कियो। तिवां आहार पाणी री संकडाइ घणी रही। किणही स्वामीजी नें पूछयो महाराज धामली में आर्य्यां विना भूलायां चोमासो कियो त्यां नें काइ दंड देस्यो। जद स्वामीजी बोल्या : प्रथम तो दंड उ गाम देवईज है। पछै भेळा थया जद त्यां आर्य्यां नें प्रायश्चित दइ सुध कीधी।

१७७

धनांजी री प्रकृति करड़ी जाण नें स्वामीजी विचारयो आ भारमलजी सू निभणी कठिन है। साहमी बाले जीसी है। सू आगनें छोड़णरो उपाय करनें कला सू पर पूठ छाड़ दीधी।

१७८

छै लेश्या हुंती जद वीर में हुंता आठुंइ कर्म।
छद्मस्थ चूका तिण समें मूरख थापे धर्म।
चतुर नर समजो ज्ञान विचार।

ए गाथा जोड़ी जद भारमलजी स्वामी कह्यो : छद्मस्थ चूका तिण समें ओ पद परहा फेरा छाक बेदा करे जिसो है। जद स्वामीजी बोल्या : आ पद साचो के झूठा। जद भारमलजी स्वामी कह्यो : है तो साचो। जद स्वामीजी बोल्या : साचो है तो छाका री काइ गिणत है। न्याय मारग चालतां अटकाव नहीं।

१७९

सम्वत अठार तेपनें स्वामीजी सोजत चोमासो कीधो। पछै विचरता २ मांहडे पधारया। तिहां गिरधारी सू गृहस्थपणें में हेमजी स्वामी दर्शन करवा आया। पोळ रा चौंतरा उपर तो स्वामीजी पोढ़वा अनें हेठे साधो विछाय नें हेमजी स्वामी सूता। जद साध अनें स्वामीजी मांहों मांहि साध आर्यां नें क्षेत्रां में मेलणारी बातचीत करे। उण साध नें उण गाम में मेलणा फलाणे नें अमुक गामें मेलणो है। पिण गिरधारी मेलणारी बात न कीधी।

जद हेमजी स्वामी बोल्या : स्वामीनाथ सिरयारी में साध आप्यां मेलवारी बात ही न कीधी। जद स्वामीजी कह्‌यो मननें करी घणा निषेध्या। फरमायो गृहस्थ सुणतां बात हीज न करणी साधां रे विचे मोकलवारो काम हीज कांई। हेमजी स्वामी नें करड़ी घणी लागी। मून साझनें सूय रह्या। पछे प्रभाते हेमजी स्वामी तो वखाण करनें सिरयारी कानी नींबली रो मारग लीधो अनें स्वामीजी कुशालपुर कानी विहार कीधो। आगे जातां स्वामीजी नें कायक सकुन पाछ हुवा जद पाछा फिरया। आप पिण नींबली कानी पधारया। हेमजी स्वामी री चाल तो धीरे नें स्वामी री चाल उतावली सो जाय पूगा। हेलो पाड्यों हेमड़ा मोड़ा आवो हो। सुण नें हेमजी स्वामी ऊभा रहिनें वंदना कीधी। पछे स्वामीजी बोल्या : आज तो थां ऊपर हीज आया हां। जद हेमजी स्वामीजी बोल्या : भलांई पधारया। स्वामीजी बोल्या तूं साधपणो लेऊं २ करतां नें ढलवावतां नें तीन वर्ष आसरे हुवा सो अबे समाचार पका कहि दे। हेमजी स्वामी बोल्या : स्वामीनाथ साधपणो एवारां भाव सरावरी है। स्वामीजी बोल्या म्हां जीवतां लेसी के, चल्यां पछे लेसी। आ बात सुणनें घणी करड़ी लागी। स्वामीनाथ इसी बात करो। आप रे सका हुवे तो नव वर्ष पछे कुशील रा त्याग कराय देवो। स्वामीजी बोल्या : त्याग है थारे। जद त्याग करावताइ हुवा। त्याग कराय नें बोल्या : परणीजवा रे आसते नव वर्ष ये राख्या है के। हां स्वामीनाथ। जद स्वामीजी बोल्या : एक वर्ष तो परणीजतां लागे बाकी आठ वर्ष रह्या। तिण में एक वर्ष स्त्री पीहर रहे। पाछे रह्या सात वर्ष तिण में दिनरा त्याग है। थारे च्यारे मासे तीन वर्ष रह्या तिका में पांचूं तिथ्यांरा थारे त्याग है। बाकी दोय वर्ष में च्यार महिना आसरे रह्या। इम संकावतां २ पोहर रा लेखो करतां पछे घड़ियां रे लेखे छ मास रो कुशील आसरे बाकी रह्या। वली स्वामीजी फरमायो : परण्यां पछे एक हाथ डोरा जारी होयनें स्त्री मर जावे तो मन आपरा पाता रे गल पड़े। दुःखी हुवे। पछे साधपणा आवणो कठिन है। इम कही नें वलि उपदेश देवा लगा : जाव जीव शील आदर ले, जोड़ले हाथ। एतले खेतसीजी स्वामी बोल्या जोड़ले २ हाथ जोड़ ले, स्वामीजी कवे है। जद हाथ जोड़्या। स्वामीजी पूछ्यो शील अदराय

देऊ। इम वार वार पूछ्यो। जद हेमजी स्वामी बोल्या अदराय देवो। जद स्वामीजी जावजीव पांच पदां री मास करनें त्याग कराय दिया। हेमजी स्वामी बोल्या अबे सिरयारी वगा पधारज्यो। जद स्वामीजी बोल्या : अबारू तो हीराजी नें मेळा हां सो सामां रा पडिकमणो पराो सीखजे। इम कहिनें नींबली में आया। ए सर्व बात ऊर्मा कीधी। नींबली में आयां पछे हेमजी स्वामी कनें मिठाइ थी तेहनो बारमो ब्र निपजायो। भारमलजी स्वामी नें स्वामीजी कह्यो। अबे थारें नचीताई बह। आगे तो म्हें हा अनें अबें पाछल्यां सूं परभाविक रो काम पड़ तो हेमजी हइज। पछ हेमजी स्वामी बोल्या म्हें शील आदर्यो ते वात अबारू लोकां में प्रसिद्ध न करणी। स्वामीजी बोल्या : हूं न करू। हेमजी स्वामी तो सिरयारी आया नें स्वामीजी केळावास पधार्या। वेणीरामजी स्वामी नें सर्व बात कही। हेमजी शील आदर्यो पिण कह्यो बात प्रसिद्ध न करणी। वेणीरामजी स्वामी सुणनें घणा राजी हुवा। स्वामीजी नें घणा प्रशंस्या। आप बड़ो भारी काम कीधो। म्हें घणी इज आप कीधी पिण कोइ टच लागी नहीं, आप आछो काम कीधो। अनें शील आदर्यो ते बात प्रगट करणी वानें न राखणी। आप भलाइ मत कहो। वेणीरामजी स्वामी बात प्रसिद्ध कर दीधी। केलावास रा बाया भाया राजी घणा हुवा। म्हे तो पहिलाइ जाणता हा हेमजी दीक्षा लेसी। पछे स्वामीजी सिरयारी पधार्या। हेमजी स्वामी बनोला जीमें। महा सुदि १३ शनैश्चर वार दीक्षा रो मुहुर्त ठहरायो। पछ बाबा रा बेटो माइ रावले जाय पुकार्यो। जद ठकुराणी स्वामीजी नें चाकरां साथे कहिवायो : गाम में रहिज्यो मती। पछे गाम रा पंच भेळा होय नें हेमजी स्वामी नें साथ लेइ रावले गया। जद ठकुराणी हेमजी स्वामी न गहणा कपड़ा सहित देखन बोली हूँ तो नै थूं को यूं गहणां कपड़ां सहित परणाव देसूं। म्हारा लोकस सिंह रा सूंस है। जद हेमजी स्वामी जाव दीक्षा परणावो तो गाम में कुंवारा डावड़ा घणा है। म्हारें तो सूंस है। इम कही स्वामीजी कनें आय बेठा। स्वामीजी नें गाम में रहिवारी आज्ञा लेय नें पंच पिण पाछा आया। माघ सुदी १५ पछे हेमजी स्वामी रे ब काका हणवारा त्याग हुंता अनें त्याविसां कह्यो फागण वदि बजर सातबे बहिम में परणाव

दीक्षा लीधी। सो कथा रो कह्यो मान्यो। पछ स्वामीजी नें आय पूछ्यो। जद स्वामी जी निषध्या। रे मोला अनय करे है। एक दिन पिण न सल्झेभयो। पछे पाछा आयनें से पीजरे साहवे वहिन परणाय दीक्षा लेणी इसो कागद कीधो ते फाड़ न्हास्यो। अनें मरका नें कह्यो: थें इसा दगा करो। म्हारा त्याग मंगावो जद लोक बोल्या भीखणजी समझाया दीसै है। पछै इकवीस दिन वनोला जीमी नें माघ सुदी १३ नें १८५३ गाम बारे दीक्षा यइ। बड़ला रे नीचे हजारू मनुष्य भला थया। घणां उछव मोच्छव सहित स्वामीजी रे हस्ते दीक्षा लीधी। आगे सर्व चार संत हुंता पछे तेरह थया। उठा पछे वधवो कीधा वधोतर थइ। वंक चूलिया में कह्यो म १८५३ पछे धमरा घणों उद्योत हुसी ते बात आय मिली। दीक्षा देइ स्वामीजी विहार कीधो। पछे घणो उपकार थयो।

१८०

कच्छ देश थी पाली में टीकम दासी आया। अनेक बोलां री संका पड़ी त मेटवा। जद पाली में   रे श्रावकां कह्या टोडरमलजी थारी सका मेट देशी। थें थानक में चालो। इम कही थानक में ले गया। पछे टोडरमलजी सू चरचा कीधी। टीकम दोसी रा प्रश्नां रो उत्तर आयो नहीं। जद टीकम दासी बोल्यो या प्रश्नां रा जाब देणवाला तो एक भीखणजी स्वामी इज है और काइ दिसै नहीं। इम कही ठिकाणें आयो। केवलायक विना पछे स्वामीजी मेवाड़ सू मारवाड़ पधारया। सिरयारी होयनें गुण मठे चय पाली चोमासो कीधो। टीकम दोसी मोकला प्रश्न पूछया म्हांरा जाब स्वामीजी दीधा। टीकम दासी बोल्यो: वंकचूलीया में कह्यो संवत अठारे तेपन पछे धम रो उद्योत होसी। इण वचन रे लेखे तो तेपनां पहिली साध नहीं इम संभवे। जद स्वामीजी फुरमाया इहां साध नहीं इसा तो कह्या नहीं। सं० १८५३ पछ धर्म रा घणा उपकार आसरी उद्योत कह्या छे। तेपनें पहीली पाड़ा उद्योत छा तेपनां पछे घणों उद्योत। इम कहीनें समझायो।

१८१

भारमलजी स्वामी बालक था जद स्वामीजी फरमायो : गृहस्थ सूंपणों काढ़ै तिसो काम न करणो । गृहस्थ सूंपणों काढ़ै जिसो काम करै तो तेला रो दंड । जद भारमलजी स्वामी बोल्या : कोइ झूठाइ सूंपणों काढ़ै तो । जद स्वामीजी कह्यो : झूठो सूंपणों काढ़ै तो आगला पाप उदै आया । तो पिण भारमलजी स्वामी बड़ा विनीत सो वचन अंगीकार कियो । इसा विनीत उत्तम पुरुष हुवै ते सूंपणों कढावै हीज किण लेखै । ❀

१८२

बालपणै भारमलजी स्वामी नें आखी उत्तराध्ययन ऊभा २ चितारणी इसी आज्ञा स्वामीजी दीधी । जद भारमलजी स्वामी बोल्या : स्वामीनाथ कदाचित नींद में इठो पड़ जाउं तो । जद स्वामीजी पाछो फरमायो पूंजनें सूंणें ऊभा रहो । इण रीतै आखी उत्तराध्ययन री सझाय अनेक वार कीधी । इसा वैरागी पुरुष । ❀

१८३

साध आर्यां री प्रकृती करड़ी देखता तो तिणरी खोड़ स्वामी मेटवानें इम दृष्टान्त देता । कषाय रो टूक, आपै बासदि रो टूक, सर्पनी परै फूं, इम कहि नें प्रकृती सुधारवारा उपाय करता । ❀

१८४

कल्याण वाणी देवै सूत्र सिद्धांत बांच छैहड़ै जीव सुधारयां पुन्य मिश्र परूपै सावद्य अनुकंपा में भ्रम करै तिण उपर स्वामीजी दृष्टान्त दियो : बायां रात्रि में संसार लेखै चा।सा २ गीत गाय अनें छैहड़ सातां मोरथा मात्य गाय । ज्यूं पहिला तो कल्याण में अनक बातां कहै पिण छैहड़ सावद्यदान सावद्यदया में पुण्य मिश्र परूपै । ❀

१८५

विजयचंदजी पटवा में आसकरण दाती कह्यो : विजयचंदजी थांरा गुरु भीखणजी कंवाड़ खोलनें मढी में उतऱ्या । इम सुण नें विजयचंदजी

करता। स्वामीजी आठम चवदरा रा उपवास करता। अनें उदैरामजी बेलै २ पारणों पारणा में आम्बिल। खेतसीजी स्वामी उदैरामजी नें आहार अधिक देवै। जद स्वामीजी बरज्या। फरमायो : बेला रा पारणो ई आहार प्रमाण सूं घो। तो पिण अधिक देवा री थेग देख नें स्वामीजी फुरमायो खेतसी ! उदैरामजी री मोत थारे हाथे हुंती दीसे है। केतलायक वर्षा पछ मारवाड़ में इगसठे री साल उदैरामजी आम्बिल बद्ध मान तप करतां इकताळीस ओळी तो हुइ एक अठाइ कीधी। अठाइ रो पारणो आरंभियो कीधो। डील में कारण आप नें चलावाम मारमलजी स्वामी कनें आवतां कराड़ी गाम में थाका।

जद भापजी तपसी चेलावास आय नें समाचार कह्या। जद खेतसीजी स्वामी हेमजी स्वामी मोपजी तपसी आदि आय नें खांधे बैसाण चलावास लेय आया। घास रो बिछावणों कर ऊपर सुवाण्यां। पछे हीरांजी हेमजी स्वामी नें कह्यो आप जिम्मणों काइ करो। उदैरामजी स्वामी नें पाणी पावा। जद खेतमीजी स्वामी हेमजी स्वामी दोनूं कनां आया। खेतसीजी स्वामी मोरा पाछे हाथ देय नें बैठा कीधा। इतले आस्यां फर दीधी। भारमलजी स्वामी फरमायो सरघा तो थारे च्यारू आहार ना त्याग है। खेतसीजी स्वामी र हाथ में डील चालता रह्या। जद खेतसीजी स्वामी कह्यो : मोनें स्वामीजी फुरमाया था क उदैरामजी री मोत थारे हाथे आवती दीस है। सो स्वामीजी रो वचन आय मिल्या। ॐ

१८९

माजल रा बजार में छत्री स्यां स्वामीजी विराज्या। बरजूजी नाथांजी आदि सात आर्ज्यां आर गाम थी आया। स्वामीजी में बदणां कीधी अनें यास्यां उतरवा न आयगां चाहिज। जद स्वामीजी पात उठनें नजीक उपाश्रय अछ्या हुंता त्यां आव्या नें साथ लेयनें आया अनें यास्यां : छेरे काइ भायां इण उपाश्र री आज्ञा देणवाला। जद एक भायो बोल्यां म्हारी आज्ञा है। आर आयगां सूं कूपी स्याय नें ताला त्यास कपाड़ खोल दिया। पछै माहि आर्ज्यां न उतार नें आप पाछा ठिकाण पधारिया।

एह समाचार नाथांजी रे मूंहडे सुण्यां म्हूं हीज लिखिया छै। आर्य्यां नें कमाड़ खोलायनें न उतरणो इसी परूपे ते अजाण छै। आ तो रीत घर स्वामीजी थकांरी है। ❀

१९

खेरवारा भगजी दीक्षा नें त्यार थया। जद काका बाबा रा भायां घणो धर्मो कियो। इम कहे म्हांह री आज्ञा नहीं। जद स्वामीजी फरमायो थारी आज्ञा री जरुरत नहीं। पछै बडी बहिन री आज्ञा लेयनें दीक्षा दीधी। पछ त्यां घणा धर्मो कीधो। स्वामीजी रे मूंडा मूंड झगड़ो घणा किना खोड कीधा पिण स्वामीजी काइ गिणत राखी नहीं। पछै भगजी नें स्वामीजी पूछ्यो तोनें उबे पाछा ल्यावला तो तूं काइ करैला। जद भगजी बोल्या घर में ल्यावेला तो म्हार ज्यारूं इ आहार नो त्याग है। स० १८५६ री ए बात छ। अनें पछ माठ चोमासो सिरयारी कीधो तिहां चोमासा में ते काका बाबा रा भायां घणो मोकलो कियो। स्वामीजी न्याय मारग चालतां काइ री गिणत राखी नहीं। ❀

१९१

दमूरीवाला नाथूजी साध नें जीभ रा लालची जाणनें घृत दूध दही मिष्टान कढ़ाइ विग त्यागारी मर्यादा साधां र बांधी स० १८५६ र वर्ष। ❀

१९२

वीरभाणजी नें स्वामीजी फरमाया : पन्ना नें दीक्षा देवारी आज्ञा नहीं। अनें जो दीक्षा दीधी तो आपां र आहार पाणी रो संभोग भेला नहीं। पछै वीरभाणजी पन्ना नें दीक्षा दीधी। जद स्वामीजी आहार पाणी नों संभोग मांह नाख्या। पछ इत्यादि मारग स्मी विपरीत मरघा ए उन्या ❀

१९३

आगे सोनार में दीक्षा दीधी। सथा वीरां कुमारी में दीक्षा दीधी। ममपग प्रनत्या महा तिगसे मदामन विना सार नें दिसा दया री रुचि स्वरी ❀

१९४

भीकम दोसी र धनक बाता री सका पड़ी। गुणतीस ओळीया भास रै लिखनें ल्याया। चरचा करवा लागा। बोले घणो। जद स्वामीजी ओळीया बाय २ नें उणरा जाब लिख नें बताय दुवा। ६ ओळीयां रै भास रै घो सका मेट दीधी। जद घणों रोयो अनें बोल्यो आप न हुंता तो म्हारी काइ गति हुंती। आप तीथंकर केवळी समान छो। इत्यादिक घणा गुण कीधा। स्वामीजी री जोड़ा सुण नें घणो राजी हुवो। ए जोड़ा नहीं पड़ तो सूत्रां री निसु कि छै। घणी सेवा करनें पाछो कच्छ देश गयो। वळि संका पड़ी जद चौविहार संथारो कीधो। म्हारी संका तो सीमधर स्वाम मेटसी। पनरह दिन आसरे संथारो आयो। आउखो पूरो कियो।

१९५

चन्द्रभाण नीकळवा लागा जद स्वामीजी बोल्या : संलेखणा संथारो करणो सिरै पिण साधां नें छोड़नें अपछन्दापणो सिरे नहीं। जद ऊ बोल्या : मैं अनें भारमलजी दोनूं संलेखणा करां। जद स्वामीजी बोल्या : आपे दोनूं अणां करां। जद चन्द्रभाणजी बोल्या : थां साथे तो न करू भारमलजी साथे करू। स्वामीजी फेर कह्यो आप करां। पछै चन्द्रभाण तीलोकचंद दोनूं अणा मान अहंकार रे बस टोळा बार नीकळ्या। ते सर्व विस्तार तो स्वामीजी कृत रास थी जाणवो। ते साधां भणी बोल्या : बिरखा तो म्हाराइ घणेला पिण थांरा श्रावकां नें तो दाई बाल्यां आकडा सिरखा करू तो म्हारो नाम चन्द्रभाण है। जद पथुराजी श्रावक बोल्यो : थें तो थोड़ा कोश हाको अनें हूं कामीद मेल नें ठाम २ खबर कराय देसू सो थांनें मन करनें पिण कोइ बळ नहीं। पछै दाई बळिया आकडै जिसा में इज हुवोला। बाद में पछा सूं बाजता रह्या। पछै आगे रुघनाथ जी मिल्या। त्यां कह्यो : थें म्हा में परहा आवो। थांरी रीत राखस्यां।

पछै रोयट रा भायां नें किणहि कह्यो भीखणजी रा टोळा मूं चंद्रभाण तिलोकचंद दोनूं अपणछदार भाग नीकळ गया। जद श्रावक बोल्या : भीखणजी तो घणे है तो क छवैलो है। जद भाया बोल्या : भीखणजी है

वा साध और माकराई हुंता दीसे है। यां नीकलियो रो लिगार अटकाव नहीं। पछे स्वामीजी उणांनें अवगुण वाद बोलता जाण नें उणा रे लारे लारे विहार कीधो तिण सूं एक पप में सात सो कोश आसरें बाल्यों पड़्या। मेट चूरू ताई पधारया। क्षेत्रां में कठेइ टीप लागी नहीं। उणां दोनां विहार करतां अलक कूड़ कपट कीधा। जिण गाम आवता तिण गाम रो मारग तो न पूछता अनें दूजा गाम रा मारग पूछता कारण लार भीखणजी आवैला तिण मं। पाछै लारे सूं स्वामीजी पधारता अनें लोकां नें पूछता उवे किस गाम गया है। जद लोक कहे फलाणे गाम रो मारग पूछता हा। पछे स्वामीजी पोतारी बुद्धी सूं विचार में देखता उण गामरो मारग पूछ्यो है सा फलाणे गाम गया दिसे है सो तिण हिज गाम चालो। जद साध कहता उवे तो ऊण गाम रो मारग पूछ्यो कहता था अनें आप अठि नें क्यूं पधारो। जद स्वामीजी फरमायो हु जाणूं छूं उयांरी कपटाइ। उण गाम रो मारग पूछ्यो तो उण गाम नहीं गया अठिनें इज गया दिसे है। आगे जाय नें देखता तो वैठा लाधता। अनें कदेइ गोचरी करता मिलता। साध देख में बड़ा आश्चय करता। आप घड़ी तोडी। उवे लोकां रे मका घाले ते ठाम २ स्वामीजी मका मेट निमक किया। श्रावक श्राविका न सुद्ध कर दिया। उणांनें ओलखाय दिया। मोटा पुन्य बड़ो उद्यम किया। भलो जिन मारग दिपाया। चूरू कानी पधारया जद आगे चन्द्रभाणजी तीलोकचंदजी पहिला सिवरामदासजी नें संतोषचंदजी नें फन्दाय नें आहार पाणी भेला कर लियो। पछे स्वामीजी पधारया जद सिवरामदासजी संतोषचंदजी स्वामी जी में आवतां देखनें मत्थन वंदामि कहिनें उभा थया। जद चन्द्रभाणजी कह्यो आपां र यांरे आहार पाणी तो भेलो नहीं नें यें वंदणा क्यूं कीधी। जद सिवरामदासजी संतोषचंदजी बोल्या : आपां रा गुरु है सो वंदना तो करस्यां इज। पछे उणां दोयां मूं स्वामीजी बात करनें समझाया। चंद्रभाण नें ओलखाय दिया। पछे स्वामीजी तो पाछा मारवाड़ पधारया। मारा मूं उणां चंद्रभाण तीलोकचंद मूं आहार पाणी तोड़ दिया। उणां नें आलगा पिण लिया। बोल्या : यां नें जिमा स्वामीजी कहता था त्रिमाइ निकलिया। पछे सिवरामदासजी संतोकचंद जी दानूं मुनम

पणें राखा। उवे दोनूं इ विमुख राखा तो पिण स्वामीजी उणांरी गिणत राखी नहीं। इसा साहसिक पुरुष एकान्त न्याय रा अर्थी। *

१९६

सामजी रामजी पूवी रा वासी। भावगी जातिरा बद। दोनूं भाई वेडारा (जोड़े जनम्या)। उणींयारो सुरत एक सरीखी दिसै। केलवे दीक्षा लेवा आया। जिहां सामजी दीक्षा लीधी सं १८३८ रे वर्षे। पछे थोड़ा दिनां पछे नाथजी दुवारे में खेतसीजी स्वामी घणां वैराग सूं घणां महोच्छव सूं रंगूजी नें खेतसी जी स्वामी एक दिन दिक्षा लीधी। जिन मारग रो उद्योत घणों थयो। पछे थोड़ा दिनां सूं राम स्वामी दीक्षा लीधी। खेतसीजी स्वामी सूं सामजी तो बड़ा अने रामजी छोटा। केतले एक काले साम राम रो टोला कीधो। त्यारा विचरी नें स्वामीजी रा दरशण करवा विहार करने आवे। जद खेतसीजी स्वामी सामजी रे भोले रामजी नें वंदणा करे एक सरीखो उणियारो तिण सूं। जद ते कहे हूं रामजी छू साम जी तो उवे छै। इण मुजब घणी बार काम पड़्यो जद स्वामीजी बुधी सूं कह्यो : रामजी में पहली खेतसीजी नें वंदनां किया करो जद खेतसीजी जाण लेसी छार बाकी रह्या तिके सामजी छै। इसी बुधी स्वामीजी री। *

१९७

कोटावाला दोलतरामजी रे टोले रा च्यार साध स्वामीजी भेला आया। वधमानजी १ बड़ो रूपजी २ छोटो रूपजी ३ सुरतोजी ४। तिण में छोटो रूपजी बोल्यो : मोन ठंडी रोटी न भावे। जद स्वामीजी आहार नी पांती करता ठंडी रोटी ऊपर एकर लाडू मेल दियां। कह्यो : जे ठंडी रोटी छोड़े ते लाडू ही छोड़ देवा। उन्हीं रोटी लेवे तिणरं लाडू न आवे। जद असुकमें आप आपरी पांती उठाय लीधी। कोइन पिण ठंडी उन्हीं बोलवारा काम नहीं। *

१९८

गाम आडण में आमर इच साधां सूं स्वामीजी पधार्या। गाम में एक रजपूत रे बारो। जिहां बोव　　　　आया सा भारामा हींभी

आपसी ले आया। पछे साधां नें पिण लोकां कह्यो आरा मांहीं थी और साध आपसी ल्याया सो वे पिण लेइ आवो। जद साधां कह्यो : म्हानें तो आरा में आणो कल्पै नहीं। पछे साधां आयनें स्वामीजी नें समाचार कह्या जद स्वामीजी आज्ञ्यों पाछी जावां छां कोइ म्हारा नाम अपछंदोइज ले लेवै। इम विचारी नें कनें जाय पूछ्यो थें आरा मांहि थी आपसी ल्याया के नहीं ल्याया। जद उवे बोल्या : थें क्यूं पूछो थांरे म्हारे किसो आहार पाणी भेलो है। स्वामीजी बोल्या थेंई पाछी जावो हो अनें म्हेंई पाछी जावां छां सो ल्याया तो होसो थें अनें कोइ नाम लेवे म्हारो इण वासते पूछां हां सो म्हारा पात्रा तो थें देख लेवो अनें थांरा म्हानें दिखाय द्यो। जद तड़कनें बोल्या : म्हें ल्याया २ नें फेर ल्याया। जद स्वामीजी बोल्या तड़को क्यूं मूं हिज कह्यो नी म्हारे गीत है सो म्हें ल्याया। इम बुद्धि सूं साच बोलाय नें ठिकाणें आया। ※

१९९

स्वामीजी टोला में थकां दरजी रे गोचरी गया। जद दरजी बोल्यो : थांरा चेला काले गुल ले गया सो आज दिन थानें कल्पै नहीं। जद स्वामीजी ठिकाणें आयनें सर्वनें पूछ्या के काले दरजी रे घर सूं गुल कुण ल्याया। पिण सर्व नट गया। पछै स्वामीजी सर्व नें लेय नें दरजी रे घरे आया। दरजी नें पूछ्या गुल ले गया ते यांमें सूं किस्या है सो आलखनें बतावो। जद दरजी जयमलजी रा चेलो रायचन्द बालक हुंतो तिणनें बतायो। जद स्वामीजी तिण नें जाण लियो एहिज गुल ल्याय नें नट गया दीसै है। इम ठागा रो मूल रो उपाड़ कर दियो। ※

२००

पीपाड़ में रा श्रावक मालजी स्वामीजी सूं चरचा करतां स्वामीजी पूछ्या मालजी ! इण कायरा जीव राख्या कांइ हुवै। जद तिण कह्या पाप है। वली पूछ्या रखायां कांइ हुवै। तिण कह्या पाप है। जद स्वामीजी बोल्या : भारमलजी स्यादी साध नें लिखमसी मालजी पाणी पायो पाप कर्यो है। जद मालजी उत्तपछो पाछवा लागा म्हें पाणी पायो

पाप कद कह्यो जद स्वामीजी बोल्या : पाणी अकाया माहैं छे के बारे। जद बोल्यो है हैनें लिखम्यो मती २। इम कष्ट कर न चाल्यो रह्यो। ❀

२०१

सिराडे स्वामीजी विराज्या तिहां रा श्रावक आय प्रश्न पूछ्यो : भीखणजी किणही श्रावक सर्व पापरा त्याग किया तिणनें आहार पाणी बहिरायां काइ हुवे। जद स्वामीजी बोल्या : धर्म हुवे। जद उण कह्यो : थारे तो श्रावक नें दियां पाप री श्रद्धा है थे धर्म क्यूं कह्यो। जद स्वामीजी बोल्या : थे पूछ्या मा प्रश्न सभालो। श्रावक सर्व पापरा त्याग किया, जद ते श्रावक रो साध हुइ गयो। ते साध नें दियां धर्मइज छै। ❀

२०२

स्वामीजी माहि थी नीकली नवा साधपणों पचखवानें त्यार थया। जद कने साध था ज्यांरी प्रकृति देखी। भारमलजी स्वामी रा पिता किसनोजी त्यांरी प्रकृति करड़ी हुंती। आहार बधतो मंगावे। अधिकाइ री रोटी घर्णे सो उतरती लेवे नहीं। चाली न देतो कजियो करै। जद भीखणजी स्वामी नें कह्यो : थारो पिता तो साधपणें लायक नहीं सो परहो छोडस्यां। थारो काइ मन है। जद भारमलजी स्वामी फरमायो : म्हारै तो आप सूं काम है। आपरी इच्छा आवे ज्यूं कराइजे। पछे किसनोजी नें स्वामीजी कह्यो : थारै म्हारै आहार पाणी भेलो नहीं। इम सुणी किसनोजी बोल्या : म्हारा बेटा नें ले जासूं। जद स्वामीजी बोल्या : ऊ न आवे तो उणरी इच्छा। जद जबरन भारमलजी स्वामी में लमनें दूजी हाट जाय नें बैठा। आहार पाणी त्याय में करावा लागो। जद भार मलजी स्वामी बोल्या : हूं तो न करूं। नित्य धार्म पिण करै नहीं। तीजो दिन आया जद घणी मनुहार करवा लागा जद भारमलजी स्वामी कह्यो : थांरा हाथ रा आहार करवारा जावजीव त्याग छ। पछ भीखणजी स्वामी में आय सूंप्या। बोल्या : आ ती थांनूं इज राजी है। थां कनें इज राखो। थें नवी दीक्षा न लीधी है जितरे म्हाराइ ठिकाणों बांधो। जद स्वामीजी

ठेआय नें खेमळजी न सू प्या। जद खेमलजी बोल्या देखो भीखणजी री बुद्धि। किसनोजी नें म्हानें मूंपतां तीन घर बधापणां हुवा। म्हें तो जाणो म्हारे चला पानें पड़्या। किसनोजी जाणें म्हारो ठिकाणों बण्यो। भीखनजी थुमे म्हारा दलिद्र टल्यो। पछे केतले एक काले किसनोजी आदि दाय साथ आरा मांहीं थी लापसी स्याय न चूकाय न विहार कीधो। मारग में तृपा घणी लागी। लापसी खायाड़ी अनें उन्हाले रा दिन। तृपा घणी लागी ना सहन करी पिण काचो पाणी न पीधो। आउखा पूरा कर गयो। आरा मांहि थी लापसी स्याया सा तो उणां रा टाला री रीत है पिण नम में दृढ़ रह्यो। काल कर गयो पिण काचो पाणी पीधो नहीं। ॐ

२०३

स्वामीजी कनें अथवा माधा कनें ठाक बखाण सुणवा आवे। त्यानें वरजे। जद स्वामीजी दृष्टान्त दियो। जिनश्रख जिनपाल नें रणा दवी तीन बाग तो बरज्या नहीं अनें दक्षिण ना बाग बरज्यो। भूंड पाली सप लावारा मय बतायो। नाम्यों दक्षिण रा बाग जामी सा मानें ग्रासी जाणस्ये। त्यागा रा उपाड़ हाय जासी। यू जाणनें दक्षिण मों बाग परग्या। ज्यू धाइम टाला धारासी गच्छ तीन मो प्रसठ पालंड स्यारे जाता ता विगय न बरजे अनें शुद्ध माधा कनें जातां बरजे। कारण भीखणजी कनें गया म्हांनें खाटा जाण लेसी। उप म्हारा श्रावक उरहा रूमी तिमम् बरज। ॐ

२ ४

मधा लाधा नें माधा मू भिड़काय। जद स्वामीजी वास्या : आगें भगू पुरोहित पिण बटांन भिड़काया। कथा माधा रा विरयाम कीध्या मतीं। पार कह्या थी बटां पिण माधां न खाटा जामें। पछे माधां सू मिल्या जद बाप नें खाटा जाण नें दीसा लीधी। जिम पिण माधां में खाटा कद। पिण उत्तम जीव हुवे त माधां री मगत करनें त्यानें आलगीनें टाय आये। ॐ

२०५

आछा २ क्षेत्र देखनें थाणें बेसै। जद स्वामीजी बोल्या : थाणें न बसै, खाणें बेसै छ। असल थाणों तो अमीचंदजी रो सो सेंतालीसै मारवाड़ में बिखो पड़्या जद दूजा ठाणांवाला तो चोमासा में पगां २ विहार कर गया अनें अमीचंदजी तो चोमासा में पीपाड़ सूं पयूंषणा में भादवा बिद १४ नें रात रा बाजरी रा गाड़ा ऊपर बेसीनें गया। मारग में तृषा लागी जद काचो पाणी अलगाव पीधा। ते पिण आट रा हाथ रो। तिण सूं खरो थाणों अमीचंदजी रो सो पगे न हाल्या। ॐ

२०६

किणही स्वामीजी नें कह्यो थें अनें बाइस टोला एक होय जावो। जद स्वामीजी पूछ्यो थें अनें आछी जाति गियारादिक भेला हुवो के नहीं। जद ते बोल्यो : नहीं हुवां। जद स्वामीजी बोल्या तिम हिज म्हे अन ~ भेला न हुवां। आछी जात ते महाजन रे घरे जनम लियां इज महाजन हुवे। ज्यूं ~ ~ नें पिण सम्यक्त्व साधपणों आयां इज भला हुवां ॐ

: २०७

रा श्रावक बोल्या पडिमाधारी श्रावक नें सूजता आहार पाणी दियां कांइ हुवे। जद स्वामीजी बोल्या : कोइ नें काचो पाणी पावै तथा मूला खवाव तिण नें थे कांइ सरधा छा। जद ते बोल्या : म्हानें तो पडिमाधारी कोइज बतावो। बीजी बात में तो म्हे न समझां। जद स्वामीजी दृष्टांत दियो कांइ बोल्या मोनें कीड़ी कुंथुवा दिखावो। जद तिण नें पूछ्यो तो नें हाथी दीसे छे क नहीं। जद ते बोल्या क हाथी तो मानें दीसें नहीं। जद तिण नें कह्यो हाथी पिण तानें न सूझ तो कीड़ी कुंथुवा किम नर सूझसी। ज्यूं जीव खवाया में पाप ते पिण थें न जाणो तो पडिमाधारी नें असन सेवाया पाप धार किम कम। आ परखा तो घणी झीणी है। ॐ

२०८

केइ कहे पोथी आगणे मेल्णी नहीं। पूठ देणी नहीं। पोथी पाना सो ज्ञान है। तिणरी आशातना करणी नहीं। जद स्वामीजी बोल्या पोथी पाना नें थें ज्ञान कहो छो तो पोथी पानां फाट गया तो कांइ ज्ञान फाट गया। अथवा पोथी पानां सिड़ गया तो कांई ज्ञान सिड़ गयो। पानां उड़ गया तो कांइ ज्ञान उड़ गयो। पानां बल गया तो कांइ ज्ञान बल गयो। पानां चोर ले गया तो कांइ ज्ञान नें चोर ले गया। पानां तो अजीव है। अनें ज्ञान जीव है। अक्षरां रा आकार तो ओलखणे रे वास्ते छै। पानां में लिख्या त्यारो जाणपणो ते ज्ञान है। ते आतमा छै। आपरे कनै छै। अनें पानां अनेरा छ। ※

२०९

गृहस्थ्यां ने कहे अनेरां ने अन्नादिक दीधां पुन्य है तथा मिश्र है। जद गृहस्थ बोल्या थांरे आहार बध्या थे अनेरा ने देवा के नहीं। जद ते कहे म्हें तो न द्यां। म्हांने कल्प नहीं। म्हें देवां तो म्हांरा साधपणों भागे। अनें थें अनेरा नें देवा तिणमें थांने पुन्य है तथा मिश्र है। तिण उपर स्वामीजी दृष्टान्त दियो जिको कायरो बाल्यां हाथी उड़ जाय तो रूइ री पूणी क्यूं नहीं उड़। अवश्य उडै इज। ज्यूं साधू सूं अनेरा ने दान देवा थी साधु रो व्रत भागे तो गृहस्थ नें पाप क्यूं नहीं लागे। लागे इज। ※

२१०

हिंसाधर्मी कहे हिंस्या बिना धर्म नहीं हुवे। बलि दृष्टान्त इम कहे : च्यार श्रावक था तिण में एक जणें तो अग्नि आरंभ रा त्याग किया। अनें एक जणे न कीधा। च्यारूं जणां पड़म पड़म रा पिणा लिया। मागन न कीधा तिण सा सघलें भूगड़ा कीधा। अनें मागन कीधा ते कोरा पिणा पाय राख्या छै। इतले मासखमण रे पारणें मुनिराज पधारया। सा जिणरे त्याग नहीं तिण तो भूगड़ा वहिरायनें तीर्थकर गोत्र बांध्या। अनें त्यागवाला पटा शुल्क जोय। कांइ वहिरावे। इम न्याय हिंसा

री धर्म हुवै। अनें हिंसा विना धर्म न हुवै। इम कहै तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो — दोय श्रावक हुंता। तिणमें एक श्रावक तो जाव जीव लगै शील आदरयो। अनें एक अनें कुशील ना त्याग न किया। परस्त्रीजीमा। पछै तिणरै पांच पुत्र थया। मोटा हुवा। धर्म में समझ्या। वैराग आयो। दोय बेटानें हरख सूं दीक्षा दीधी। घणो हरख आयो तिण सूं तीर्थंकर गोत्र बांध्यो। थे हिंस्या में धर्म कह्यो सो थारे लेखै कुशील में पिण धर्म ठहरयो। हिंसा विना धर्म नहीं तो कुशील विना पिण धर्म नहीं थारे लेखै। इम कह्यां कष्ट थया। पाछो जाब देवा असमर्थ। ॐ

२११

कोइनें बरी न करणों। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो : ई रे काइ बरी। जद संसार में तो कहै वेनी उधारो। अनें धर्म लेखै ई रे काइ बैरी तो कद पूछै नों करली चरचा। करली चरचा पुछयां जाब न आव जद आपई बरी हुवै। ई र कोइ बरी तो कहे काढेनी लूंघणों। लूंघणों काढ्या आगला नें दागी लागै जद क्रोध में आयनें आपई बरी हुवै। ॐ

२१२

भीखणजी स्वामी नें किणही कह्यो। आप तो पुराना हो। बर्षा में घणा हो सा पड़िकमणा बठा इज करो। इतरी सद क्यां नें करो। जद स्वामीजी बोल्या : म्हें जो पड़िकमणा बठा २ करां तो लारला सूता २ करवारा टिकाणा द। ॐ

२१३

पुर मांहे स्वामीजी फरमायो दश प्रकार श्रमण धर्म। जद अर्चंद बीरजी बोल्या महाराज! दश प्रकारे यति धर्म। जद स्वामीजी फरमायो भलाइ महात्मा धर्म कहामी। ॐ

२१४

काइ साध धार उपगार पक पिण नीत में फरक नहीं तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो धान रा कुणका पडूया देखन किणही साध में

गुरां कह्यो। ओ धान रो कुणका पड्या है सो पग मील्यो मती। जद तिण कह्यो : स्वामीनाथ ! को दवू नीं। थोड़ी वार थी फिरतो २ आयनें पग दे दीधो। जद गुरु बोल्या धान इण ऊपर पग दयो वरज्यो थोनी। जद ऊ साध बोल्यो स्वामीनाथ ! उपयोग चूक गयो। अब दूजी वेलां फेर फिरतां २ पग दे चाल्यो। वलि गुरां निषध्यो, आगे थानें वरज्यो थानी। जद वले बोल्यो : महाराज ! उपयोग चूक गया। जद गुरु बोल्या : अबै पग लागे है सो सवेरै विगेरा त्याग है। थोड़ी वेला सू फिरतां २ वले पग दे दियो। इम उपयोग चूक नें वार २ पग लागो तो पे कुणका उपर पग देवायी नें विगै टालवा थी राजी नहीं। पिण उपयोग में खामी है। नीत सुद्ध है दोषा री थाप नहीं तिण सू। नीत साफ पिण उपयोग चूकै कर्मा ना उदय थी तेहथी असाध न हुवै। अनें माहनां उदय थी जाण २ नें दोष सेवै दोष री थाप करै दोष रो प्राय रिचत पिण न लेवै तिणसू असाध हुवै।

२१५

किणही पूछ्यो थारे नें बावीसटोला वाला रै काइ फेर? जद स्वामीजी बोल्या एक अक्षर रो फरक। एक अकार नो फेर। साध रै अन असाध रै एक आगार रो फेर है। तेहीज म्हारे न थारे फेर है।

२१६

काइ थानक रै अर्थे रुपिया उगरै। जद स्वामीजी बोल्या : ए रुपिया थानक में रहै ज्यांराईज जाणवा तिण ऊपर दृष्टान्त असमझिया गढ़ में इतरा गामीनां रो भभीनो गढ़पतिना हीज जाणवा। ज्यू थानक रै अर्थे रुपिया तो पिण परिग्रह थानक में रहै ज्यांरो हीज जाणवा।

२१७

हेमजी स्वामी लिखणा करता हा। स्वामीजी नें पाना बताया। आल्या गाली दूरलें स्वामीजी बोल्या करमांरी हुन गढ़ न पिन पाना पाधरो करै है। मा आल्या बाकी क्यू लिखी। आल्या पाधरो लिखणी। जद हेमजी स्वामी बोल्या : तहत स्वामीनाथ !

२१८

स्वामीजी कनें एक ब्राह्मण आयनें पूछ्यो साधां व्याकरण भण्यां हो। स्वामीजी बोल्या म्हैं तो व्याकरण कोइ भण्यां नहीं। जद ब्राह्मण बोल्यो : व्याकरण भण्यां बिना शास्त्र ना अर्थ हुवै नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : थें तो व्याकरण भण्यां हो। जद ऊ बोल्यो हुं तो व्याकरण भण्यो छूं। थें शास्त्र नां अर्थ कर लेवो। जद ऊ बोल्यो : हुं तो शास्त्र नां अर्थ कर लेवूं। जद स्वामीजी पूछ्यो कयरे मम्मो अक्खाया इणरा अर्थ कहो। जद ऊ ब्राह्मण बोल्यो : कयरे कहतां केर। मग्गो कहतां मूंग। अक्खाया कहतां आखा न खाणा। जद स्वामीजी बोल्या : ओ तो अर्थ आमो नहीं। जद ऊ बोल्यो : इणरा अर्थ किम छै। जद स्वामीजी बोल्या : कयरे कहतां किसा। मम्मो कहतां मोक्ष रा मार्ग अक्खाया कहतां तीर्थंकरे कह्या। एहनों अर्थ इम छै।

२१९

संवत १८५४ स्वामीजी ८ साधां सूं खारवे चौमासो कीधो। तिहां पजूसणां में कनक श्रावक गच्छ वास्यां कनें सुणवा गया। उपाश्रय वखाण सुणनें पाछा स्वामीजी कनें आया नें कहिवा लागा : स्वामीनाथ आज उपाश्रय वखाण सुणियो तिणमें इसी बात वांची : कुर्मापुत्र केवल ज्ञान ऊपना पछ ६ मास राज कीधो। पछै ९ साध ऊभा वंदना न करी। जद कुर्मापुत्र बोल्या : म्हानें केवल ज्ञान ऊपनो है नें थें वंदणा न करो सो किण कारण। जद साध बोल्या : आप केवली छो पिण लिंग गृहस्थ नो छै तिण कारण आपनें वंदणा म्हैं न कीधी। जद कुर्मापुत्र बोल्या : ठीक कही। अमे जाणीयों। आ बात आज उपाश्रय सुणी सो साची है कांई। जद स्वामीजी बोल्या : आ बात साची जाणै जिणमें सम्यक्त्व नहीं। राज करै ते तो मोह कर्म रा उदय थी कर। अनें केवली मोह कर्म नें क्षय किया। सो पछै केवली थया पछै राज किम करै। आ बात वांचणवाला में तो सम्यक्त्व प्रत्यक्ष न दीसै। पिण था सुणवा वालां री पिण संका पड़े है। इम कहे समजाय दियो।

२२० :

केलवा में नगजी आम्यां अणसम श्रावक हुवो। बुद्धि घणी कोइ नहीं। वीरमाणजी कह्यो म्हें नगजी नें समदृष्टी कीधो। जद स्वामीजी बोल्या : समदृष्टी आवै जिसी तो उणरी बुद्धि दीसै नहीं सो समदृष्टी किसतरै कीधो कांइ सीखायो। जद वीरमाणजी बोल्या : ओलखणा दोहरा भव जीवां रा काढ सिखाइ। अनें एक नंदण मणीयारा रा वखाण सीखायो। पछै केलवे स्वामीजी पधारया। नगजी नें स्वामीजी पूछ्यो सू नंदणमणीयारा नो वखाण सीखयो है सो थो मणीयो लकड़ा रा है कै सोना रो है कै रुद्राक्ष माला रा है। जद नगजी बोल्यो : शास्त्र में चाल्या है सो मणियो सोना रो हुसी लकड़ा रो रुद्राक्ष रा कीकर हुसी। वलि स्वामीजी पूछ्या : रे नगजी सावत्थीयां म जङ्गा चाल्या। सो ए वावीयां गाडुलिया लोहारां नी छोटी वावीयां है कै बीजा लोहारां नी मोटी वावमणि है सो मोटी वावीयां है। जद नगजी बोल्यो : मान्हा वावीयां क्यानें हुवे महाराज शास्त्र में कह्यो है सो वावीयां मोटी हुसी। पछै स्वामीजी मन में जाण लियो सो बुद्धि विना सम्यक्त्वी किम हुवे। वीरमाणजी सम्यक्त्वी कियां केहता सो बात कची ठहरी। *

२२१

कदे कायनें रुपिया दियां उणरी ममता उतरी तिण रो धर्म हुवो। जद स्वामीजी बोल्या : किण र वीस हल री खेती २ बीघां री खेती हुंती सो १ बीघा तथा १० हल री खेती किण ही ब्राह्मण में दीधी तो उण रै हेलै या पिण ममता उतरी। ओ पिण धर्म तिणरै लेखे कहिणो। *

: २२२ :

पाली में हीरजी जती स्वामीजी कनै आया जद स्वामीजी कने पधार्या जद मायें २ जाय। ऋषी २ बात्या पूछे। तिण री श्रद्धा हिंसा में धर्म १। सम्यक्त्वी न पाप न लागे २। सब जगत रा जीव मार्या एक समों संसार वधे नहीं ३। सब जीव नीं दया पाल्यां एक समों संसार घटै नहीं ४। होणहार हुवे सु हुवे

करणी रो काम नहीं केवली देख्यो जद मोक्ष पर हो जासी ।। इत्यादिक विरुद्ध श्रद्धा स्वामीजी कनै कही। जद स्वामीजी पाछो जाब दीयो नहीं। मारग चालतां न बोलणो जिण कारण। जद हीरजी बोल्या : म्हें कही जिका श्रद्धा थारै पिण बेठी दीसै छ जिण सूं थे पाछो जाब दीधो नहीं। जद स्वामीजी बोल्या कोइ मूंड्यूं रो भिष्टो खावो हो। साहुकार दिशा जावो सेहजे दृष्टि पड़ी देखनें मूंडमूंरा बोल्यो : साहजी री पिण मन हुआ दीसै है। म्यूं थें पिण चाखो हो। पिण आ थारी असुद्ध श्रद्धा भिष्टा समान खाणा में सो मन करनइ वोछा नहीं।

: २२३

एक दिन हीरजी प्रश्न विपरीतपणें पूछवा लागो। कहै मानें इणरो जाब देवो। जद स्वामीजी बोल्या कोइ भिष्टा सूं भरीयो ठीकरों लेइ आवो। कहै इणमें मानें घी तोल दो। सो असुद्ध भासण में घी कुण घाले। म्यूं असुद्ध जाणें विपरीत हुवे तिण नें शुद्ध जाब बतायां गुण दीसे नहीं। जिण सूं अबारू जाब न देयां।

: २२४

वैरागी री बाणी सुण्यां वराग आवै। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो : कस्यूंबो पानें गलै जद वस्त्र रै रंग चढावै। पिण कस्यूंबा री गांठ बांधे तो पिण वस्त्र रै रंग न चढ़े पोते न गल्यां विण मूं। म्यूं मुद्ध श्रद्धा आचार बल वैरागी साधु पोते वैराग में लीन हुआ औरे वैराग चढावै।

२२५

कोइ कहै साधु रा धर्म और नें गृहस्थ रा धर्म ओर। जद स्वामीजी बोल्या चौथा गुण ठाणा री अनें तेरमा गुण ठाणा री श्रद्धा तो एक छै। अनें फरशणा जुदी छै। काचा पाणी में अपकाय रा असंख्याता जीव अनें नीलण रा अनंता जीव चौथा छ्गा तरमा गुण ठाणावाला सब सरधै परूपै। पिण फरशणा में फर। चाथा पांचमा गुण ठाणा रा धणी तो पाणी रा आरम्भ कर है। अनें साधु र त्याग छ। ए फरशणा जुदी है। हिंसा में पाप चौथा छ्गा तरमा गुणवाला सब सरध परूपै। इण लेखे सरधणा तो

एक। अनें श्रावा पांचमां वाला हिंसा करै है अनें साधु र हिंसा रा त्याग है। ए पचखाणा जुदी है। पिण सरधणा जुदी नहीं। श्रावा तेरमां गुणठाणा वाली री सरधा एक छ। तेरमा गुण ठाणावाला री श्रद्धा सू फरक पड्यां चौथा गुणठाणा रो पहले गुण ठाणें श्राय श्रावै। ❀

२२६

रायण में स्वामीजी सालभद्र रो वखाण दीधा सो श्राया सुण नें घणां राजी हुआ। स्वामीनाथ आगें सालभद्र रो वखाण तो घणी वार सुण्यो पिण इण रीते तो श्रागें सुण्यों नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : वखाण तो उहीज है पिण कहिण वाला रे मूंढा म फेर है। ❀

२२७

किणही पूछ्यो पोसा वाला नें श्रागा दीधी जिणरो कांइ हुवें। जद स्वामीजी बोल्या : उण कह्यो म्हारी श्रागा में पासो करो इम कहिण वाला नें धम। जद फेर पूछ्या श्रागा दीधी जिण में कांइ हुवा। जद स्वामीजी बोल्या श्रागां किसी श्रापी दीधी है। श्रागां में पोसा री श्राज्ञा दीधी जिण रा धर्म है। श्रागां तो परिग्रह मांहि छ ते सेव्यां सेवायां धम नहीं। सामायक पोसारी श्राज्ञा दवें ते धम है। ❀

२२८

कोइ कहै सामायक में पूंजनें खाज खणे तो श्रावक नें धर्म है। बिनां पूंज्यां खाज खणें तो पाप लागें। जद स्वामीजी बोल्या : कीड़ी माछर सामायक में चटका दियो ते चटका खाया र दिया क सामायक रे दियो। जद तिण कह्यो : चटका खाया र दिया। जद स्वामीजी बोल्या : पूंज नें खाज खणे है सो श्रावता सामायक रा करै है क खाया रा करे है। जद उण ऊंधी श्रद्धा सूं कह्यो श्रावता सामायक रा करै है। जद स्वामीजी बोल्या : खाज न खणवो तो ही समायक रा श्रावता तो श्रपूरा घणां हुता। जे बिनां पूंज्यां खाज खणवारा त्याग। श्रा पूंजै नहीं तो खाज खणणी नहीं। खाज न खणै तो मछरादिक ना चटका सह्यां निर्जरा घणी हुती। तिण सू सामायक घणी पुष्ट हुती। तिण कारण पूंजे तो

सामायक रा आवता रे अर्थे न पूंजे। अने जे पटको कायारे दियो पिण सामायक रे न दियो इम तो तेहिज कहे। तो काया रा आवता रे अर्थे शरीर पूंजे न आज अर्थे छे। पिण सामायक रा आवता रे अर्थे पूंजे नहीं। जे अढाई द्वीप बारला तिर्यंच श्रावक सामायक पोसा करे ते किसी पूंजणी राखे छे। अनें सामायक रा आवता तो त्यांरे पिण हीला छे। अजेणा न करे ते हीज सामायक रा आवता छे।

२४९

पोसा में श्रावक कोइ तो वस्त्र घणा राखे कोइ थोड़ा राखे। घणा राखे तिण रे घणी अव्रत। थोड़ा राखे तिण रे थोड़ी अव्रत। जद कोई कहै पोसा में पड़िलेहण न कर तो उणनें प्रायश्चित्त क्यूं देवे। जद स्वामीजी बोल्या: पोसा में अण पड़िलेह्या उपगरण भोगवण रा त्याग। तिण पड़िलेह्या तो नहीं अनें भोगव्या तिण लेखे त्याग भागा। तिणरो प्रायश्चित्त आवे। पोसा में पिण शरीर अव्रत में है। ते शरीर नी साता रे अर्थे वस्त्रादिक भाषा पाथा पूंजणादिक करे ते सावद्य छे। जे वस्त्र राख्या तिणरो पड़िलेहण न करे अनें न भोगवे तो विशेष कष्ट उपजे तिण सूं पोसो अपूठो पुष्ट हुवे। ते कष्ट सहिण री समर्थाई नहीं, तिण सूं वस्त्रादिक पड़िलेही भोगवे छे। जिम कोइ रे अण छाण्यो पाणी पीवा रा त्याग। हिवे ते पाणी छाणें ते पीवा रे वासते पिण दया रे वासते नहीं। नहीं छाण तो दया अपूठी चाखी पाले। ते किम। जे न छाणे जद पीणो नहीं। ज अणछाण्यो पीवारा तो त्याग अनें छाणे नहीं तो पीणो पड़ई नहीं। इण वासते जे छाण ते पाता री अव्रत सेवा रे वासते छाणे। तिण में धर्म नहीं।

२५०

केई कहे श्रावक री अव्रत सींच्यां प्रत घटे। तिण ऊपर कुहेतु लगावे: नींबरा रूंख में आंबो रूंख ऊगा। नीम री जड़ीया में पाणी कूंड्यां नींबन आंबो दोनूंई प्रफुल्लित हुवे ज्यूं श्रावक री अव्रत सींच्यां व्रत अव्रत दोनूं वधे। जद स्वामीजी बोल्या: इम अव्रत सींच्यां व्रत वधे तो तिण रे लेखे

श्रावक स्त्री सेवै तिण पिण अव्रत सेवी तिण सू व्रत पुष्ट हुवै। यथा नीवरी जड़ीया में अग्नि न्हास्या दोनू बलै ज्यू किणहि आयजीव शील आदर्यो तो अव्रत बाली तिण रै लेखै व्रत अव्रत दोनू बलै। यथा गृहस्थ ने पारणो करायो अव्रत सींची तिण सू व्रत घटती कहै तो तिण रै लेखै उपवास करायो अव्रत सूकी व्रत पिण सूक जावै। इम हिंसा झूठ चोरी मैथुन परिग्रह सेव्यां सेवायां अव्रत सींची तो उण र लेखै व्रत पिण वधती कहिणी। तथा हिंसा झूठ चोरी मैथुन परिग्रह रा त्याग किया करायां अव्रत सूकै तो तिण रै लेखै व्रत पिण सूकी कहिणी। ॐ

२३१

कद कहै सावद्य दान में पुन्य पाप मिश्र न कहिया तिण सू सावद्य दान में म्हे मून राखां। जद स्वामीजी मुनी रो दृष्टान्त दियो। ग्यू एक मुनी गाम में आयो। साथे मोकला चेला। आटा घी गुड़ मूढ़ा सू बोलन तो मांगे नहीं पिण सानी करनें मांगै। आंगुलियां ऊंची करै इतरा सेर आटो इतरा सेर घी इतरी दाल इतरा गुड़। जद गाम रा चौधरी पटवारी आछो भामै जद चला नें हुंकारो करनें घर हाटां रा केस फाड़ावै। जद लोक बोल्या

मुनि मून पारसी मधे हुंकारे पट कया हवै।
अण बोल्याई उदम करे, तो बोल्या कहो काह गति करै॥

स्वामीजी बोल्या : जिसी उण मुनि री मून जिसी सावद्य दान में थांरै मून है। मूढ़ा सू तो मून कहिता जाए पिण श्रावक श्राविका नें सीखायां पुन्य मिश्र री भामना करै। साधुआं री दया पलावा री भामना करै। ॐ

२३२

पाले हाथ ना कमाइ जद उपाड़ अनें गृहस्थ गालनें दवै ता लव नहीं तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टान्त दियो जिम कोइ मानवी पर गाम जातां भंगी भींट लियो। उमनें पूछ्यो तू कुण। जद तिण कह्यो हू भंगी छ। जद तिण कह्यो म्हारो भावी भींट लियो। इम कहितां मांहो मांहि

गालि राखि बोलतां चलोचल भाग गया। भगी ऊपर आय बैठो। भगी कहै मान छोड़। जद ऊ कहै छोड़ूं नहीं। जद भगी कहै तूं कहै ज्यूं करूं मोनें छोड़। जद ऊ बोल्यो थारी स्त्री कनै चौको दराय कोरा घड़ा में पाणी मंगाय महाजन रा हाट सूं आटो लेई इसी री इसी रोटी कराय देवै तो छोड़ूं। जद भगी कबूल करी। उण कह्यो जिण रीते स्त्री कनें रोटी कराय दीधी। जे समजणो हुवै ते उणनें मूरख जाणै। जे भगी री भींटी तो न खाधी नें भगी री कीधी खाधी तिण सूं उणनें विवेकरो विकल जाणै। ज्यूं गृहस्थ कमाड़ खोलनै देवै ते तो लेवै नहीं अनें अंधारी रात्रि में हाथ सूं कमाड़ जड़ उघाड़ै तिण री संक आणै नहीं। ॐ

२३३

केई कहै कारण पड़ियां साधु नें असूझतो देणो। अनें श्रावक नें तिण अल्प पाप बहुत निरजरा है। जद स्वामीजी बोल्या : रजपूत रो बेटो संग्राम करतां न्हासै जाय ते सूर किम कहीजे। तिण नें राजा पटो किम खावा दे। लोकीक में आबरू किम रहै। भूंडो दीसै। ज्यूं भगवंत रा साधु बाजै नें कारण पड़ियां असूझता लियां अल्प पाप बहुत निरजरा कहै असूझता री थाप करै ते इहलोक परलोक में भूंडा दीसै। ॐ

२३४

हलुकर्मी जीव खोटा गुरु छोड़नें साचा गुरु करै। जद सबा स्यांरा रा श्रावक कहै : पाली में बिरधीचंद पञ्चो रुपीया देईनें श्रावक करै है। जद स्वामीजी बोल्या : थांरा श्रावक रुपिया साटै परहा जावै जद उणां थांरो मारग कांई ओलख्यो। अनें रुपिया साटै ए समझ्या कहो तो बाकी रा पिण रुपिया साटै परहा आता दीसै है। इण लेखै थांरो मारग उणां ओलख्यो नहीं। ॐ

२३५

सावद्य दान देवे लेवे ते वेलां साधु नें पूछे तो वर्तमान काल में मून राखणी तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टान्त दियो : हलवाणी रा छकड़ा दामू

कानी चले अनें वीपे ठली। उठी सूं पकड़्या हाथ चले नें दूजा छेहड़ा सूं पकड़े तोही हाथ चले। बिचासूं पकड्यां हाथ न चले। ज्यूं वर्तमान काले सावद्य दान में पुण्य कह्यां छ काय री हिंसा लागे। पाप कह्यां अंतराय पड़े। तिण सूं ते काल में मून राखणी। ❀

: २३६

कोई कहे भगवान नीलोती ख्याना नें बणाई है। जद स्वामीजी बोल्या थारे लेखै नाहर आयां तूं बच न्हासे। तोनेंइ भगवान नाहर रा भक्ष बणाया है। मा थारे लेखै नाहर नें भगवानें तोनेंइ बणायो। जद ऊ बोल्यो : म्हारा जीव तोहरो हुवे दुःख पावै। सब जीव पिण इम हीज जाण। मारयां दुःख पावै छ। ❀

: २३७

हेमजी स्वामी दीक्षा लेवा त्यार थया जद किणही गृहस्थ स्वामीजी नें कह्यो : महाराज हेमजी दीक्षा लेवा त्यार थया पिण तमाखू रा व्यसन है। जद स्वामीजी बोल्या कायरीयां री अटक्यां किसा विवाह रहे है। ❀

२३८

पुर में हाजू स्वामीया स्वामीजी कनें आयन आयुगद तीर्थ ताजा का ढाल कहिवा लागो। तिण में गाया। आपूगद तीर्थ नहिं जुहारयो। तिण एहस जमारो हारयो। जद स्वामीजी बोल्या आपूगद थें जुहार्यो क नहीं जुहार्यो। जद हाजूजी बोल्या महाराज म्हे तो आपूगद काई जुहार्यो नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : इण लेखे थांरा जमारा रा गम ईज गयो। जद हाजूजी बोल्या : बापजी म्हारा गम्मा में ईज घाली। ❀

२३९

पुर मांहे मानो स्वामीरी स्वामीजी कनें आय बोल्या महाराज भीलाड़ा में न्हा पाणी। गाम नदियां रा पचपान मुसमुसीया आदि देता तिण में १६ जना धूपाय गया। बरसाद बधिया मा आपन रा नदी में न्हाग मसर गमोर गया। जद स्वामीजी कह्यो : थूं कदे कोई इमा मानतना करै है या

खातां किसोयक अनर्थ कीधो हुवैला। जद मानो स्वामीजी बोल्या म्हारे साथे पर्व पाखेक रो बाबरी थो सो उणनें तो हाथ पकड़ उठाय दियो। काले ओ कीसो उपवास करेलो इस कहि बाबडा नै उठाय दियो। जद स्वामीजी बोल्या थे तो इसो आहार कियो है सो स्त्रीयादिक थी अकार्य ही कर उमो रहे अनें डावडो सो इसो काम करतो नहीं। सा तो दोनें पोप्पां ने उम न उठाय दिया सा इसो थांग धर्म ने इसी मारी क्या है। *

२४०

मीखनजी स्वामी रुघनाथजी कनें घर छोड़वा त्यार थया। जद स्वामीजी री मूआ बोली। दीक्षा लीधी तो हूं कटारी खायनें मर जामूं। जद घर में हता स्वामीजी बोल्या : पूणी नहीं है सो पेट में भाले। कटारी घणी करली है सा इसी बात क्यूं करे। *

: २४१

कई मह २ टोला एक हा। अनें मीखनजी न्यारा है। जद किणही कह्यो थारे माहों माहि बणे नहीं नै मीखणजी सूं चरचा रा काम पड़यां एके क्यूं थावो। जद बोल्या रजपूता रे मायां २ रे वा माहों माहि बणे नहीं पिण चार ने काढ़णा सब एके होय जावे। ए बात स्वामीजी सुणी ने दृष्टांत दियो। वास रा कुत्तां माह माहि तो कजियो। उण वास रा कुत्ता दूजा वासवाला में आवा द नहीं। दूजा वासवाला स्वान उण वासवाला नें आवा द नहीं आपस में माहों माहि कजिया घणा कर। अनें हाथी नीकल्यां मगला भेला होय नै भूसवा लाग जावे। त्यां स्वान र माहों माहि कद ण्को थो। पिण हाथी री बेलां सब एके होय जावे। इसो स्वान रो स्वभाव। ज्यूं माहों माहि वबे तो उणां री मढ़ा गाली कद। उप उणां री मढ़ा गाली कर्द। माहों माहि अनक वालां रा पत्र आपस में थयक साथ पिण न मरचे। अनें साधां सूं चरचा रा काम पड़े जद स्वान ज्यूं एके होय जावे।

२४२

मारवाड टाला में केयक ता छान वाली ठडी राटी में बेंद्री जीव थई।

न्हानीं सी एक टोपसी।
माहैं घाल्यो सपेतो।
जल्य धपाकर राखजो।
नहीं तो पड़सा रेतो ॥१॥

ए गाथा जोड़ता बोल्या : यूं जोड़ा ला। जद प्रतापजी सुणनें घणो राजी हुओ।

: २४५

श्री जी दुवारा में झूपना रे अर्थ एक दादुपंथी आयो। स्वामीजी रो वखाण सुणनें घणो राजी हुओ। सुणतां २ एक दिन स्वामीजी नें कहै। आप श्रावकां नें कहो सो मोनें साता उपजावै। जद स्वामीजी बोल्या : श्रावकां नें कहिन तोनें जीमावो आवै पात्रा माहिं घी काढन देवो। गृहस्थ नें कहियो हुवै तो गोच्यां बणती बहिरनें ईज तोनें पराही देवा। जद दादु पंथी बोल्या : तो थांरे भला लोकां नें बरजवारी नें कहिवारी है। जद स्वामीजी बोल्या :। देवा नें ना कह्यां आवै थांरो खोसस्यो। पछै दादुपंथी चाल्यो गयो।

: २४६ :

पोता नीं महिमा वधारवा कूड़ सूं बोलै ते ओलखायवा अर्थे स्वामीजी दृष्टांत दियो : किणही बेलो कियो। ते आप रो बेलो चावा करवा उपवास वाला रा गुण करै : तूं धन है सो इण करली ऋतु में उपवास कियो है। जद उपवासवालो बोल्यो : म्हैं तो उपवास ईज कियो है। पिण थे बेलो कीधा है सो थांनें धन है। इम कूड़ वचन करी आप रो बेलो चावो करै ते मानी अहंकारी जाणवो।

: २४७ :

रुघनाथजी री मा पिण घर छोड़नें ज्यां में भेष लियो हुंतो। सो दील में कारण पड्यां। जद रुघनाथजी बोल्या : भीखणजी संसार रे लेखै म्हारी मा नें दरसन दीजो। जद स्वामीजी दरसण देवा गया। थानक आयनें त्यां आर्यां नें पूछ्यो। जद आर्यां कह्यो : उवै तो गोचरी गया। जद

स्वामीजी पाछा आया। जद रूगनाथजी कह्यो थें दरसन दियो। जद स्वामीजी बोल्या : किसी ठीक। किण भेषी ऊपर गोचरी करें। सो हूं क्यू दरसन द्यूं। आ बात टोला मांहि प्रसिद्ध छै। ❀

२४८

भेषधारी हिंसाधर्मी कहे : एकेंद्री थिकी पंचेंद्री रा पुन्य घणा तिणसूं एकेंद्री मार पंचेंद्री बचायां धर्म घणो हुवै। जद स्वामीजी बोल्या : एकेंद्री थी बेंद्री रा पुन्य अनंत गुणा। बेंद्री थी तेंद्री रा पुन्य अनंत गुणा। चउरेंद्री थी पचेंद्री रा पुन्य अनंत गुणा। अनें कोई पंचेंद्री मरतो हुवै तिणनें पइसाभर कम्मां खवायनें बचायो तिणनें धम हुवै के पाप हुवै। इम पूछ्या जाब देवा असमर्थ थया। स्वामीजी बोल्या जिम बेंद्री मार पचेंद्री बचायां धर्म नहीं तिम एकेंद्री मार पंचेंद्री बचायां धर्म नहीं। ❀

: २४९

हिंसाधर्मी इम कह्यो : आचार्य उपाध्यायादिक बड़ो साध हुंता ते विषय रा वाह्या गृहस्थ होयवा लागो। जद कोई श्रावक आपरी बहिन बेटी सूं अकाय करायनें पाछा थिर कीधो। तिण रा बड़ो लाभ हुवो। जद स्वामीजी बोल्या थांरा गुरु भ्रष्ट हुंता हुवै तो थांरी बहिन बेटी सूं इसो काम कराबो के नहीं ? जद ते बोल्या : म्हें तो इसो काम न करावां। जद स्वामीजी बोल्या : थें इण बात री धम कहो तो इसा काम क्यूं न करावो। थें इसो काम न करावो तो बीजारे बहिन बेटी किसरे उगलणू पड़ी है। इसी ऊंधी परूपणा तो कुशीलिया कुपात्र हुवै सो करे। ❀

२५०

अठाई मा खमण आदि तप पूरा थयां पछै आप ? री सामग्री में लाडू दराव छै। जद स्वामीजी बोल्या ए आपरै मुकलप लाडू दरावै छै। जाणे म्हांनेंई बहिरावसी। जद किणही कह्यो स्वामीनाथ ए लाडू किसा मगमाइ बहिर छै। जद स्वामीजी दृष्टांत दियो : एक साहूकार री बेटी परणीज जद चंवरी में ब्राह्मण वेद पाठ भणता पावा री डावरी कनें पी

चोरावा री धुन उठाई : पी चोरे ? पी चोर ?। जद डायरी बोली : स्यां में चोरू ४। जद ब्राह्मण बाल्या : कारू करयू ४। जद डायरी बोली : सुंस जासी ४। जद ब्राह्मण बोल्यो : थुम्हारा बाप नों स्यू जासी ३। जद तिहां गीतों में जाटणी बेठी थी ते पी चोरावा री धुन में समझ गई। जद जाटणी गीत में गावा लागी : सुणजो हो वनरो रा बावा थांरो घृत सुस्त है। जद

ब्राह्मण जाटणी ने कह्यो : रंडेम करी सवाई। अर्डों अर्ड समायरे।

स्वामीजी बोल्या : ज्यू तिण ब्राह्मण कोरा करवा में पी चोरायो। सुसवाय तो पिण आव्यौ पानें पड़ यो सोही खरो। जाटणी ने थायो घृत पिण देणों ठहराय दियो। तिम पिण सामग्री में लाडू धरावै ते सर्व न बहिरावै कायक कोरा-कोरी पिण खाय जावै। तो पिण देख पानै पड़ यौ सोही खरो। इम आप रे मुतलब ए रीत ठहराइ है।

: २५१ :

न्याय री सीख न मानें अनें अजोगाई अन्याय करै तिण नें पाधरौ करवा ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो। एक साहुकार री हवेली मूं हडै रावलियां तमासो मांड्यो। जद साहुकार बरज्यो। इण ठाम तमासो मत करो। लुगायां बहू बेटी सुणें बें मूं हडा सूं फीटा बाला। ते कारण म्हारी हवेली रे मूंहडे तमासौ मत करो। इम समझाया पिण रावलियां मान्यो नहीं। तमासो मांड्यो। लोक घणा भेला हुआ। रावलियां तान कर रह्या। जद साहुकार हवेली ऊपर नगारां री जोड़ी चढाय डोहरा नें कह्यो : नगारा बजावो। जद डोहरा नगारा बजावा लागा। जद रामत में भंग पड़ यौ। लोक वीखर गया। रावलियां रे हाथ दान पिण न आयौ नें मूं ड़ा पिण वीठा। ज्यूं कोई न्याय री सीख न मानै अन्याय करै जद बुद्धिवंत बुद्धिकर कष्ट करै। कला चतुराईकर अन्याई नें पाधरा करै।

: २५२ :

साधु बखाण देवै। तिहां परपदा मोकली देख न उपगार मोकलो देखनें तथा रा श्रावक साधां री निंदा करै लोकां ने भला

करे तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो : किणही साहुकार रै हाटे गराक घणा । भीड़ घणी इसनें पाड़ासी देखाल्यो तिणनें गमें नहीं । जाण्यों इण र इसी भीड़ तो हूँ पिण मनुष्यां नें भेला करू । इम विचार कपड़ा न्हाख नागो हूंओ । नाचवा लागो । मनुष्य तमासा देखवा घणा भेला हुआ । जद ओ मन में राजी हुओ । ज्यूं साधां कनें परिषदा देख नें तथा त्यांरा श्रावकां नें गमें नहीं जद ते पिण कदाग्रह करै । मनुष्य भेला करै ॥

२५३

संवत १८५५ पाली चोमासे खेतसीजी स्वामी र कारण ऊपनो रात्रि दिशा रो उद्धग गो । जद स्वामीजी हेमजी स्वामी नें जगायनें खेतसीजी स्वामी रखते पड्या सो आप साथ पकड़नें ले आया । स्वामीजी बोल्या संसार नीं माया काची । खेतसीजी सरीषो यूं डाय गयो । पछै खेतसीजी स्वामी नें सुवाणनें सिराणा माहि बी नषी पछेपछी काउनें ओडाय दीधी । घाड़ी वेला पछ सावचेत थया । मूंहडै बोलवा लागा । जद कह्यो : आप रूपांजी नें आछीतरै भणायजो । जद स्वामीजी बोल्या तूं तो भगवान रा स्मरण कर । रुपांजी री चिंता क्यां नें करै । पछै खेतसीजी स्वामी रा पिण कारण मिट गयो ॥

२५४

सुपात्रदान री कला सीखावया ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो : किणही गाम में साधां चोमासो कीधो । एकांतर गृहस्थ रै अंतराय तूटै तो दाम महिना लाग मिल्या पातरै २ पाव २ घी वहिरावै तो चोमासा में १५ सेर रै आसरे थयो । ४१५ रुपिया रै आसरै थया । तिण में रसायण आवै तो तीथंकर गोत्र बंधै । काई अनक भव छदकर बंधै । अनें छकाय रा प्रतिपाल करै । सासा उपजै । अनै गृहस्थ रै आरा आसर में ब्याह में अनक रुपिया लगावै तिण में पांच रुपिया तो कठीनें जावै । ए शीख श्रावकां में तारण मणी स्वामीजी दीधी । ॥

: २५५

किसही साहुकार भारो कियो। घणा गाम नेहत्या। लोक जीमता कांयक बारदानों घट गयो। जद पर गाम रा आया त तो जीम्यां नहीं ता पिण कई भारा अगारा है सा घटताइ आया है बधवाई आया है। बडी वेईज कई पड़ी यो पड़ी पछे जीमता कोइ कारण नहीं। अने एक जणो उण साहुकार रो बेपी बाजार में आय गवरा ऊपर तो छोटे है अने मूंढा सूं कई भारो विगड़यो रे विगड़यो। जद किणही पूछ्यो करियावर में गुड़ गालवा में तो थेई सेमल ईज हुसो नें बारदानो घट्यो क्यूं ? जद ऊ बोल्यो : नहीं सा। म्हानें पूछयो ही कदी। म्हानें पूछयो हुवे तो बारदानो घटे ईज क्यूं। अने भारो बिगडे ईज क्यूं। जद पछि उण नें पूछयो थे जीम्या के नहीं। जद ऊ बोल्यो : म्हें तो आछीतरे जीम लिया। पहिलाई जाणता था। इसरे बारदानो घटतो दीसे है। तिणे स्वामीजी बोल्या : इसा पूतला कुपात्रां नें पोख्या सो भारा कांइ बिगडे बापरो रो जमारो बिगड़यो दीसे है।

: २५६

आमेट में पुर रा बाइ भाइ वांदवा आया। त्यां चरचा करतां पूछयो ६ पर्याय १ प्राण जीव के अजीव। जद कोइ तो जीव कहै। कोइ अजीव कहै। इम आपस में ताण पजी करवा लागा। पछे स्वामीजी नें आय नें पूछा कीधी : महाराज ६ पर्याय नें १० प्राण जीव के अजीव। जद स्वामीजी बोल्या : जिण चरचा में मर्म हुवे ते चरचा करणीज नहीं और ही घणी चरचा है। इम कही समझाय दिया। ताण मेट दीधी

२५७

ससार नो माह ओलखायवा स्वामीजी दृष्टांत दियो। कोइ परण्यां पछे बाळ अवस्था में आउखो पूरो कर गयो। जद लोक में घणो भयंकार मच्यो। लोक हाय हाय करता कहै : बापरी छोकरी रो कांइ पाट हुसी। बापरी १२ वर्ष री रांड हुइ सा आ दिन किण रीत सूं काटसी। इम विलाप

करे। स्वामीजी बोल्या : लोक तो जाणे ए दया करे है पिण एतो उणरा काममोग वांछे है। जाणे ऊ जीवतो रह्यो हुंतो तो इण रै २४ डावरा डावरी हुंता। आ सुख भोगवती तो ठीक इम वांछे पिण या न जाणे आ पवा काममोग भोगवती माठी गति में जाती। जिणरी चिंता नहीं तथा ऊ किसी गति में गयो तिका पिण चिंता नहीं। ज्ञानी पुरुष हुवै ते तो मरण जीवण रो हर्ष सोग न आणे ❀

२५८

हेमजी स्वामी घर में था जद एक बहिन थी तिण में मामो आय सौमाले ऐ गयो। हेमजी स्वामी चिंता करवा लागा। भीखणजी स्वामी कनें आय कह्यो : स्वामीनाथ आज तो मन उदास घणो। बहिन री मन में घणी आवै। बसमार छार मेलनें पाछी वोलाय लहूं मन में तो इसी आवै। जद स्वामीजी बोल्या : इसा संसार नां सुख काचा। संजोग रो विजोग पड़ जाव। शारीरिक मानसिक दुख ऊपजै। जठे भगवान मोक्ष रा सुख सासवता थिर कह्या है। उठै सुखां रा कदइ विरहो पड़ै ईज नहीं। ए स्वामीजी रा वचन सुणनें संतोष आय गयो। ❀

२५९

एक आर्ज्यां पाली में वखो कियो। पछ पारणा री आज्ञा मांगनें आगा वाड़ा रा घर सूं दूजै दिन पारणो करवा सापमी आणी। स्वामीजी में दिखाइ। पछै स्वामीजी विचारयां नें पूछयां थे वखो किया था इम सापमी रै पारणे ईज न कीधों है। साच साच। जद आर्यां पाली : स्वामीनाथ मन में आइसा गरी। जद स्वामीजी आर साध साधम्यां नें आगा रै दूजै दिन आणो परज दियों। आपाम कर्नें साथ साध्वी त्यांरी बरजगा न कीधी ❀

२६०

संवत १८५० स्वामीजी पुर चौमासा कीधा। चाउमासा आपता जाग में स्वामीजी विहार करवा लागा। जद भाया पाम्या : आप विहार क्यूं करो। जद स्वामीजी बोल्या : आगै अठै गाडावालो चौमासा कीधो।

फौज रा जोग सूं गाम रा लोक केइ परहा गया। पिण टोलावाला बोल्या : म्हें तो चौमासा में विहार न करां। इसी अडूनी सूं विहार न कीधो। पछै काल बाइ टोलावाला नागाल्यां री गुवारी में जाय रह्या। त्यांनें पकाय पड्यौ : माल मंगावौ। मरचां री धूड़ दीधी। मरचां रो धा बड़ो मूंढ बांध्या। परीषह घणा दीधा। तिण कारण विहार करण रा भाव है। रहिवा रा भाव नहीं। जद भाया बोल्या : महाराज! आप विहार मत करो। म्हें आपनें आछी तरै लेजावसां। आपनें भेळनें जासां नहीं। जद स्वामीजी मुलता रह्या। पछै फौज री हलचली पड़ी जद भाया तो रात्रि रा कानी २ न्हास गया। प्रभाते स्वामीजी पिण विहार करनें गुरला पधारया। जद भाया पिण गुरला आया। त्यांनें स्वामीजी कह्यो : थे कहिता था म्हें साथ आवसां सो पहिली रात्रि रा न्हास नें परहा आया। जद भाया बोल्या : म्हें नगरी ऊपर ऊभा देखता था। उवे स्वामीजी पधारे। जद स्वामीजी बोल्या : अलगा ऊभा देख्यां कांई हुवै। थे कहिता था म्हें साथै रहिसां सो साथै तो रह्या नहीं। गृहस्थ रो कांइ भरोसो। गृहस्थ रे भरोसे रहिणो नहीं।

२६१

नोखली सूं विहार करने स्वामीजी चेलावास पधारे जद मार्ग पूछता आगा। जद खेतसीजी श्रावक बोल्या : स्वामीनाथ! मारग तो हूं जाणूं छूं सुखे २ पधारो। आगे नीलां में ले जाय न्हाख्या। मारग चालतां लाधो नहीं। जद स्वामीजी खेतसीजी नें घणा निषेध्यो। तूं कहिता थोनी : हूं मार्ग जाणूं छूं। जद खेतसीजी बोल्या : ऐसा मारग भूल गया। जद स्वामीजी बोल्या : गृहस्थ रे भरोसे रहिणो नहीं।

२६२

दूजा कोइ आप देख तिणमें न समझे अनें आपरी भाषारा आप अजाण तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टान्त दियो : एक बाई बोली : म्हारा भरतार आगला तिण मा पीजा सूं सपै नहीं। जद दूजी बाई बोली : म्हारा भरतार तिरे मा आप रा लिख्या आप सूं ई न पर्चे। इसा जगत

में बुद्धिहीण। क्यू केइ आपरी भाषा रा आप ही अजाण। त्यांनें केवली भाष्या धम री ओळखणा किस तरे आवे। 卐

२६३

साधु गोचरी में आहार मगायां सू बधतो त्यायो। जद स्वामीजी पूछ्यो : आहार बधतो क्यू आण्यो। जब ऊ बोल्यो : जोरावरी सू नांख दियो। जद स्वामीजी बोल्या : जोरावरी सू माठो न्हांखे तो लेवो के नहीं। 卐

२६४ :

एकेंद्री मार पचेंद्री पाल्यां लाभ है इम किणहि कह्यो। जद स्वामीजी बोल्या : बारो अंगाछो किणहि खोसनें ब्राह्मण नें दियो तिण में लाभ है के नहीं। अथवा किणहि रो लोटो खोसनें लुटाय दियो तिण में लाभ है के नहीं। जद कहै : ओ तो लाभ नहीं। धणी रा मन बिना दीधो तिण सू। जद स्वामीजी बोल्या एकेंद्री कद कह्यो म्हारा प्राण लूंटनें ओरां नें पोखज्यो। इण न्याय एकेंद्री नी चोरी लागी तिण सू लाभ नहीं। 卐

२६५

दुख अपनो लोक विलापात करें तिण ऊपर स्वामी जी दृष्टांत दियो : किण ही साहुकार गोहां रा कोठा भरया। ऊपर घर लीपने तीला किया। एक पड़ोसी तिण पिण कोठा में धूळ खात कचरो न्हाखनें घर लीपनें ऊपर साफ कीधो। गोहां रा भाव आया। एक २ रा दोय २ हुवे। साहुकार कोठो खोल बेचवा लागो। पाड़ोसी पिण गोहां री साई लेइ गराक सावे त्याय कोठो खोल्यो। माहे खात नीकल्यो। रोवा लागो। देखा देख लाग पिण रोवा लागा। वैसी बापरा रे गोहूं चाहीजे नें खात नीकल्यो। इम कहि रोवा लागा। जद किण ही समझणे पूछ्यो : अरे थे माहें घाल्यो काइ था। जद रोवतो बोल्या म्हें घाल्यो सो यो

हीज बो। जद ऊ बोल्यौ : धाल्यौ खास सो गोहूँ कठासू नीकलसी ! ज्यू जीव जिसा पुन्य पाप बांध्या तिसा उदय आवै। विलापात किया कांइ हुवै। *

: २६६

पलासास रा कू भारसिंहजी ठाकुर, त्यां कनै रुपनाथजी आय बोल्या : म्हारै वेळो मीलन हे सो बकरा बचायां पाप कहै है। दान दया उठाय दीधी। जद स्वामीजी आय बोल्या ठाकरां कलाल रा घर नों पाणी साधु नें लेणो के नहीं। जद ठाकर बोल्या : कलाल रा घर नों तो साधु न लेणो नहीं। जद स्वामीजी बोल्या इणां नें पूछो ए लेवै के नहीं। जद रुपनाथजी उठ नें चालता रह्या। *

२६७

गूदोच में रुपनाथजी स्वामीजी सू चरचा करता आवसगसूत्र खोलनें बतायो। ओ देखो काउसग मांगनैई च दरा नें मिनकी कना सू छोड़ाय देणी। जद स्वामीजी त्यां रा टोला मांहें थका सं० १८११ रा साल रो आवसग काढ बतायो। ओ थांरा देखा देख लिख्यौ। तिण में तो ओ अर्थ कोइ मंड्यौ नहीं। जद रुपनाथजी बोल्या : म्हें तो ओर नी देखादेख ओ अर्थ घाल्यौ है। जद स्वामीजी बोल्या : इसा झूठो अर्थ घालणो कठे है। जद पोतीयां बधणीयां वाळी म्हारा पात्रा में उन्हो पाणी त्यां इण में पाना परहा गाळो। जद रुपनाथजी ने घणो कष्ट थया। जिन मारग रो उद्योत थयो। घणा लोक समझ्या। *

२६८ :

स्वामीजी सू कोइ चरचा करतां सुदे श्रद्धा रा बोल बेठा तो पिण बोल्यो : आप कहो सो बात तो ठीक छै। पिण केइ बोल पूरा माहा में आवै नहीं। जद स्वामीजी दृष्टांत दियो। दस सेर चावळां रा चरु चूला ऊपर चढायां ऊपरला चावळा सीझ्या हाथ सू देख्यां सा सेणा हुवत हुन्ता पिण सीजगया जाण अनै मूर्ख हुवै ते जाणे ऊपरला तो

सीम्या पिण इंठे कोरा नहीं। इम विचार इंठे हाथ घाले तो हाथ बले। ज्यू चतुर हुवै ते सुदे बोल बेठा जाणे बीजा बाल पिण साचा ईज हुसी ॥

२६९

स्वामीजी सू चरचा करतां न्याय निरणो बतायो पिण मानै नहीं। जद स्वामीजी बोल्या किणहि रोगी न बेद ओषध पावा लागा कहे ओ ओषध पी आ रोग जासी रहसी। जद रोगी बाल्यो : मू हवा में तो घालू नहीं। म्हारा मोरां में कूट दो। ओषध चोला है वा मोरां में कूट्याई रोग परहा जासी। जद वेद बोल्यो : पीधां विना तो रोग न जाय। ज्यू सूत्र रा वचन साचा रो वचन सरध्यां मिथ्यात्व रूप राग जाय। पिण सरध्यां विनां कोरा सुणीयां न जाय। ॥

२७०

सं० १८५४ र पर्व चदू बीरां नें टोला बारे काढी। जद पीपार में भायनें इमजी स्वामी विराज्या तिण हाट घणा रा श्रावक सुणतां साध साध्व्या रा अवगुणवाद बोलवा लागी। जद लोक बाल्या : या दृस्तो थारा टाला मांहे हुवी सो अब भीखनजी रा टोला रा अवगुणवाद बाल है। जद स्वामीजी सामलो हाट सू ऊठन पधारनें बाल्या आ कहे तिण रा थे साच मानो हो तो आ आगे रूपनाथजी रा टाला में फत्तूजी री चली हुंती। जद फत्तूजी रे साथे दोष रो मेंजर पड्यो। जद पत्ली सा आ चंदूजी पू कहीती थी सूर्य में स्नेह हुवे तो म्हारी गुरणी में स्नेह हुवे। पछे इण हिज बाई रा आडया रा पासरा कपड़ा आप गुरणी न ओढायन नवी दीक्षा दराइ तिका या है। ए स्वामीजी रो वचन सुणनें लाक घानी २ बीगर गया। चंदूजी पिण पाछली रही। तिण रा पाप विशेषद इत्यादिक आदि न्यातीला पिण तिण न अजाण जाणी। ॥

२७१

फर फारे भद्रा धनी ना पिण रा मंग छाड़े नहीं। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो। गाड़ा रा बटू पीलां रे बीच में गुमठे पर

कियो। गाड़ा जातां आवतां माथा में इसी री लागै। तो पिण ठिकाणो छोडै नहीं। इतरे पूछे मुसलो कह्यो : अठै माथा में लागै सो या जागा पराही छोड़। जद मुसलो बोल्यो : सैंहंदी जागां छूटै नहीं। ज्यूं साधी भद्रा री रहिस बेठी तो पिण आगला सैंहंदा कुगुरु त्यांरो संग छोडै नहीं।

: २७२

सं० १८५५ पाली में हेमजी स्वामी टीकमजी सूं चरचा करतां एक मेसरी बोल्यो : सर्प ने च्यार पइसा देई कालबेल्या कना थी छुड़ायो तिण रो कांइ थयो। जद टीकमजी बोल्यो : चोखो धर्म थयो। जद ऊ मेसरी बोल्यो : ते सप पाधरो ऊंदरां नें बिल में गयौ। जद टीकम जी बोल्यौ : मांहि ऊंदरो हुसी नहीं तो। ए बात हेमजी स्वामी स्वामीजी ने आय कही। जद स्वामीजी बोल्या : किणहि कागला न गोली वाही। कागलो उड़ गयौ तो कागला रो आउखो ऊभो। पिण गोली वावणवाला ने तो पाप लाग चूको। ज्यूं साप छोडायो ते साप ऊंदरां मा बिल में गयौ। मांहि ऊंदरो नहीं तो ऊंदरा माथे भाग। पिण सर्प नें छोड़ावण वालो तो हिंसा रो कामी ठहर चूको। भीखणजी स्वामी हेमजी स्वामी ने कह्यौ इसो जाब देणो।

: २७३

हेमजी स्वामी दीक्षा लेइ दशवैकालिक सीख्या। पछै उत्तराध्ययन सीखवा लागा। जद स्वामीजी बोल्या : वखाण सीख। कठकला है तिण सूं। मुवै उपगार तो वखाण रो है। मीठा पुरुषां रै इसी उपगार नीं नीत।

: २७४ :

हेमजी स्वामी नें भारमलजी स्वामी कह्यौ : म्हैं टोला वाला मांहि थी नीकल्या। जद केवला एक वर्षां ताई चौमासा में अंजणा देवकी रो वखाण तीन २ बार वांचता। वखाण वाड़ा तिण कारण।

२७५

सं० १८२४ भीखनजी स्वामी तो कोमामो कण्टालीयै कीयो। भारमलजी स्वामी नें बगड़ी करायो। बीच में नदी बहे सो मोटा पुरुषां पहिला कहि राख्यो तिण सूं नदी री उली तीर तो स्वामीजी पधारता अनें पैली तीर भारमलजी स्वामी पधारता। मांहोमांहि वातां कर हेतु युक्ति सीख सुमति आछी सरै दरसन देई पाछा कंटालीय पधार जावता। अनें भारमलजी स्वामी बगड़ी पधारता। आ बात भारमलजी स्वामी कहिता था।

२७६ :

भीखनजी स्वामी हेमजी स्वामी ने कह्यो। म्हें रुणानें छोड़ या जद ५ वर्ष ताइ तो पूरो आहार न मिल्यो। घी चोपर तो कठै। कपड़ो कदाचित् वासती मिलती ते सवा रुपीया री। तो भारमलजी स्वामी कहिता पछेवड़ी आपरै करो। जद स्वामीजी कहिता १ चोलपटो थारै करो १ म्हारै करो। आहार पाणी आणनें उजाड़ में सर्व साध परहा जावता। रूखरा री छाया तो आहार पाणी मेलनें आतापना लेता, आथण रा पाछा गाम में आवता। इण रीते कष्ट भोगवता। कर्म काटता। म्हे या न जाणता म्हारो मारग जमसी नें म्हा में यूं दीक्षा लेसी न श्रावक श्राविका हुसी। जाण्यो आत्मा रा कार्य सारसां मर पूरा देसां इम जाणनें तपस्या करता। पछे कोइ २ रे मरधा बसवा लागी। समझवा लागा। जद थिरपालजी फतैचन्दजी आदि माहिला साधां कह्यो लाग ता समझता दीसै है। थें तपस्या क्यूं करो। तपस्या करण में ता म्हे छांइज। थें तो बुद्धिवान छा सो धर्म रा उद्योत करो। लोकां नें समझावो। जद पछै विशेष रूप करवा लागा। आचार अनुकंपा री जोड़ां करी व्रत अव्रत री जोड़ा करी। घणा जीवां न समझाया। पछै मग्गण आइ या।

२७७

बालपणा में भारमलजी स्वामी खिरसा करता जद थार ? स्मरण करायवो करे। पछै भीखनजी स्वामी बाल्या ? थारै स्मरण काढवारा

त्याग है। जद आफइ काढ़वा लागा। इम करतां २ लेखण काढवा री कळा घणी चोखी आई।

२७८

किणहि रे रोगादिक ऊपनां हाय वराय करै। जद स्वामीजी बोल्या : यूं न करणो। रोगादिक ऊपनां गाढो रहणो। ज्यूं किणहि रै माथै देणा हो। देवारा परिणाम नहीं हुंता। पिण पैलै जबरी सूं लियां। जद मूर्ख तो विलाप करे। समझणा हुवै ते देवे देणो मिट्यो। पछै देणा पड़ता तो पैहलांइ टटो मिट्यो। माथा रो भार मिट्यो। ज्यूं रोगादिक ऊपनां मैंणा आपे बांध्या कर्म भोगव्यां टटो मिट्यो। यूं जाण नें विलाप न करै

२७९

स्वामीनाथ वखाण में मेरु शीतळा नें निषेधै। जद इमजी स्वामी बोल्या आप देवता नें निषेधो सो दोष करेला। जद स्वामीजी बोल्या : बरता री समदृष्टी देवता रो है सो फोड़ा पाड़े तो समदृष्टी इंद्र वज्र री देवे तिण सूं बरता माथां नें दुख न देवै।

२८०

स्वामीजी बोल्या मूओ मनुष्य काम आवै सो साधु संसार लेखै गृहस्थ रै काम आवै। साधु कनै कोइ आयो। पांच रुपिया भूल गया। दूजो ले गयो। साधु जाणै इणरा रुपिया है। अनें रु ले गयो आय नें पूछे म्हारा रुपिया अठै था सो कुण ले गयो तो साधु बतावै नहीं। एक धर्म सुणावा री सीजारा है। बाकी सावद्य कामारे लेखै साधु गृहस्थ र काम आवै नहीं इसा साधु रा मारग है।

२८१

मीठालजी स्वामी गृहस्थ री बकी पाडिहारी सूई कतरणी छुरी रात्रि १ तथा घणा दिना रात्रि राखता। जद बोल्या : साध नें सूई रात्रि राखणी नहीं। छुरी कतरणी पिण रात्रि राखणी नहीं। जद स्वामीजी

बोल्या : बाजोट में छोह रा खीला रहे। तथा शस्त्र पत्थर पत्थर ना और सिया पिण पाड़िहारा रात्रि रहे छै। तथा लोह रा इमाम दस्ता आदि पिण पाड़िहारा रात्रि गृहस्थ रा थका रहे तिणमें दोष नहीं तो सुई कतरणी छुरी ए पिण गृहस्थ रा थका पाड़िहारा रात्रि रहे तिणमें दोष नहीं। ॐ

१ २८२

बोल्या सुई मागे तो वेला रो प्रायश्चित आवे। जद स्वामीजी बोल्या : थांरे लेखे बाजोटने मागे तो संथारो करणो। ॐ

१ २८३

बोल्या भीखनजी ए आचार नी जोड़ां गावे है सो वांदणा गावे है। जद स्वामीजी बोल्या वांदणा तो थांरा ग्यांरा गावीजे है। छुद्ध रीत प्रमाणे चाले ज्यांरा वांदणा कोइ गावीजे नहीं। ॐ

१ २८४ १

पीपाड़ में भीखनजी स्वामी गाथा कही।

अचित वस्त नें मोल लरावे।
समिति गुप्ति हुवे संकजी।
महाव्रत तो पांचूं भागे।
चौमासा रो दण्डजी।
साध मत जाणो इण बलगत सूं।

आ गाथा सुणनें मालीरामजी बोहरा बोल्या : मर अमूं उगहा आवरे जे पर तो लूट लियो न मावे बले इड़ कर। यूं भीखनजी महाव्रत तो पांचूं ई परा भागा कहे। अन बले चौमासी रा दंड कहे है। जद स्वामीजी बोल्या पांच महाव्रत भागा पछे चौमासी रो दंड न कह्या है। इहां तो इम कह्यो है : महाव्रत पांच भागे पिण कतरा भागे। चौमासी रा दंड आवे जितरा भागे इम कही समझाया। ॐ

२८५

यह कही सापराधान में भगवान सूत कहीं है मा वतमान काल बिना विण सूत गारसी। पु ए पाप न कहियों। तिम ऊपर स्वामीजी दृष्टान्त दियो

तीन जणां र इसी सरधा । एक जणो सावद्यदान में पुन्य सरधै १। एक जणो सावद्यदान में मिश्र सरधै २। एक जणो सावद्यदान में पाप सरधै ३। यां तीनूं जणां अभिग्रह किन्यो आ संका मिटे तो घर में रहिवा रा त्याग। जबै ए संका काढवा दरबार में तो आए नहीं। एतो संका काढवा साधां कनै ईज आवै। हिवै साधां नें पूछयां मन्पु कहै म्हारे तो मून है। तो त्यांरी संका किम मिटै। इण लेखे वरतमान काले मून। सुयगडायङ्ग सु० १ अ० ११ तथा सु० २ अ० ५ अर्थ में मून कही। अनें उपदेश में भगवती श० ८ उ० ६ भगवान गोतम नें कह्यो : तथारूप असंजती नें सचित्त अचित्त सूझतो असूझतो दियां एकंत पाप। इण न्याय उपदेश में छै तिसा फल बताय समझाय साधपणो पालणो देणो।

२८६

केइ कहै साधु सामायक पढ़ावै नहीं तो पाडणी सीखावै क्यूं। जद स्वामीजी बोल्या : साधु सामायक पढ़ावै नहीं। सो किसो सामायक में पढ़ो देई पाड़ै है। एक मुहूर्त सी सामायक कीधी। अनें १ मुहूर्त थयां सामायक तो आय गई। पाड़े सा तो दोष अतिचार री आलोवणा करे है। ते आलोवणा री भगवान री आज्ञा। तिण पाड़वारी पाटी सीखावै है। अनें वर्तमानकाल में पढ़ावै नहीं। सो ते उठनें परह्यो आय तिण आश्री पढ़ावै नहीं। पिण दोष री आलोवणा करायां सीखायां दोष नहीं।

२८७

एक जणो स्वामीजी सूं चरचा करतां ऊ धा अवलो बोलै। जद स्वामी जी नें किणहि कह्यो : महाराज ! ए ऊ धो अवलो बोलै तिण सूं कांई चरचा करो। जद स्वामीजी बोल्या : नान्हो बालक समझ न आई जितरे बाप री मूंछां खांचै। पिता री पाग में देवै। पिण समझ आयां पछै म्हीन चाकरी करै। ज्यूं साधां रा गुण न आलख्यां जितरे ए ऊ धा अवलो बोले गुण आलख्यां पछै ए हीज भाव भक्ति करसी।

२८८

साध राते वखाण देवै। पिण राते वखाण दवै। साध बाजार में उतरै। देखादेख पिण बाजार में उतरै। इम देखादेख कार्य करै। पिण शुद्ध श्रद्धा आचार बिना पाधरी न पड़े। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो : एक साहुकार में पातै सो समझ नहीं अनें पाड़ोसी भी देखादेख व्यापार करै। पाड़ोसी वस्तु खरीदै तिका वस्तु ओ पिण खरीदे। जद पाड़ोसी विचार्यो ओ देखादेख करै है के मांहि समझ है। जद पाड़ोसी हटा में कहै, अबारू टीपणा सेज है, सो देसावरां सू खरीदणा। टीपणा थाड़ा दिना में एक २ रा दाय २ हुवे है। ए बात सुणनें साहुकार देसावर जायनें टीपणां जूना नया खरीदा। सो पूंजी रो नास थयो। ज्यूं साधा री देखादेख पिण काय करै पिण शुद्ध श्रद्धा आचार बिना कांई गरज पड़ै नहीं। ॐ

२८९

किणहि कह्यो पिण तपस्या मास खमणादिक करै। लोच करावै। धोवण उन्हो पाणी पीवै। या करणी थांरी यूंही जासी कांई। जद स्वामीजी बोल्या किणहि लाख रुपियां रा दवाला काढ्या। पछै पइसा रा तेल आण्यो तिणरा पइसो परहा दिया तो पइसा रा साहुकार। रुपिया रा गाहा आण्या में रुपिया परहा दियो तो रुपीया रा साहुकार। इम पइसा रुपीया रा तो साहुकार थयो पिण लाख रुपीया रा दवाला काढ्यो तिण रा साहुकार नहीं। ज्यूं पांच महाव्रत पचखी आधाकर्मी स्थानक निरंतर भोगवै। इत्यादिक अनेक दोष सेवै। तिण रो प्रायश्चित पिण नहीं लेवै। आ मोटा दिवालो लोच सू में तपस्या सू करै उतरै। पछै मास खमणादिक पचखे में पारणा पाले ते तपस्या ना साहुकार पिण पांच महाव्रत भांग्या त दवाले किम उतरै। ॐ

२९०

किणहि कह्यो उपाड़े मूरत मान्नें माथा में पधरावै ना पनि लेवै अनें एक दामा ऊपर पग पग लागा लेवै नहीं। पर अममतो

गिणे ते किण कारण। जद स्वामीजी बोल्या : साधां नें बहिरावें ते सुक्ष्म काया रो जोग है। तिण काया रा जोग सूं चालवां उठवां बेसवां अजैणा करतां बहिरावें तथा बहिरावतां फूंक देवें अनें तिणनें पडिलाभ साधां आरे कीधी है तो घर असूझतो है। अनें साधू आरे कियो नहीं अनें ते उठतो अजैणा करें तो रसोई असूझतो थयो। ज्यांई मुख बोलै ते वचन रो जोग है, ते बोलतां अजैणा सूं घर तथा बोलणवालो एक ही असूझतो नहीं है। उववाई में कह्यौ जे निंदा करतें देवें ता लेणौ। तो जे निंदा करें गाल बोलै ते किसी जणा कर। इण कारण बोलवारी अजैणा सूं तेह नें असूझतो न कहीयै तिण सूं तिणरा हाथ सूं लियां दोष नहीं। *

: २९१

सं १८५५ रे आषाढ़ महीने नाथजीद्वारा स्वामीजी घणा साध आर्य्यां सूं विराज्या। तिहां अजबूजी गोचरी उठ्या। किणहि घी बहिरायो। आगे गयां एक बाई पाट बहिरावनें पूछ्यौ : थें किण री आर्य्यां। जद स्वा कह्यौ : म्हें भीखनजी स्वामी रा टोला री। जद ते बोली : हे रांडां! थें पेढ़केई म्हारी रानी ले गई। उरही दा म्हारी पाट। इम कहि पाट लेवा लागी। जद एक ब्राह्मणी बरजै : हे कीकी! अतीत नें दियो पाछो मत ले। जद ते बाली : कुवा नें म्हांरा देसूं पिण इणा कना सूं तो उरहो लेमूं। इम कहि घी सहित पाट जबरी सूं उरही लीधी। अजबूजी ए वात स्वामीजी न आय कही। जद स्वामीजी घणा विमासवा लागा। पछ बोल्या : इम कलिकाल में नहीं पिण देवें ना पिण कदे जाणनें असूझता पिण होमें पिण देनें उरहो लेवै ए वात तो नवीज सुणी। ब्राह्मणी रा कहिण री वात गाम में फेली। ज्यरा धणी नें छाक कर्हे : हाटे तो में कमायो में घरे थांरी बहू कमाव। ऊ पिण मन में लागौ। थारा दिनां पछै राकड़ी रे दिन ता एकाएक बेटा मर गयौ। थाड़ा दिनां में धनी पिण मर गयौ। जद सामजी मायक तुको आद यो।

> वदर साहूरी दीकरी कीकी थांरो नाम।
> घाट सहित धी ले लियो। ठाभीकर दियो ठाम ॥१॥

किरायक काल पछै उण रे घर साधु गोचरी गया। पडिलाभवा लागी। साधां पूछ्यो : थारो नाम कांइ। जद बोली : उबा हूं। पापणी छूं। आम्यों रा पात्रा मांहि थी पाट लीधी ते। कांइ तो परभव में देखे गई इण भव में इज लीधा पापना फल। इम कहि पछतावा लागी। ॐ

२९२

स० १८५६ नाथद्वारा में हेमजी स्वामी, स्वामीजी नें कह्यो आपां मालको रे इज गोचरी जावो अनुक्रम घरां री गोचरी आयां नहीं सो कारण कांइ। जद स्वामीजी बोल्या अठै इण घणां दिन सूं अनुक्रमें गोचरी न करां। जद हेमजी स्वामी बोल्या आप फरमावो तो हूं जाऊं। जद स्वामीजी बोल्या भलांइ जावो। जद मोहनगढ में गोचरी फिरता एकण घर गोचरी गया। पूछ्यो आहारपाणी री जोगवाइ छै। जद ते बाइ बोली रोटी छाग ऊपर पड़ी है। जद हेमजी स्वामी मेड़ी ऊपर दूजा घर हे निदां गोचरी गया। ऊपर सं घर बाइ ऊभी अंपली बोली घणो मोड़ कीधो। पिण रोटी लीधी। घणी वसा लागी। जद बाई आण्यों ए भाव म्हारा इज दीस। पाछा उतरतां बाई बोली आप पधारो आहार बहिरो। इम कहि बहिरायवा रोटी हाथ में लीधी। जद हेमजी स्वामी कह्यो : बाइ तूं कहिती थी रोटी छाग पर पड़ी छ। जद उवा बोली : गई तो तेरापंथी आण्या था तिण सूं कह्यो। जद हेमजी स्वामी कह्यो : बाइ हो तो तेरापंथीज। थारा मन हुवै तो दै। जद रोटीसी बिना मन बाली स्या। पछै भागलां घरां गया। आहार पाणी री जोगवाइ पूछी जद ते कह्यो थे तो तेरापंथ्यां नें रोटी दिवारा त्याग है। जद हेमजी स्वामी बोल्या : रोटी देवारा त्याग छै। पानी हुवै तो पाणी पडिलाभ। जद ऊठन पाणी पडिलाभ्यो। पछै स्वामीजी नें आयन समाचार सुणाया। स्वामीजी सुणनें राजी हुआ। ॐ

२९३

गुरु री वांमन ऊपर स्वामीजी साधवी रा गोडी रा दृष्टान्त दियो : जिम साधवी री हाथ रे ३ वस्त्र हुवै। तिण वस्त्र में साथ छ तो अंतर

काणी हुवे। पिचको वेज तत हुवे तो अंतरकाण न पड़े। ज्यूं देव गुरु धर्म तिण में गुरु आगम। जो गुरु चोखा हुवे तो देव पिण चोखा हुवे। धर्म पिण चोखो बतावे। गुरु खोटा हुवे तो देव में फरक पाड़ देवे अनें धर्म में ई फरक पाड़ देवे। जो गुरु मिले ब्राह्मण तो देव बतावे शिव अनें धर्म बतावे ब्राह्मण जीमावो १। गुरु मिले जो भोपा तो देव बतावे धर्म राजा। धर्म बतावे भोपा जीमावो पाती लेवो २। गुरु मिले कामड़िया तो देव बतावे रामदेवजी। धर्म बतावे जमा री रात जगावो कामड़ी जीमावो ३। गुरु मिले मुल्ला तो देव बतावे अल्ला। धर्म बतावे जब करो। पर चरंती मेर चरंती। सब चरती पशु तेरा। हुकम आया अल्ला साहिब रा सो गला काटूं तेरा ४। अनें जो गुरु मिले निग्रंथ तो देव बतावे अरिहंत। धर्म भगवान री आज्ञा में ५। गाजी में मूं ठी बासती। तीनूं एकण गोत। जिणनें जैसा गुरु मिल्या तिसा काढ़िया पोत। इण दृष्टान्ते जैसा गुरु मिले तैसाई देव अनै धर्म बतावे।

२९४

केई अज्ञान कहे: म्हें तो ओघा मुहपती नें वांदां। म्हारे करणी सूं कांई काम। तिण ऊपर स्वामीजी बोल्या: ओघा नें वांदां तिरे तो ओघो तो हुवे है ऊन रो अनें ऊन होवे है गाडर नी। जो ओघा नें वांदां तिरे तो गाडर ना पग पकड़णा। धन्य है माता तूं सो थारो ओघो पैदास हुवे है। अने मुहपती नें वांदां तिरे तो मुहपती तो होवे है कपास री अनें कपास हुवे वणरा। जो मुहपती नें वांदां तिरे तो। वण में नमस्कार करणो। धन्य है तूं सा थारी मुहपती हुवे है।

२९५

कोई कहे प दोष लगावे तो पिण गृहस्थ थिके तो आछा है। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो। एक साहुकार री हाटे प्रभाते कोई पइसो लेई आयो। कहे साहजी पइसा रो गुड़ है। जद तिण पइसो लेइ बाटमें गरड़ो सिक्यो। गुड़ दे दियो। जाण्यो प्रभाते तांबा माणा री

बोहरामी हुई। दूजे दिन रुपियो लेई आयो। कई साहजी रुपिया रा टका दे। जद तिण रुपियो लेइ पाछने उरहो लियो। टका गिण दिया। मन में राजी हुआ आछा रूपा नाणा रा दर्शण हुआ। तीजे दिन खाटा रुपियो लेइ आयो। कई साहजी रुपइया रा टका दे। जद ते राजी हाय घाल्यो : म्हारे काल का गराक आयो। रुपियो हाथ में लेइ देखे ता खाटा। माहि तांबो ने ऊपर रूपा। अलगा न्हाखने घाल्यो प्रभाते न्हाना नाणा रा दरशन हुआ। जद ऊ बोल्या : साहजी बेराजी क्यूं हुआ। परमू ता म्हे पइसो आण्यो सा तांबा नाणा बांधो। काले रुपियो आण्यो सो रूपो नाणो बांधो। अनै इणमें तो तांबो रूपा दानू है सो हाथ पार बांधो। जद ऊ बोल्यो : रे मूरख परमू ता पकलो तांबा हो सा ठीक। काले एक ही रूपा हो सो विशेष चोखो। सबे ता न्यारा २ हा। तिण सू खाटा नहीं। अनै इणरे माहि ता तांबो अनै ऊपर रूपा रा झाल तिण सू ए खाटा। ए काम रा नहीं। इण दृष्टान्ते पइसा समान ता गृहस्थ श्रावक। रुपिया समान साधु। खोटा रुपिया समान । ऊपर भेष ता साध रा नें लक्षण गृहस्थ रा। ए खाटा नाणा सरीखा। सो ता साध में नो गृहस्थ में अणघेरा ए बांदवा जोग नहीं। श्रावक ही प्रशसवा जाग अराधक। साध ही प्रशसवा जाग आराधक। पिण खोटा नाणा रा साथी भेषधारी आराधक नहीं। ॐ

२९६

किणहि कह्या रात्ताकाला नें वंदणा किधा जब कह : दया पाली। कर पाछा रमावे। अनें आप जी कहा सो कारण कांइ। जद स्वामीजी बोल्या : नाथा में कहे आदेश। जद उब कहे आदि पुरुष है। पीने आदेश सर्वे नहीं। पाछा में गुम नहीं नियम्। आदेश किया ते आदि पुरुष कूं सझायो। गुसांइ में कहे नमा नारायण। जद ते बोल्या : नारायण। इणरा सुरो आ म्हां में करामात काइ नहीं है। नमस्कार नारायन कूं कर्यो। वष्णु में कहे राम २ जद उबे कहे रामजी। उवा पिण रामजी न सझायो। पाते मस्या नहीं। फकीर में कहे साइ साहिब। जद ऊ कहे साहिब। उन पिण साहिब में सझायो। जती में कहे गुराजी वंदना। जद उब कहे धम लाभ।

धर्म करो थो लाभ हुसी। म्हारे भरोसे रहिजो मती। नें कहै समाउ स्वामी, थांरू स्वामी। उवे कहै दया पालो। दया पाल्यां निहाल हुमो पिण म्हानें थांपां कोई तिरो नहीं। इम रो मुत्तो यो है। ए पिण वदना केले नहीं। घर में माल बिना हूंडी सीकारणी आवै नहीं। अनें साधां नें वंदना करै। जद उवे कहै थी थांरी वदना मैं सतकारी थानें वदणा रो धर्म हाय पूछो। कोई कहै थी कहिणो कठै चाल्यो है। तिण रो उत्तर : राम प्रसेणी में सूर्याभ वदना कीधी जद भगवान ६ बोल कह्या। तिण में जीतमेयं सूरियाभा। ए वदना करो ते थांरो जीत आचार है इम कह्यो। कोई कहै जीव शब्द सूत्र में है में थी एक अक्षर ईज किम कह्यो छो। तेह नो उत्तर ए जीव शब्द ना एक अक्षर थी ते वेश है। ते वेश कह्यां दोष नहीं। सूत्र में श्लोक तो वचन रो पाठ। वचण आवै अनें श्लोक भय आवै। इहां पिण वेश आयो। तथा धर्मास्तिकाय नें श्लोक तो धम्मत्थिकाए पूरो पाठ। श्लोक धम्मा धम्मे आकासे। इहां पिण वेश कह्यो : तिम जीव ए पाठ नों वेश थी इम कहिवै दोष नहीं। ❀

२९७

स्वामीनाथ बोल्या : धर्म तो दया में है। जद हिंसाधर्मी बोल्या : दया २ स्यूं पुकारो छो। दया रांड पड़ी उकरड़ी में लाटे। जद स्वामीजी कह्यो। दया तो माता कही। उत्तराध्ययन अ॰ २४ आठ प्रवचन माता कहै छै। तिण में दया आय गई। जिम कोई साहुकार आउखा पूरो कियो। जारे तिण री स्त्री रही। सो सपूत हुवै सो तो पिण माता रा यत्न करै अनें कपूत हुवै ते ऊंधा अवला बालै। माता नें रंडकारा री गाल बोलै। ज्यूं दया रा धणी तो भगवान थे तो मुक्ति गया। लारे साध श्रावक सपूत वे तो दया माता रा यत्न करै। अनें थां जिसा कपूत प्रगटिया सो रांड २ कहि नें बोलावो। ❀

२९८ :

साधपणा लेई शुद्ध न पालै अनें साधरो नाम धराव माम धराय पूजाव। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो : एक सुसरा रै पाछ पोष

पाछी नाहर दाड़्या। जद मुसलो न्हासनें बिल में पेस गयो। बिल में आगे लूंकड़ी बैठी तिण पूछ्यो : तू सास धमण हाय म्हाम नें क्यूं आयो। मुसलो कुवरी ते बोल्या अटवी ना जानवर भेला होयनें मानें चोधर पणो थपे। सो हूं तो कोई ले‍ऊ नहीं। तिण सूं न्हासनें उरहा आयो। जद लूंकड़ी बोली अरे चोधरपणा में तो बड़ो स्वाद है। जद मुसलो पाल्यो : थारो मन हुवे तो तूं ले। म्हारे तो कोइ चाहीजे नहीं। जद लूंकड़ी चोधरपणो लेवा बारे नीकली। जद दोनूं पाछी नाहर ऊभा हा। मो दानूं कान पकड़ लिया। जद छोड़ी मरती पाछी आइ। जद मुसले पूछ्यो : पाछी क्यूं आई। तब लूंकड़ी बाली चोधरपणो में स्वाचा साण धणी मो कान टूट गया तिण सूं पाछी आई। ज्यूं साधपणो लेई चोखा न पाले दोष लगावे प्रायश्चित न ले अनें साध रा नाम धरावे छाका में पूजावे ते इहलोक परलोक में लूंकड़ी ज्यूं सराय ह। नरक निगोद म गोता खावे।   ॐ

२९९

किणहि कह्यो : भीखनजी जिहां में जायो तिहां छाका र धमका पड़े। जद स्वामीजी बोल्या गारड़ू आवे गाम में ते कदे डाकणियां नें प्रभावे मीला कान्ना में चालमा जद धसका डाकणियां रे पड़े। तथा स्यांग स्याबीलां रे पड़े। पिण दूजा लोक ता राजी हुवे। ज्यूं साध गाम में आया भेषधारी हीण आचारी त्यां रे धमका पड़े। के स्यांरा भामका रे धमका पड़े। अनें हलुकर्मी जीव है ते तो घणा राजी है। जाणे वखाण सुणसां। सुपात्रदान देसां। ज्ञान सीखसां। साधां री सेवा करसां। इम राजी हुवे।   ॐ

३००

स्वामीजी सूं चरचा करतां काइ ऊर्धो अंधला बोले : थांरी श्रद्धा कपट री। आचार में प्रपंच घणा। जद स्वामीजी बोल्या : म्हांरी श्रद्धा आचार तो चोखो है। पिण थांनें इसीज दीसे है। आप री आंख में मीलिया हवे जद मनुष्य पीला २ निजर आवे। छाका नें कई भाज कन्

जद टोडरमलजी कह्यौ : रे मूरख म्हें इसो काम क्यां में करां। जद भीरजी कह्यौ : न करावो तो रुणा न सरायो क्यू । ❋

३१२ :

फेर टोडरमलजी भीरे पोसारणे ने कह्यौ : भीखनजी सूत्र नो पाठ उथाप्यौ। साधु नें असूझतौ दियां अल्प पाप बहुत निजरा भगवती में कह्यौ है। जद भीरजी कह्यौ : पूज्यजी आप गोचरी पधारया म्हारे कटोरदान में लाडू है। ते कटोरदान गोहा में है सो थारे काढ बहिराय देसूं। म्हारेई अल्प पाप बहुत निज रा हुसी। जद टोडरमलजी कह्यौ : रे मूरख म्हें क्यां मे क्यां। जद भीरजी कह्यौ : न क्यौ तो आप क्यू करो। ❋

ए दृष्टांत केयक तो स्वामीजी रे मूडै सुण्या। केयक ओर आगां पिण सुण्या। तिण अनुसारे संक्षेप कोई सक्षेप हुंतो तिणनें अनमान न्याय आण नें वधारयौ। विस्तार आणनें सकोच्यो। तिण में कोइ विरुद्ध आयो हुवै। तथा मूठ लागो हुवे आगो पाछो विपरीत कह्यौ हुवै तो "मिच्छामि दुक्कड़।"

॥ दुहा ॥

संवत उगणीसे तीए। कातिक मास मभार।
सुदि पक्ष तेरस तिथ भली। सूर्यवार श्रीकार ॥ १ ॥
हेम जीत प्रप आदि दे द्वादश संत दिपंत।
श्रीजीद्वारा सहर मैं। कियो चोमासो धर खंत ॥ २ ॥
हेम रिसाया हर्ष सं शिष्य जीत धर खंत।
सरस रसे करी सोभता। भीखसु ना दृष्टांत ॥ ३ ॥
उत्पतिया बुद्धि आगला। भिक्षु गुण भंडार।
हितकारी दृष्टंत तसु। सांभलतां सुखकार ॥ ४ ॥

★

। ३०८

आधाकर्मी थानक में रहे अनें घर छोड्या कहै तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो : ज्यूं जती रे उपासरो १। मथेरण रे पोशाळ २। फकीर रे तकियो ३। भक्ता रे अस्तल ४। फुटकर भक्त रे मढी ५। कनफड़ां रे आसण ६। सन्यासी रे मठ ७ रामसनेहियां रे राम दुवारो कठेयक कहै राममोहिलो ८। घर रा धणी रे घर ९। सेठरे हवेली १०। गाम रा धणी रे कोटरी। कठेयक कहै रावलो ११। राजा रे महल तथा दरबार १२ अन साधां रे थानक १३। नाम में फेर है बाकी सगला घर रा घर है। कठक कसी गूही। कठेयक कुशाला गूहा। पिण छकाया रो आरम्भ तो ज्यूं रा ज्यूं परह्यो हुवा। *

। ३०९ ।

अमरसींगजी रो बडेरो बोहरजी ने किणहि पूछ्यौ : शीतलजी रा साधां में साधपणो है। जद बोहरजी कह्यौ : ज्यां में तो किहां भी हुवो मोनेंई न सरधू । जद फेर पूछ्यौ। भीखनजी में साधपणो है। जद बोहर जी कह्यौ : ज्यांमें तो हुवे तो कहदाव नहीं। एवे तो रूप करे है। *

। ३१० ।

खेमजी पुर में बखाण देता धणी परिषदा में किणहि गृहस्थ पूछ्यौ : भरी सभा में मिश्र भाषा बोल्यां महामोहणी कर्म बंधे। भीखनजी साध है के असाध। जद खेमजी बोल्या : भीखनजी चोखा साध है पिण म्हांनें भेषधारी ? कहै तिण सूं म्हेंई मिनदव कह्यां छां। *

३११

खेतारण में धीरो पोखरणो तिणनें टोडरमलजी कह्यौ : भीखनजी कहै थोड़ा दोष सूं साधपणो भागे। जो यूं साधपणो भागे तो पारसनाथजी री २०६ आर्ज्या हाथ पग धोया काजल घाल्या डावरा डावरी रमावा ते पिण मर ने इन्द्रनी इन्द्राणियां हुई असें एकावतारी हुई। जद धीरजी पोखरणे कह्यौ : पूज्यजी आपां री आर्ज्यां रे काजल घलावो हाथ पग धोवावो डावरा डावरी रमावा री आज्ञा दो। सो ए पिण एकावतारी होय जावे।

जद टोडरमलजी कह्यो : रे मूरख म्हें इमो काम क्यां नें करां। जद भीखजी कह्यो : न करावो सो क्या न सरावो क्यू। ※

३१२

फेर टोडरमलजी भीखजी पाखरणे न कह्यो : भीखनजी सूत्र मो पाठ बताप्यो। साधु नें असूझतो दियां अल्प पाप बहुत निर्जरा भगवती में कह्यो है। जद भीखजी कह्यो : पूज्यजी आप गोचरी पधारस्या म्हारै कटोरदान में लाडू है। ते कटोरदान माहा में है सो थारे काढ बहिराय देसूं। म्हारेई अल्प पाप बहुत निर्जरा हुसी। जद टोडरमलजी कह्यो : रे मूरख म्हें क्यां नै स्यां। जद भीखजी कह्यो : न स्यो तो थाप क्यू करो। ※

ए दृष्टांत केयक तो स्वामीजी रे मूडे सुण्यां। केयक ओर आगो पिण सुण्यां। तिण अनुसारे मंडाय कोई संक्षेप हुतो तिणनें अनुमान न्याय जाण नें बधायो। विस्तार जाणनें संकोच्यो। तिण में कोइ विरुद्ध आया हुवै। तथा झूठ लागा हुवै आगो पाछो विपरीत कह्यो हुवै तो "मिच्छामि दुक्कडं।"

॥ दूहा ॥

संवत अठावीसे तीप। कातिक मास मझार।
सुदि पख तेरस तिथ भली। सूर्यवार श्रीकार ॥ १ ॥
हेम जीत ऋष आदि दे द्वादश संत दिपंत।
श्रीजीद्वारा सहर मैं। कियो चोमासो धर संत ॥ २ ॥
हेम सिखाया हर्ष सं लिख्या जीत धर खंत।
सरस रसे करी सोभता। भीक्खु ना दृष्टांत ॥ ३ ॥
उत्पतिया बुद्धि आगला। भिक्षु गुण भंडार।
हितकारी दृष्टंत तसु। सांभलतां सुखकार ॥ ४ ॥

★

: ३०८

आधाकर्मी थानक में रहे अनें घर छोड्या कहे तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो : ज्यूं जती रे उपासरो १। मथेरण रे पोशाल २। फकीर रे तकियो ३। भक्तां रे अस्थल ४। कुटकर भक्त रे मढी ५। कनफड़ा रे आसण ६। सन्यासी रे मठ ७। रामसनेहियां रे राम दुवारो कठेयक कहै राममोहिलो ८। घर रा धणी रे घर ९। सेठ रे हवेली १०। गाम रा धणी रे कोटरी। कठेयक कहै गवलो ११। राजा रे महल सभा दरबार १२। अनें साधां रे थानक १३। नाम में फेर है बाकी सगला घर रा घर है। कठक कसी भुरी। कठेयक कुरालो बूढो। तिण छकाया रो आरम्भ हो ज्यूं रो ज्यूं परहो हुओ। ✱

: ३०९ :

अमरसीगजी रो बड़गे बोहतजी ने किणहि पूछ्यो : शीतलजी रा साधां में साधपणो है। जद बोहतजी कह्यो : उणा में तो किहां ही हुं तो मोमेंई न धरूं। जद फेर पूछ्यो। भीखनजी में साधपणो है। जद बोहत जी कह्यो : इणामें तो हुवै तो अटकाव नहीं। ए वे तो तप करे है। ✱

: ३१० :

जैसलजी पुर में वखाण देतां धणी परिषदा में किणहि गृहस्थ पूछ्यो : भरी सभा में मिश्र भाषा बोल्यां महामोहणी कर्म बंधे। भीखनजी साध है के असाध। जद जैसलजी बोल्या : भीखनजी चोखा साध है पिण म्हाने भेषधारी २ कहै तिण सूं म्हेंई भिखण कहां छां। ✱

३११ :

बैरावण में धीरो पोखरणो तिणनें टोडरमलजी कह्यो : भीखनजी कहै चोखा दोष सूं साधपणो भागै। जो यूं साधपणो भागे तो पार्श्वनाथजी री २०६ आर्य्यां हाथ पग धोया काजल घाल्या डावरा डावरी रमाया ते पिण मर ने इन्द्रनी इन्द्राणियां हुई अनें एकावतारी हुई। जद धीरजी पोखरण कह्यो : पूज्यजी आपां री आर्य्यां रे काजल घलावो हाथ पग धोवावो डावरा डावरी रमावा री आज्ञा दो। सो ए पिण एकावतारी होय जावे।